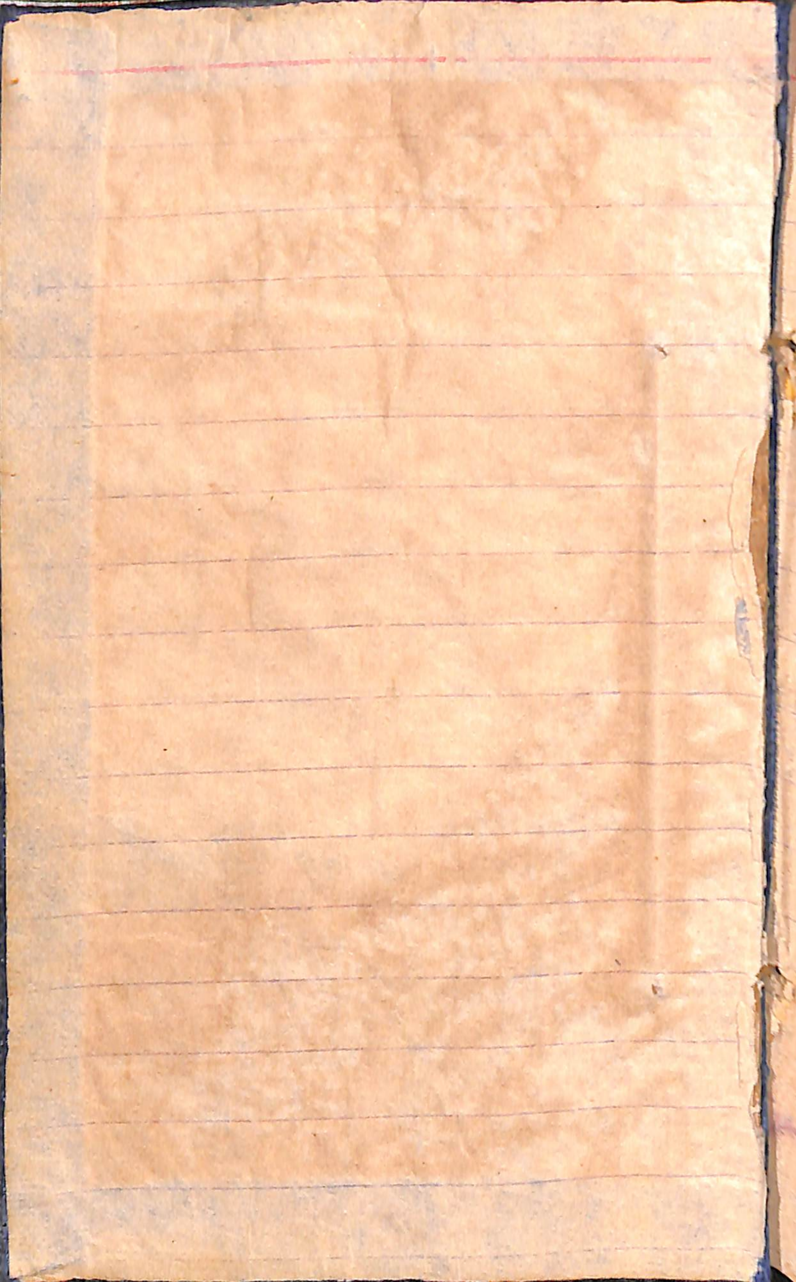
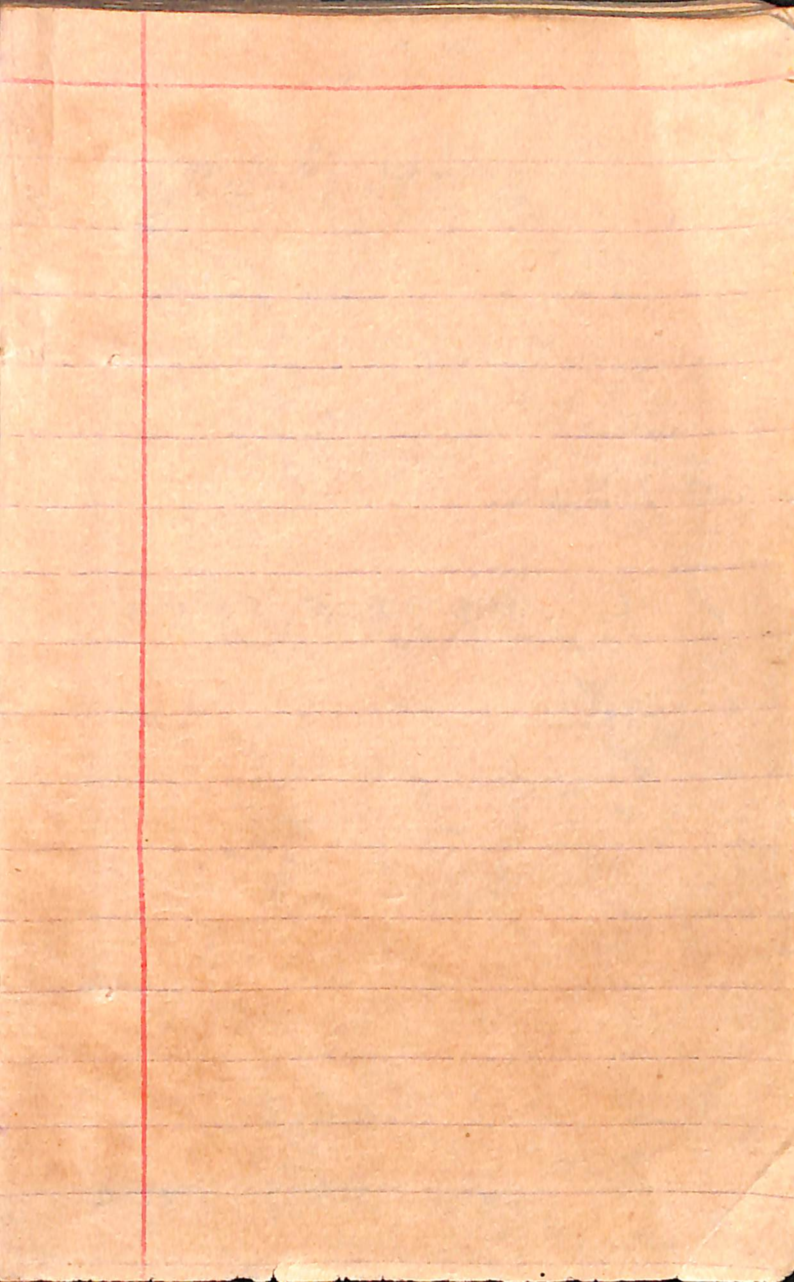
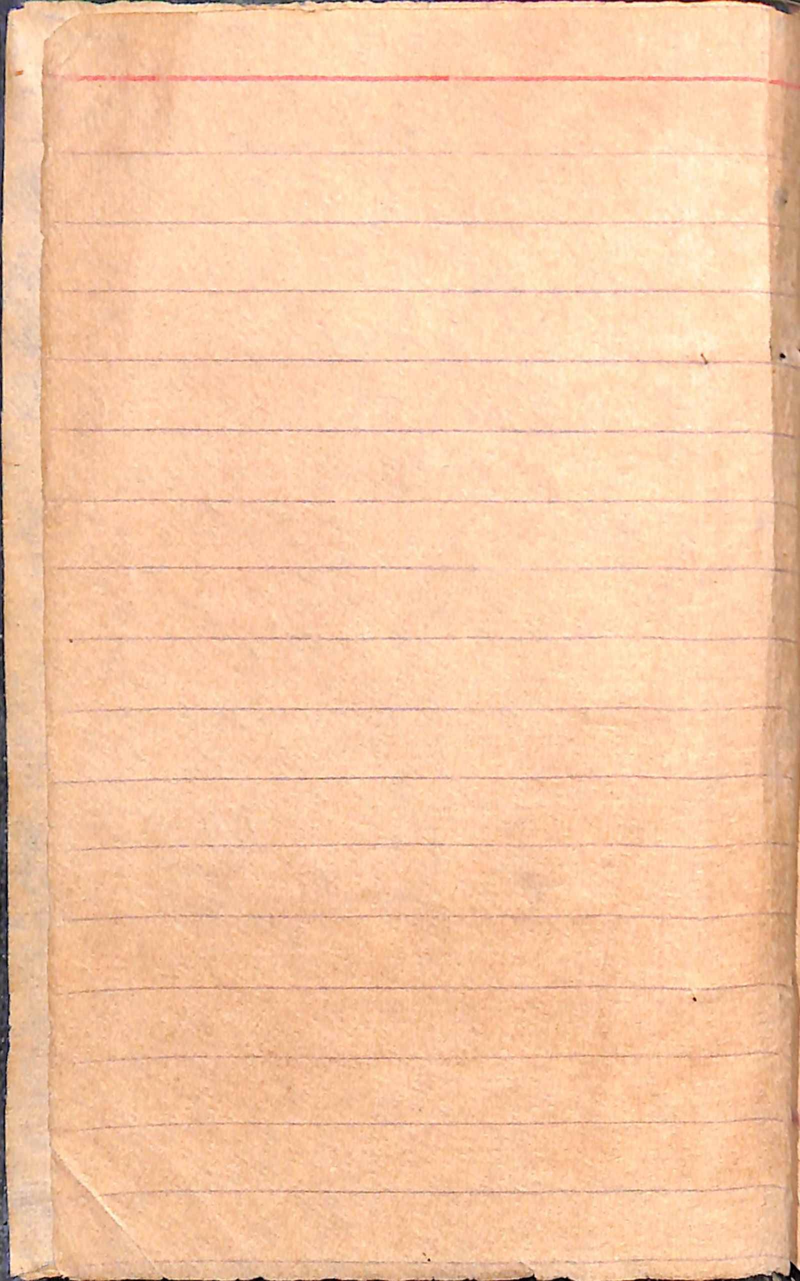




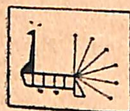


कुण्डली-दर्पण

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली



अनुपम पॉकेट बुक्स



प्रकाशक | अनुपम पॉकेट बुक्स, शक्तिनगर, दिल्ली-७

द्वितीय संस्करण | जून, १९७०

कलापक्ष | सिन्हा, दिल्ली

मुद्रक | युगान्तर प्रेस, मोरी गेट, दिल्ली-६

मूल्य : दो रुपए

दो शब्द

अपना भविष्य जानने की इच्छा प्रत्येक मानव के लिए स्वाभाविक है
ार ज्योतिष, मानव के भूत, भविष्य और वर्तमान की सम्पूर्ण कहानी है।
इस पुस्तक में सरल एवं सुबोध शैली में मानव की प्रत्येक समस्या को
पष्ट किया गया है। आपका भविष्य क्या है ? भविष्य में आपकी आर्थिक
स्थिति कैसी रहेगी ? आपको व्यापार से लाभ होगा या नौकरी से ?
यापार कब तथा किस प्रकार उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है ?
शिक्षा कैसी होगी ? विवाह योग कब है ? भाग्योदय कब होगा ?
न्तान-सुख कैसा रहेगा ? सन्तान को कौन सी विशेष शिक्षा दिलायी
ाए, जिससे उसका भविष्य उज्ज्वल हो सके ? ये और ऐसे अनेक प्रश्नों
ा उत्तर इस पुस्तक में है।

मैं उन सभी मित्रों एवं विद्वानों का आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक
ो लिखने में मुझे सहायता दी है एवं उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापन करता
ूँ, जिनकी जन्म कुण्डलियों का उपयोग मैंने इन पुस्तक में किया है।
विशेष रूप से मैं प्रकाशक महोदय का आभारी हूँ, जिनकी तत्परता एवं
गन से यह पुस्तक आपके हाथों तक पहुँच सकी।

—नारायणदत्त श्रीमाली

सी/एफ १४, हाईकोर्ट कालोनी
जोधपुर (राजस्थान)

विषय सूची

एवं फल विवेचन, नवम भाव से सम्बन्धित विशेष योग, भाग्योदय काल, फल विवेचन, निष्कर्ष ।

दशम भाव के अध्ययन के तथ्य, दशम भाव स्थित राशि एवं फल, मेषादि द्वादश राशियाँ एवं फल विवेचन, दशम भावस्थ ग्रह सूर्यादि ग्रह एवं फल विवेचन, राज्येश फल विचार, दशम भाव से सम्बन्धित विशेष योग, फल विवेचन, निष्कर्ष ।

एकादश भाव के अध्ययन के तथ्य, एकादश भाव स्थित राशि एवं फल, मेषादि द्वादश राशियाँ एवं फल विवेचन, एकादश भावस्थ ग्रह, सूर्यादि ग्रह एवं फल विवेचन, आयेश विचार, एकादश भाव से सम्बन्धित विशेष योग, फल विवेचन, निष्कर्ष ।

द्वादश भाव के अध्ययन के तथ्य, द्वादश भाव स्थित राशि एवं फल, मेषादि द्वादश राशियाँ एवं फल विवेचन, द्वादश भावस्थ ग्रह, सूर्यादि ग्रह एवं फल विवेचन, द्वादश भाव से सम्बन्धित विशेष योग, फल विवेचन, निष्कर्ष ।

विशिष्ट कुण्डलियाँ

कुण्डली-परिचय

अपने प्रारम्भिक समय से लेकर आज तक मानव की यह सहज जिज्ञासा रही है कि वह अगोचर एवं अप्राप्य को हस्तगत कर ले। अपना भविष्य जानने की उसे सहज लालसा रहती है। भावी जीवन की घटनाएँ भविष्य के गर्भ में निहित रहती हैं, अतएव भविष्य के प्रति उसका चिन्तित रहना अथवा उसे जान लेने का आकर्षण स्वाभाविक ही है। वह समाज में रहने के कारण जब दूसरों को अपने से अधिक उन्नत देखता है अथवा सुख-समृद्धिपूर्ण जीवन को चीन्हता है तो वह भी यह जानने को उत्कंठित हो जाता है कि क्या वह भी इस प्रकार का समृद्धिपूर्ण जीवन बिता सकेगा? क्या उसकी मनोवांछित इच्छाएँ पूर्ण हो सकेंगी? जिज्ञासा-वृत्ति ने मानव को अन्वेषक बना दिया। इसी जिज्ञासावृत्ति के कारण मानव ने अपना भावी जीवन जानने की अनेक विधियाँ खोज निकालीं जिनमें सामुद्रिक शास्त्र, ज्योतिष, ताजिक, रमल, प्रश्न आदि हैं। सामुद्रिक और ज्योतिष, मानव की वे प्रारम्भिक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं, जिन्हें वह सभ्यता के प्रथम चरण में ही प्राप्त कर चुका था। प्रत्येक विज्ञान का आधार जिज्ञासा रहा है, इस जिज्ञासा के ही कारण असभ्य और बर्बर मानव सभ्यता के पथ पर चलता हुआ आज अणुयुग में प्रवेश करके चाँद तक पहुँच सका है।

सभ्यता का उदय भारत, चीन, मिश्र आदि देशों से हुआ, ऐसा माना जाता है। इन देशों में प्रागैतिहासिक काल से आज तक जो ज्ञान के अक्षय भण्डार प्राप्त हुए हैं, ज्योतिष उनका एक अंश मात्र है। तब से लगाकर आज तक ज्योतिष के सम्बन्ध में निरन्तर शोध होता रहा है।

"ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्।" ज्योतिष शास्त्र की व्युत्पत्ति करते हुए सूर्यादि ग्रह और काल का बोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिष शास्त्र कहा गया गया है। इस शास्त्र से प्रमुखतः ग्रह, नक्षत्र-संचार परिभ्रमण आदि घटनाओं का सही-सही निरूपण एवं ग्रह, नक्षत्रों की गति से घटित शुभाशुभ तथ्यों का विचार किया जाता है।

अन्य सब विज्ञानों की अपेक्षा ज्तोतिष-विज्ञान सर्वाधिक जटिल और कठिन माना जाता है, लेकिन ज्योतिष-विज्ञान के भी कुछ निश्चित सिद्धान्त हैं, जिनके द्वारा इस दुरुह एवं जटिल विज्ञान की गुत्थियाँ भी खोली जा सकती हैं और ज्यों-ज्यों ये गुत्थियाँ खुलती जाती हैं, मानव के समक्ष एक नया ही भाव स्पष्ट होता जाता है। मानव के भूत तथा भविष्य की जितनी सच्ची व्याख्या ज्योतिष कर सकता है, उतना अन्य कोई विज्ञान नहीं कर सकता।

इस पुस्तक में प्रत्येक भाव का ज्योतिष-सिद्धान्तों के आधार पर विवेचन करते हुए उसकी पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

कुण्डली का अध्ययन करने के साथ ही साथ ग्रहों का अध्ययन भावों का विवेचन और ग्रहों तथा भावों का परस्पर सम्बन्ध निरूपण कर, तथ्यातथ्य प्रकट करना अत्यन्त कठिन एवं दुष्कर कार्य भी है। कुण्डली में कुल बारह भाव होते हैं और इन भावों से मानव का सम्पूर्ण जीवन पूर्णतः विवेचित किया जा सकता है।

यह बारह भाव जीवन के विशिष्ट पहलुओं को अपने आप में समेटे हुए हैं, लेकिन प्रत्येक भाव अपने आप में स्वतन्त्र होते हुए भी एक दूसरे से पूर्णतः सम्बन्धित है। उदाहरणार्थ प्रथम भाव जातक के स्वास्थ्य एवं शरीर से सम्बन्धित है तो पंचम भाव उसकी सन्तान से सम्बन्धित है। इन दोनों भावों का परस्पर क्या सम्बन्ध है ? किस प्रकार से ज्ञात किया जाय कि इस जातक के सन्तान होगी या नहीं ? होगी तो कब और किस ग्रह की दशा में ? महर्षियों ने इसका और इन जैसे सैकड़ों प्रश्नों का अत्यन्त सूक्ष्म एवं विवेचनपूर्ण उत्तर दिया है।

प्राचीन भारतीय ऋषियों की दैनिकचर्या पर विचार करें तो प्रतीत होगा कि उनका दैनिक जीवन मुख्यतः बारह भागों में विभाजित था। उषाकाल ब्रह्ममुहूर्त में उठकर वे अपने स्वयं के बारे में चिन्तन करते थे। यह चिन्तन ही उसकी चर्या का प्रधान भाग था। कुण्डली का पहला भाव भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है और वह मुख्यतः जातक के आत्म से ही सवन्धित है।

प्रातःकालीन सन्ध्योवन्दनादि के पश्चात् उनका समय बन्धु-बान्धवों के साथ व्यतीत होता था तीसरा भाव भी भाइयों से तथा उनके पराक्रम

और व्यक्तित्व का ही बोधक है। माता की सेवा, पुत्र-पुत्रियों की शिक्षा-दीक्षा भी उनकी चर्या के भाग थे और उसी प्रकार जहाँ चौथा भाव माता से सम्बन्धित हैं, पाँचवाँ भाव विद्या और सन्तान से सम्बन्धित है।

जीवन-सहचरी वस्तुः उनके जीवन में सम-सहायक थी और उसका महत्व स्वयं के जीवन से किंचित भी कम नहीं था। कुण्डली में भी लग्न से ठीक सामने का भाव पत्नी पक्ष को समर्पित किया हुआ है।

मध्यान्होत्तर वे भाग्य को साथ ले कर्म में तत्पर होते थे। कुण्डली में भी नवम और दशम भाव क्रमशः भाग्य और कर्म से सम्बन्धित हैं। संध्या समय वे जो कुछ भी अर्जित करके लाते, पिताश्री के चरणों में रख देते। कुण्डली का दशम भाव जहाँ कर्म से सम्बन्धित है, वहाँ साथ ही साथ पितृ एवं पितृ-पक्ष का परिचायक भी है। ग्यारहवाँ भाव आय से सम्बन्धित है। रात्रि के समय प्रथम प्रहर में वे दिन-भर का लेखा-जोखा करते और व्यय को किस प्रकार आय से कम रखा जाय या उस पर नियंत्रण किया जाय इस पर विचार करते। कुण्डली का बारहवाँ भाव व्यय से ही सम्बन्धित है।

इस प्रकार यदि सूक्ष्मतापूर्वक देखा जाए तो प्रतीत होगा कि कुण्डली के इन बारह भावों का क्रम भी एक निश्चित योजना को लिए हुए है, उसके पीछे वैज्ञानिक चिन्तन है। वस्तुतः प्राचीन महर्षि दिव्य दृष्टि पूर्ण थे, जिनके अमोघ ज्ञान का प्रतिफल ज्योतिर्विज्ञान है।

कुण्डली का अध्ययन संतुलित दृष्टि से करना अत्यावश्यक है। उतावली, छिछलापन, कोरी भावुकता और व्यर्थ के पाण्डित्य से सही फल प्राप्त नहीं किया जा सकता। कुण्डली का निश्चित भाव, उसकी संज्ञा, उसमें स्थित ग्रह, ग्रह बल और उस भाव पर विशेष ग्रहों की दृष्टियों का सावधानीपूर्वक अवलोकन करके ही शुभाशुभ का वर्णन करना ठीक रहता है। उदाहरणार्थ दशम भाव कर्म से सम्बन्धित है। एक कुण्डली में दशम भाव में शनि स्थित है, दूसरी मिथुन लग्न की कुण्डली में लग्न स्थान में ही शनि पड़ा है और उसकी दशम पूर्ण दृष्टि कर्मस्थान पर पड़ रही है तो क्या दोनों कुण्डलियों का कर्म पक्ष एक-सा ही होगा? यदि सावधानीपूर्वक विचार करें तो प्रतीत होगा कि दोनों कुण्डलियों के फलित में अन्तर होगा। कुण्डली देखने वाले को चाहिए कि वह इन सब बातों का

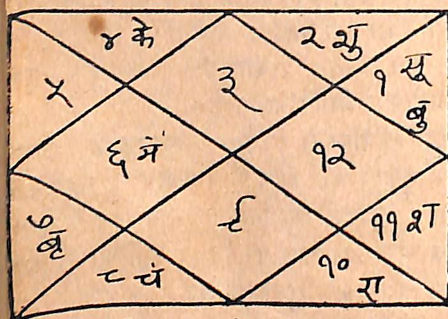
सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करने के पश्चात् ही अपनी धारणा बनाए ।

कुण्डली का अध्ययन करने से पूर्व मोटी-मोटी बातों की जानकारी प्राप्त कर लेनी आवश्यक है। पाठकों की सुविधा के लिए नीचे ज्योतिष के प्रमुख अंगों का परिचय दिया जा रहा है ।

जातक—जिस व्यक्ति या स्त्री की कुण्डली देखी जा रही हो, उस व्यक्ति या स्त्री को जातक के नाम से जाना जाता है।

कुण्डली – जिस विशेष द्वादश चक्र में ग्रहों की स्थिति स्पष्ट की जाती है, वह कुण्डली कहलाता है ।

कुण्डली के बारे में भारतीय और पश्चात्य दृष्टिकोण में अन्तर है। पश्चात्य ढंग में राशियाँ स्थिर होती हैं और उन स्थिर राशियों में ग्रहों की स्थिति स्पष्ट की जाती है, परन्तु भारतीय पद्धति के अनुसार भाव स्थिर होते हैं, राशियों का क्रम स्थिर नहीं रहता । भारतीय पद्धति में लग्न का स्थान शीर्ष-स्थानीय होता है। उदारणार्थ संवत १९९२ वैशाख कृष्ण ३ रविवार प्रातः दस बजे ग्रहों की स्थिति भारतीय पद्धति से निम्न प्रकार से होगी ।



कुण्डली के शीर्ष-स्थानीय जगह पर ३ का अंक है, इससे स्पष्ट है, कि इस जातक का लग्न तीसरी राशि अर्थात् मिथुन लग्न है और अन्य ग्रहों में से केतु कर्क राशि का, मंगल कन्या राशि का, बृहस्पति तुला राशि का, चन्द्र वृश्चिक राशि का, राहु मकर का, शनि कुम्भ का, सूर्य तथा बुध मेष राशि के एवं शुक्र वृष राशि पर स्थित है। भारतीय पद्धति के लग्न को प्रथम भाव तथा उसके बाद के स्थानों को क्रमशः द्वितीय भाव, तृतीय भाव आदि कहते हैं ।

पाश्चात्य पद्धति में उपर्युक्त कुण्डली इस प्रकार से स्पष्ट होगी ।

	* सु. बु.	शु.	लग्न
श.			के.
रा.			
	चं.	बृ.	मं.

इस कुण्डली में जहाँ तारे का निशान है, वह मेष राशि के घर का है और इस प्रकार की पाश्चात्य पद्धति से बनाई कुण्डलियों में मेष राशि हमेशा इसी जगह होगी, क्योंकि इसमें राशियाँ स्थिर रहती हैं, लग्न बीच में या कहीं पर भी राशि के अनुसार आ जाएगा, बाकी सभी ग्रह उपर्युक्त भारतीय कुण्डली में जिन राशियों में स्थित हैं, उन्हीं राशियों में रहेंगे। दोनों कुण्डलियों को देखने की पद्धति लगभग एक जैसी है।

राशियाँ

राशियाँ कुल बारह हैं। पाठकों की जानकारी हेतु राशियों के भारतीय नाम, अंग्रेजी नाम, पर्यायवाची संस्कृत शब्द एवं फारसी तथा अरबी नाम भी दिये जा रहे हैं। राशियों का क्रम सभी पद्धतियों में एक जैसा ही है।

राशि-तालिका

क्रम संख्या	राशियों के प्रसिद्ध भारतीय नाम	अंग्रेजी नाम	पर्यायवाची संस्कृत शब्द	फारसी नाम	अरबी नाम
१	२	३	४	५	६
१	मेष	Aries	अज, क्रिय एडक, प्रथम बस्त, आध	बरे	हमल
२	वृष	Taurus	वृषभ, ताबुरी भद्र, बलीवर्द	गत्व	सोर
३	मिथुन	Gemini	जितुम, नृयक यम	दोपेकर	जौज
४	कर्क	Cancer	कुलीर, कर्कट आटक	खरचंग	सरतान

५	सिंह	Leo	लेय, कठीरल मृगेन्द्र, हरि	शीर	असद्
६	कन्या	Virgo	पाथोन, तन्वी वरुणी, कुमारी	खुशे	सम्बला
७	तुला	Libra	जूक्, वणिक् घट्, तौलि,	त्राजु	मीजर
८	वृश्चिक	Scorpio	कौर्प्य, अलि द्रुण, अष्टम	कज्दुम	अकरब
९	धनु	Sagittarius	चाप, धन्वी शरासन	कमान	कौस
१०	मकर	Capricornus	मृग, आकोकेरी वक्र, एण	बोझ	जद्दी
११	कुंभ	Aquarius	घट धराभिधान	डुल्	दल्
१२	मीन	Pisces	अन्यभ, झरद् क्रिय, रिष्फ	माही	हूत

ग्रह

ज्योतिष सिद्धान्त के अनुसार कुल नौ ग्रह माने गये हैं। जिनमें सा ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि तथा दो छाया-ग्र राहु और केतु हैं। नवीन खोजों के अनुसार वरुण (Uranus) तथ वारुणी (Naptune) को भी सम्मिलित कर, कुल ग्यारह ग्रह मान लि गये हैं। ग्रहों के भारतीय, अंग्रेजी, अरबी तथा संस्कृत पर्याय शब्द आ पृष्ठ १७-१८ पर दिये जा रहे हैं।

गृह-तालिका

क्रम संख्या	ग्रहों के प्रसिद्ध नाम	अंग्रेजी नाम	अरबी नाम	पर्यायवाची संस्कृत शब्द
१	सूर्य	Sun	शम्स आफताब	आदित्य, अर्क, अर्यमा, इन, ऊष्णरश्मय, गृह-पति, दिवाकर, दिनकर, प्रभाकर, रवि, विभाकर दिनेश, भानु, सूर, सविता, भास्कर, मार्तण्ड ।
२	चन्द्र	Moon	कमर, माह फार	इन्दु, कलानिधि, चन्द्र, द्विजराज, नक्षत्रेण, मृगांक, मयंक, राकेश, रजनीश, विधु, सोम, शशि, शशांक, शशधर, सुधाकर, हिमांशु, तारा-पति, तारेश ।
३	मंगल	Mars	मारीक मिर्रीख बेहराम (फा.)	अंगारक, कुज, भौम, महीसुत, मिर्रीव, भूसुत, लोहितांग, धराज, अव-निज, क्रूरनेत्र, क्षिति-नन्दन ।
४	बुध	Mercury	उतारद तीर (फा.)	इन्दुसुत, चन्द्रपुत्र, चन्द्रात्मज, इन, बोधन, वित्, सौम्य, रौहिणेय, श्यामगाँव, हेम्न, तारा-सूनु ।
५	बृहस्पति	Jupiter	मुश्तरी अइरमभन्द	अंगीरस, अंगिरा, आर्य, गुरु, जीव, सुरसरीय,

६	शुक्र	Venus	जुहरी	उसमना, कवि, भार्गव भृगु, भृगुसुत, दैत्यगु सित, सूनु, काण, दान वेज्य ।
७	शनि	Saturn	जुदुल केदवीन (फा.)	असित, आर्कि, छाय तमज, मन्द, शनैश्च सूर्यपुत्र, रविज, पं सौरि, भास्करि, ।
८	राहु	Dragons head	रास	अगु, तम, स्वर्फा अभि, कृष्णांग, क लास, दीर्घ, असुर, गु सर्प, फणि, आगव ।
९	केतु	Dragons tail	जनब	ध्वज, शिखि, राहु पुच्छ ।
१०	वरुण	Uranus Harschel	×	×
११	वारुणी	Neptune	×	×

(preceding entry continues: वाचस्पति, सुरगुरु, सू देवगुरु ।)

शुभ ग्रह

चन्द्र, बुध, शुक्र, केतु और बृहस्पति ये क्रम से अधिकाधिक शुभग्र माने गये हैं ।

पाप ग्रह

सूर्य, मंगल, शनि और राहु क्रम से अधिकाधिक पाप ग्रह माने ग है; अर्थात् सूर्य से मंगल अधिक पापग्रह है, मंगल से शनि, औ शनि से राहु अधिक पापग्रह है। किसी-किसी आचार्य ने क्षीण च को भी पापग्रह माना है ।

शुभग्रह कुण्डली में शुभ फल प्रदाता है और अशुभ पापग्रह फल दे वाले होते हैं ।

राशियों के स्वामी :—बारह राशियों के नौ स्वामी हैं । नी राशियां और उनके स्वामी स्पष्ट किये गये हैं ।

क्रम संख्या	राशियाँ	सम्बन्धित राशियों के स्वामी.
१	मेष	मंगल
२	वृष	शुक्र
३	मिथुन	बुध
४	कर्क	चन्द्र
५	सिंह	सूर्य
६	कन्या	बुध
७	तुला	शुक्र
८	वृश्चिक	मंगल
९	धनु	बृहस्पति
१०	मकर	शनि
११	कुम्भ	शनि
१२	मीन	बृहस्पति

जातक की कुण्डली का अध्ययन करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि जातक की कुण्डली में कौन-कौन से ग्रह उच्च के तथा कौन-कौन से ग्रह नीच के हैं। पाठकों की जानकारी हेतु उच्च-नीच ग्रह निम्न प्रकार से हैं।

उच्च ग्रह

	ग्रह	राशि	अंश
१	सूर्य	मेष	१० अंशों तक
२	चन्द्र	वृष	३ अंशों तक
३	मंगल	मकर	२८ ,, ,,
४	बुध	कन्या	१५ ,, ,,
५	बृहस्पति	कर्क	५ ,, ,,
६	शुक्र	मीन	२७ ,, ,,
७	शनि	तुला	२० ,, ,,
८	राहु	मिथुन	१५ ,, ,,
९	केतु	धनु	१५ , ,,

नीच ग्रह

	ग्रह	रशि	अंश
१	सूर्य	तुला	१० अंशों तक
२	चन्द्र	वृश्चिक	३ ,, ,,
३	मंगल	कर्क	२८ ,, ,,
४	बुध	मीन	१५ ,, ,,
५	बृहस्पति	मकर	५ ,, ,,
६	शुक्र	कन्या	२७ ,, ,,
७	शनि	मेष	२० ,, ,,
८	राहु	धनु	१५ ,, ,,
९	केतु	मिथुन	१५ ,, ,,

उच्च-नीच ग्रहों के बोध से कुण्डली का फलादेश स्पष्ट और प्रमाण-पूर्वक किया जा सकता है। यदि किसी जातक की कुण्डली में सूर्य मेष राशि में १० अंशों तक का हो तो उच्च का कहलायगा। दस अंशों से अधिक अंशों का होने पर वह सूर्य साधारण श्रेणी में ही गिना जायगा। इसी प्रकार तुला राशि में भी १० अंशों तक ही सूर्य नीच का रहता है। इससे अधिक अंशों का सूर्य निर्मल सूर्य माना जायगा। नीच राशिस्थ ग्रह जातक को अशुभ फल प्रदाता है।

ग्रहों का मैत्री-विचार

ग्रहों में परस्पर पाँच प्रकार की मित्रता होती है। (१) अधिमित्र (२) मित्र (३) सम (४) शत्रु (५) अधिशत्रु।

कुण्डली में यदि कोई ग्रह अपने मित्र के घर में स्थित हो तो शुभ-फल एव शत्रु क्षेत्र में पड़ कर अशुभ फल देता है। आगे के चक्र में ग्रहों की मित्रता स्पष्ट की जा रही है।

ग्रहों का मैत्री चक्र

		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
अधिमित्र	१	चन्द्र	बुध शुक्र	—	सूर्य	मंगल चन्द्र	—	—
मित्र	२	बुध	गुरु शनि	शनि	गुरु	शनि	गुरु	गुरु
सम	३	मंगल बृहस्पति	सूर्य	सूर्य चन्द्र गुरु	चन्द्र शुक्र	सूर्य	सूर्य चंद्र,बुध शनि	चंद्र,मंगल बुध,शुक्र
शत्रु	४	शुक्र	मंगल	शुक्र	मंगल शनि	—	मंगल	—
अधिशत्रु	५	—	—	बुध	—	शुक्र बुध	—	सूर्य

ऊपर जो मैत्री-चक्र दिया गया है, वह ग्रहों की स्थायी मैत्री का है, इसके अतिरिक्त ग्रहों में तात्कालिक मैत्री भी होती है।

तात्कालिक मैत्री

जो ग्रह जिस स्थान पर है, वह उससे २, ३, ४, १०, ११ और १२ वें भाव में स्थित ग्रह के साथ तात्कालिक मित्रता रखता है तथा १, ५, ६, ७, ८, और ९वें भाव में स्थित ग्रह के साथ तात्कालिक शत्रुता रखता है।

ग्रहों की दृष्टि

प्रत्येक ग्रह अपने से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से, तीसरे और दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें और नवें भाव को दो चरण दृष्टि से तथा चौथे-आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से देखता है, परन्तु मंगल चौथे-आठवें भाव को, गुरु पाँचवें-नवें भाव को तथा शनि तीसरे-दसवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है।

ग्रहों की दृष्टि

क्रम संख्या	ग्रह	एक चरण दृष्टि	दो चरण दृष्टि	तीन चरण दृष्टि	सम्पूर्ण दृष्टि
१	सूर्य	३,१०	६,५	८,४	७
२	चन्द्र	३,१०	६,५	८,४	७
३	मंगल	३,१०	६,५	×	४,७,८
४	बुद्ध	३,१०	६,५	८,४	७
५	बृहस्पति	३,१०	×	८,४	५,७,६
६	शुक्र	×	६,५	८,४	७
७	शनि	×	६,५	८,४	३,७,१०
८	राहु	३,६	२,१०	×	५,७,६
६	केतु	३,६	२,१०	×	५,७,६

महर्षि पाराशर ने ग्रहनिष्ठ दृष्टियों की तरह ही राशिनिष्ठ दृष्टियाँ भी कहीं हैं। राशियों की दृष्टियाँ निम्न प्रकारेण हैं।

राशियों की दृष्टि

क्रम संख्या	राशि नाम	राशियाँ जिन पर दृष्टि रहती है
१	मेष	सिंह, वृश्चिक, कुम्भ
२	वृष	तुला, कर्क, मकर
३	मिथुन	धनु, कन्या, मीन
४	कर्क	वृष, तुला, मकर
५	सिंह	मेष, वृश्चिक, कुम्भ
६	कन्या	मिथुन, धनु, मीन
७	तुला	वृष, कर्क, मकर
८	वृश्चिक	मेष, सिंह, कुम्भ
६	धनु	मिथुन, कन्या, मीन
१०	मकर	वृष, कर्क तुला
११	कुम्भ	मेष, सिंह, वृश्चिक
१२	मीन	मिथुन, कन्या, धनु

ऊपर देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि चर राशियाँ अपने द्वितीय

स्थान की स्थिर राशि को छोड़ अन्य (तीन) स्थिर राशियों को देखती है। स्थिर राशियाँ अपने व्यय की चर राशि को छोड़ अन्य चर राशियों को देखती हैं तथा द्विस्वभाव राशियाँ स्वयं को छोड़ अन्य द्विस्वभाव राशियों को देखती हैं। राशियों की दृष्टि के साथ-साथ उनमें स्थित ग्रह भी इसी प्रकार देखते हैं।

ग्रहों के दीप्तांश

सूर्य के १५, चंद्रमा के १२, मंगल के ८, बुध के ७, गुरु के ६, शुक्र के ७, शनि के ९ तथा राहु-केतु के एक-एक दीप्तांश होते हैं। दीप्तांशों का अध्ययन जातक की कुण्डली देखते समय शुभाशुभ योगों के बारे में किया जाता है। हर्षल व नेप्च्यून के ६-६ दीप्तांश माने गये हैं।

राशि-स्वरूप

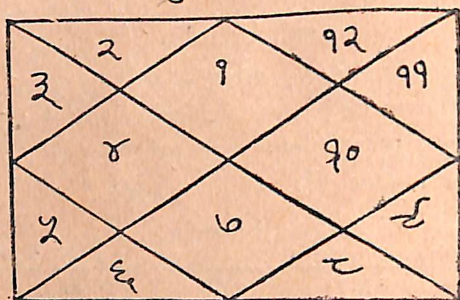
क्रम संख्या	राशि	जाति	संज्ञा	तत्व
१	मेष	पुरुष	चर	अग्नि
२	वृष	स्त्री	स्थिर	भूमि
३	मिथुन	पुरुष	द्विस्वभाव	वायु
४	कर्क	स्त्री	चर	भूमि
५	सिंह	पुरुष	स्थिर	अग्नि
६	कन्या	स्त्री	द्विस्वभाव	पृथ्वी
७	तुला	पुरुष	चर	वायु
८	वृश्चिक	स्त्री	स्थिर	जल
९	धनु	पुरुष	द्विस्वभाव	अग्नि
१०	मकर	स्त्री	चर	पृथ्वी
११	कुम्भ	पुरुष	स्थिर	वायु
१२	मीन	स्त्री	द्विस्वभाव	जल

कुण्डली एवं ग्रहों का अध्ययन करने वालों को चाहिए कि वे प्रत्येक राशि की जाति, संज्ञा एवं तत्वों का पूर्णतया अध्ययन कर लें। चर राशि चंचल, स्थिर राशि गंभीर प्रकृति की तथा द्विस्वभाव संज्ञक राशि में चर तथा स्थिर दोनों प्रकार के तत्व मिलते है।

जन्मपत्री के अध्ययन से पूर्व कुण्डली एवं, उनके स्थानों का ज्ञान

करना भी आवश्यक है। प्रत्येक कुण्डली में बारह 'घर' होते हैं, जिनमें सबसे ऊपर का घर 'लग्न' कहलाता है। इसी प्रकार चौथे, सातवें और ग्यारहवें घर के नाम भी अलग-अलग है। नीचे का चित्र इसकी जानकारी सुगमता से दे सकता है।

कुण्डली-चक्र



उपर्युक्त चित्र में जहाँ १ अंक अंकित है, उस घर को लग्न कहा जाता है और इसके स्वामी को लग्नेश या लग्नाधिपति कहते हैं।

१, ४, ७, १० भावों को केन्द्र स्थान या कण्टक गृह कहते हैं।

२, ५, ८, ११ को पणफर गृह कहते है।

३, ६, ९, १२ को आपोक्लिम गृह कहते हैं।

५, ९ को त्रिकोण स्थान कहते हैं।

९ वें स्थान को त्रि-त्रिकोण स्थान कहते हैं।

७, ८ को मारक स्थान कहते हैं।

३, ६, १०, ११ को उपचय स्थान कहते हैं।

६, ८, १२ को त्रिक् स्थान कहते हैं।

३, ६, ११ को त्रिषडाय कहते हैं।

२रे भाव को द्रव्य स्थान और उसके स्वामी को द्रव्येश कहते हैं।

३रे भाव को पराक्रम स्थान और उसके स्वामी को पराक्रमेश कहते हैं।

४थे स्थान को सुख स्थान या मातृस्थान और उसके स्वामी को सुखेश कहा जाता है।

५वें स्थान को विद्या स्थान, संतान स्थान या सुतस्थान कहते हैं,

और उसके स्वामी को पंचमेश या सुतेश कहा गया है।

६ठे स्थान को कष्ट स्थान और उसके स्वामी को कष्टेश कहा जाता है।

७वें भाव को जाया स्थान और उसके स्वामी को सप्तमेश अथवा जायेश कहते हैं।

८वें भाव को मृत्यु स्थान और उसके स्वामी को मारकेश या मृत्येश कहा गया है।

९वें भाव को भाग्य स्थान और उसके स्वामी को भाग्येश के नाम से पुकारा जाता है।

१०वें भाव को कर्म स्थान या राज्य स्थान कहा जाता है तथा उसके स्वामी को कर्मेश या राज्येश कहा जाता है।

११वें भाव को आय स्थान और उसके स्वामी को आयेश कहा जाता है।

१२वें भाव का व्यय स्थान और उसके स्वामी को व्ययेश कहा जाता है।

कुण्डली का अध्ययन करने वालों को ये स्थान और उनके नामों का भली-भाँति ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

द्वादश भाव

पाठकों की जानकारी एवं सुगमता के लिए नीचे बारह भावों के प्रसिद्ध अंग्रेजी और संस्कृत पर्याययाची नाम दिये जा रहे हैं।

द्वादश भाव-चक्र

क्रम संख्या	भावों के प्रसिद्ध नाम	भावों के अंग्रेजी नाम	भावों के संस्कृत पर्यायवाची शब्द
१	प्रथम	Ascadent	लग्न, उदय, तनु, आध, जन्म, होरा
२	द्वितीय	II house	स्व, कुटुम्ब, भुक्ति, वाक् अर्थ, नयन
३	तृतीय	III house	दुश्चिक्य, सहोदय, पराक्रम वीर्य, धैर्य

४	चतुर्थ	Mid Eaven	सुख, पाताल, वृद्धि, क्षिति मातृ, तुर्य
५	पञ्चम	V house	धी, बुद्धि, पितृ, नन्दन, देवराज, पंचम
६	षष्ठ	VI oouse	रोग, अंग, भय, रिपु, शस्त्र, क्षत
७	सप्तम	VII housc	जायित्र, काम, गमन, कलत्र अस्त, संपत
८	अष्टम	VIII house	आयु, रन्ध्र, मृत्यु, विनाश
९	नवम	IX house	धर्म, गुरु, शुभ, तप, नव, अंक, भाग्य
१०	दशम	X house	व्यापार, मध्य, भान, ज्ञान, राज, कर्म, रव
११	एकादश	XI house	उपान्त्य, भव, आय
१२	द्वादश	XII house	व्यय, अन्त्यभ

बाधक ग्रह

जन्म कुण्डली के अध्ययन में बाधक ग्रहों का अध्ययन भी विचारणीय है। बाधक ग्रह भले ही वह उस राशि के लिए कारक है, परन्तु कारकत्व होते हुए भी उस कार्य को वह निर्विघ्नतापूर्वक नहीं होने देता। बाधक ग्रह अपनी दशा-उपदशा में उस भाव को, जिस भाव में वह बैठा होता है, हानि पहुँचाता है। पाठकों की जानकारी हेतु नीचे प्रत्येक राशि के बाधक ग्रह दिये जा रहे हैं।

बाधक राशि एवं ग्रह

क्रम संख्या	लग्न राशि	बाधक राशि	बाधक ग्रह	अशुभ फल
१	मेष	कुम्भ	शनि	शनि दशा में
२	वृष	वृश्चिक	मंगल	भौम दशा में
३	मिथुन	सिंह	सूर्य	सूर्य दशा में
४	कर्क	वृष	शुक्र	शुक्र दशा में
५	सिंह	कुम्भ	शनि	शनि दशा में

	कन्या	वृश्चिक	मंगल	भौम दशा में
	तुला	सिंह	सूर्य	सूर्य दशा में
	वृश्चिक	वृष	शुक्र	शुक्र दशा में
	धनु	कुम्भ	शनि	शनि दशा में
०	मकर	वृश्चिक	मंगल	भौम दशा में
१	कुम्भ	सिंह	सूर्य	सूर्य दशा में
२	मीन	वृष	शुक्र	शुक्र दशा में

बाधक ग्रहों की तरह बाधक राशियाँ भी होती हैं, जो कि ऊपर के चत्र में वर्णित हैं। बाधक राशि जिस भाव की होती है, उस भाव के फल में न्यूनता या बाधा लाती है। उदाहरणार्थ जिस जातक का मेष लग्न है, उसके लिए एकादश भाव (क्योंकि एकादश भाव में ही कुम्भ राशि है) न्यून फलदायक होगा तथा शनि बाधक ग्रह होने से दशम भाव भी (मकर राशि होने व मकर का स्वामी शनि होने के कारण) न्यून फलदायक ही होगा।

द्वादश भाव

कुण्डली का प्रत्येक ग्रह भाव कहलाता है। किस भाव से किन-किन बातों का अध्यन करना चाहिए इसका स्पष्टीकरण प्रस्तुत है।

प्रथम भाव—इस भाव से किसी भी जातक के शरीर, प्रारम्भिक जीवन, बचपन, स्वास्थ्य, आचरण, कृशता, पुष्टता, रंग, गुण, आत्मबल ख्याति, रूप, आयु, सुख, दुःख, मस्तिष्क, आकृति, स्वभाव, व्यक्तित्व शारीरिक गठन और चरित्र का अध्ययन किया जाता है। मिथुन, तुला, कुम्भ, और कन्या राशि इस भाव में बलवान मानी गई हैं।

द्वितीय भाव—धन, कोष, पैत्रिक-धन, कुटुम्ब, मित्र, पशु, बन्धन, जेलयात्रा, आँख, नाक, स्वर, सुन्दरता, गायन प्रेम, सुखभोग, संचितपूँजी क्रय-विक्रय दलाली, भोजन, कलात्मक रुचि आदतें, मृत्यु का कारण, एक्सीडेण्ट, स्वार्थता, निजत्व एवं रहस्यात्मकता का ज्ञान इसी भाव से किया जाता है।

तृतीय भाव—जातक से छोटे भाई और बहनें नौकर-चाकर, पराक्रम हिम्मत, व्यापार, उद्यम, मेहनत, आभूषण, साहस, शौर्य, धैर्य, दमा, गुर्दा खाँसी, क्षय, श्वास, प्राणायाम, योगाभ्यास, तत्परता, वचन, चातुर्य, भतीजे भतीजियाँ अन्य पारिवारिक सम्बन्ध आदि का अध्ययन लग्न से तीसरे

भाव से ही किया जाता है ।

चतुर्थ भाव—मस्तिष्क शान्ति, घरेलू जीवन, मातृ-सुख, घर, गाँव, चौपाये, बन्धु-बान्धव, सुख-शान्ति, मित्र, अन्तःकरण की स्थिति, मातृ भूमि, वाहन, यान, मकान, जायदाद, बाग-बगीचा, पेट से सम्बन्धित रोग यकृत, मनोरंजन, छल-कपट, दया, उदारता, गृह सम्पत्ति, भूमि सम्बन्धी मामले, गर्दन और कन्धों का ज्ञान इसी भाव से किया जाता है। यह स्थान विशेषतः माता एवं वाहन का है। कर्क, मीन और मकर राशि, इस भाव में बलवान मानी गई है ।

पञ्चम भाव—विद्या, सन्तान, दादा, कार्य-प्रवीणता, भावनाएँ, जातक की ख्याति, बुद्धि, प्रबन्ध-दक्षता, नीति, विनय, देशभक्ति, गर्भस्थान, नौकरी छूटना, धन मिलने के उपाय, अनायास धन प्राप्ति, लॉटरी, सट्टा, जूआ, जठराग्नि, गुण, वाक्स्थान, हाथ का यश, मूत्र पिण्ड, नम्रता आदि का अध्ययन, इस भाव से किया जाता है ।

षष्ठ भाव—शत्रु-चिन्ता, भय, रोग, झगड़े, मुकदमे, छुरेबाजी, झंझट, परतन्त्रता, क्षति, गुदास्थान, मामा की स्थिति, ननिहाल, पीड़ा, कर्ज, गलतफहमियाँ, दुःख, बीमारी और अनुचित कार्यों का अध्ययन छठे भाव से किया जाता है ।

सप्तम भाव—स्त्री, स्त्री का स्वास्थ्य, मदन-पीड़ा, काम-क्रीड़ा, दैनिक रोजगार, छूत, भोग-विलास, काम-चिन्ता, जननेन्द्रिय, जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग, व्यापार, विवाह, प्रेम, प्रेम से सम्बन्धित बदनामी, प्रेम-सफलता, प्रेमी-प्रेमिका मिलन, स्त्री का रूप, रंग, शील, चरित्र, (स्त्री की कुण्डली हो तो पति का रंग, रूप, गुण चरित्र) तलाक, पति-पत्नी में अनबन, व्यापारिक सहयोगी, कूटनीतिज्ञता, साधारण प्रसन्नता, मारक स्थान एवं बवासीर आदि रोगों का अध्ययन सप्तम भाव से किया जाता है। वृश्चिक राशि इस भाव में बलवान मानी गई है ।

अष्टम भाव—आयु, मानसिक व्यथा, मृत्यु, पुरातत्व प्रेम, पुरातत्वान्वेषण, विदेश-निवास, गूढ़ युक्तियाँ, पूर्व सञ्चित द्रव्य, गड़ा हुआ धन, पूर्व जन्म ज्ञान, मृत्यु के पश्चात की स्थिति, ऋण, संग्राम, द्रव्यादि नष्ट, मृत्यु का कारण, अपमृत्यु, निम्नता, पतन, समुद्र यात्रा, लिंग-योनि-रोग आदि का अध्ययन इस भाव से होता है ।

नवम भाव—भाग्य, भाग्योन्नति, भाग्यअवनति, धर्म, धर्म-परिवर्तन,

धार्मिक कट्टरता, ईश्वर प्राप्ति, गुरु, तप, दैव-बल, पुण्य, तीर्थ-यात्रा, वास, ऐश्वर्य, मानसिक वृत्ति, विदेश-गमन, वायुयान-यात्रा पितृ-सुख, दान पुण्य, यज्ञ, पोते, पड़पोते, सहानुभूति, प्रसिद्धि, नेतृत्व, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि का अध्ययन नवम भाव से किया जाता है। इस भाव में सूर्य एवं बृहस्पति प्रबल कारक माने जाते हैं।

दशम भाव—राज्य, मान, नौकरी, सेवावृत्ति, प्रतिष्ठा, पिता के सम्बन्ध में जानकारी, पितृ-सुख, व्यापार, पितृ-द्रव्य, कर्म, समाज, हुकूमत अधिकार, ऐश्वर्य भोग, कीर्तिलाभ, नौकरी का प्रकार, ऑफीसर पद, राजकीय अथवा अर्द्ध राजकीय सेवा, विदेश यात्रा, आत्मविश्वास, ज्ञान, तथा जीवन प्रद्धति का प्रकार आदि का विचार इसी भाव से होता है। मेष, वृष और सिंह राशियाँ इसमें बलवान मानी गई हैं।

एकादश भाव—लाभ, आमदनी, आवश्यकता-पूर्ति, गुप्त धन, राज-द्रव्य, भूषण, वस्त्रादि, गज, अश्व, मोटर, आयुयान-सुख, बड़े भाइयों की संख्या व उनसे सुख बड़े भाइयों से लाभ हानि, एव स्वतन्त्र चिन्तन आदि का ज्ञान एकादश भाव से किया जाता है।

द्वादश भाव—हानि, दान, व्यय, दण्ड, व्यसन, बाहरी स्थानों से सम्बन्ध, शत्रु का विरोध, नेत्र-पीड़ा, फिजूल खर्ची, अतिरिक्त एवं आकस्मिक खर्चे, मोक्ष एवं मृत्यु के पश्चात प्राणी की गति का ज्ञान द्वादश भाव से करना चाहिए।

ऊपर जो बारह भाव और उनसे सम्बन्धित बातें कही गई हैं, उन का अध्ययन सम्बन्धित भाव से ही करना चाहिए।

ज्योतिष में मुख्यतः नौ ग्रह हैं और यह ग्रह भी विशिष्ट कार्यों के हेतु हैं। आगे के पृष्ठों में इन ग्रहों से सम्बन्धित विशिष्ट कार्यों का परिचय दिया जा रहा है।

विशिष्ट कारक ग्रह

सूर्य—पराक्रम, तेजस्विता, झगड़े, क्रोध, मार-पीट, हिंसक कार्य, एवं हिम्मत आदि का कारक है। एकादश भाव में सूर्य विशेष कारक ग्रह है।

चन्द्र—सौम्यता, सज्जनता, शील, संकोच, लज्जा, भावुकता, सुन्दरता जलयात्रा आदि का कारक है। लग्न और सप्तम स्थान में चन्द्र विशेष कारक ग्रह माना गया है।

मंगल —युद्ध, नेतृत्व, सेनापतित्व, पुलिस, मिलटरी की नौकरी, अस्त्र-शस्त्र संचालन, कृषि, भूमि सम्बन्धी कार्य, भूगर्भ विशेषज्ञ, मकान बनवाना, भूमि खरीदना, डॉक्टरी शिक्षा, पशुपालन आदि कार्यों का विशिष्ट कारक है। दशम भाव में मंगल विशिष्ट कारक ग्रह माना गया है।

बुध—व्यापार, लेन-देन, खरीदना-बेचना, वणिक्-वृत्ति, कंजूसी, ऐश्वर्य भोग, क्लर्की, स्टेनो-टाइपिस्ट, वायुयान-चालक आदि का कारक है। एकादश भाव में बुध कारक ग्रह है।

बृहस्पति—शिक्षा, पांडित्य, वेद-पठन, वाद-विवाद, शास्त्रार्थ, धार्मिक कार्यों का ज्ञान, लेक्चरार, प्रोफेसर, गजेटेड ऑफीसर, नेतृत्व प्रधान कार्य, आदि का कारक ग्रह बृहस्पति है। पंचम और नवम भाव में गुरु कारक ग्रह है।

शुक्र—सुन्दरता, स्वच्छता, शारिरिक यष्टि, विश्वसुन्दरी पद, संगीत, शारीरिक गठन, तेजस्विता, सुकुमारता, विदेश यात्रा, विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से सम्पर्क, हड्डियों के जोड़-तोड़ का विशेषज्ञ, प्रेम सम्बन्धी कार्य, दलाली, वेश्यावृत्ति, भोग-विलास, कामातुरता, स्वच्छता आदि का कारक ग्रह शुक्र है। द्वादश, चतुर्थ और सप्तम भाव में यह कारक ग्रह है।

शनि—धूत, छल, कपट, धोखा, हिंसा, चौर्य-कर्म, डाकू, हिंसक व्यक्तित्व, आदि कार्यों का हेतु है। लोहे का व्यापार, तिल, तेल, ऊन आदि का व्यापार हेतु भी शनि है। तीसरे और छठे भाव में यह कारण ग्रह माना गया है।

राहु —आलस्य, अस्थिरता, स्थावर सम्पत्ति, योगाभ्यास, उदर-रोग, वाहन, जन-नेता, विधान सभाई, लोक सभापद, कूटनीतिज्ञता, राजदूत आदि का कारक है। तीसरे, छठे और दशम भाव में यह कारण ग्रह है।

केतु—धन लाभ, लेखन, शत्रु-विजय, स्वभूमि से स्थानान्तरण, बहुभाषाभाषी, सफल वक्ता, विविध व्यसन, नशीली वस्तुओं का व्यापार, तस्कर, ठगी, विष-विक्रेता, मशीनी कार्यों में प्रवीणता आदि का कारण ग्रह केतु है। दूसरे तथा आठवें भाव में यह कारक ग्रह है।

कुण्डली का अध्ययन करने से पूर्व यह जान लेना अति आवश्यक है कि कुण्डली में कौन-कौन से ग्रह कारक (शुभ) अकारक (अशुभ) तथा तटस्थ हैं। पाठकों की सुविधा के लिए आगे प्रत्येक लग्न के कारक, अकारक

ग्रौर तटस्थ ग्रहों की जानकारी दी जा रही है, जिसका ज्ञान कुण्डली देखने वालों के लिए अत्यावश्यक है।

१. यदि मेष लग्न हो तो कारक—बृहस्पति, सूर्य और मंगल। बृहस्पति इस लग्न की कुण्डली में सर्वाधिक कारक ग्रह है।
अकारक—शुक्र, बुध और शनि। बुध इसमें सर्वाधिक अकारक है, क्योंकि वह तीसरे और छठे भाव का स्वामी है।
तटस्थ—चन्द्रमा।

२. यदि वृष लग्न हो तो कारक—शनि इसमें सर्वाधिक कारक ग्रह होता है, क्योंकि वह नवें और दसवें भाव का अधिपति होता है। शनि के अतिरिक्त बुध, सूर्य और मंगल भी कारक ग्रह हैं।
अकारक—चन्द्र और बृहस्पति
तटस्थ—शुक्र

३. यदि मिथुन लग्न हो तो कारक—शुक्र सर्वाधिक कारक ग्रह है। शनि भी कारक ग्रह माना जा सकता है।
अकारक—मंगल सर्वाधिक अकारक ग्रह है। गुरु और सूर्य भी अकारक हैं।
तटस्थ—बुध और चंद्र।

४. यदि कर्क लग्न हो तो कारक—मंगल सर्वाधिक कारक ग्रह है। गुरु भी कारक है।
अकारक—बुध और शुक्र।
तटस्थ—सूर्य, चन्द्र और शनि।

५. यदि सिंह लग्न हो तो कारक—सूर्य और मंगल।
अकारक—बुध और शुक्र।
तटस्थ—शनि, चंद्र और बृहस्पति।

६. यदि कन्या लग्न हो तो कारक—शुक्र सर्वाधिक कारक ग्रह है।
अकारक—मंगल, गुरु और चंद्र।
तटस्थ—सूर्य, बुध और शनि।

७. यदि तुला लग्न हो तो कारक—शनि इसमें सर्वाधिक कारक ग्रह है एवं बुध तथा शुक्र भी कारक हैं।
अकारक—सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति।
तटस्थ—मंगल।

८. **यदि वृश्चिक लग्न हो तो** कारक—चन्द्र इसमें सर्वाधिक कारक ग्रह है
सूर्य और गुरु भी कारक हैं।
अकारक—शुक्र और बुध।
तटस्थ—शनि और मंगल।

९. **यदि धनु लग्न हो तो** कारक—सूर्य और मंगल प्रबल कारक ग्रह हैं।
अकारक—बुध, शुक्र और शनि।
तटस्थ—चन्द्र और बृहस्पति।

१०. **यदि मकर लग्न हो तो** कारक—शुक्र इस कुण्डली में सर्वाधिक कारक ग्रह माना जाता है। बुध और शनि भी कारक ग्रह हैं।
अकारक—चन्द्र, गुरु और मंगल।
तटस्थ—सूर्य।

११. **यदि कुम्भ लग्न हो तो** कारक—शुक्र ग्रह सर्वाधिक कारक ग्रह है। सूर्य, मंगल और शनि भी कारक ग्रह माने जा सकते हैं।
अकारक—चन्द्र और बृहस्पति।
तटस्थ—बुध।

१२. **यदि मीन लग्न हो तो** कारक—मंगल और चन्द्र सर्वाधिक प्रबल कारक ग्रह हैं।
अकारक—सूर्य, बुध, शुक्र और शनि अकारक ग्रह हैं।
तटस्थ—बृहस्पति।

ऊपर प्रत्येक लग्न कुण्डली के कारक-अकारक और तटस्थ ग्रह स्पष्ट किये गये हैं। प्रत्येक ग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में अपने से सम्बन्धित शुभ-अशुभ फल प्रदान करते हैं।

योगकारक ग्रह

कुण्डली में योगकारक ग्रहों का अध्ययन भी परमावश्यक है, क्योंकि दो या दो से अधिक ग्रह एक साथ बैठकर या दृष्ट होकर योग बनाते हैं। इन योगों में उत्पन्न जातक विख्यात, धनी, गुणी, चतुर एवं पराक्रमी होता है।

(१) एक ही ग्रह जब कुण्डली में त्रिकोण और केन्द्र से सम्बन्ध स्थापति करता है तो यह योगकारक बन जाता है, परन्तु ऐसा केवल **भौम**, गुरु और शनि ग्रहों द्वारा ही होता है।

(२) केन्द्राधिपति और त्रिकोणाधपति यदि एक साथ बैठते हैं तो वे ग्रह योगकारक कहे जाते हैं। इस प्रकार के योग ९ तथा १० वें भाव

भाव से, ४ और ५ वें भाव से, ५ और ७ वें भाव से, ५ और १० वें भाव से बनते हैं।

(३) यदि नवम स्थान का स्वामी दशम भाव में और दशम भाव का स्वामी नवम भाव में हो, तब भी वे दोनों ग्रह प्रबल योगकारक माने जाते हैं

(४) जब ९ वें भाव का स्वामी कहीं भी बैठ कर दशम भाव के स्वामी को देख लेता है, तो वह भी योगकारक बन जाता है।

(५) इसके अतिरिक्त ज्योतिष-ग्रन्थों में सैकड़ों अन्य योग हैं, जैसे गज-केशरी योग, राज योग, कमल योग, चाप योग, धनुयोग आदि-आदि। पाठकों को इन योगों का अध्ययन भी धैर्यपूर्वक करना चाहिए। देखिए पुस्तकें '—' एवं '—' लेखक—

कुण्डली का अध्ययन करते समय ध्यान में रखने योग्य नियम

कुण्डली का अध्ययन करते समय निम्न बातों का अध्ययन कर लेना आवश्यक होता है।

(१) लग्न, लग्नेश की स्थिति, लग्न राशि तथा लग्नेश की प्रकृति का अध्ययन।

(२) ग्रहों की परस्पर दृष्टि।

(३) कारक-अकारक और तटस्थ ग्रह। उनके स्थान और कुण्डली में उनका प्रभाव।

(४) विविध योग।

(५) परस्पर दृष्ट ग्रह। स्थान परिवर्तन करने वाले ग्रह एवं केन्द्र-त्रिकोण का सम्बन्ध।

(६) प्रत्येक भाव, उसके स्वामी तथा उस स्वामी की उस कुण्डली में स्थिति।

(७) मित्र क्षेत्र, शत्रुक्षेत्री ग्रहों का अध्ययन।

(८) दशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा।

(९) राशियाँ तथा उनकी दृष्टियाँ।

(१०) बाधक राशियाँ और बाधक ग्रह।

(१२) पापग्रह और सौम्य ग्रहों का पारिस्परिक सम्बन्ध।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही ज्योतिषी को कुण्डली देखने में प्रवृत्त होना चाहिए।

प्रथम भाव

प्रथम भाव अथवा लग्न कुण्डली में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाव है लग्न ही समस्त भावों का ध्रुव केन्द्र है और लग्न राशि का स्वामी लग्ने ही कुण्डली का अधिपति माना जाता है।

लग्नेश एवं लग्न राशि से जातक की शारीरिक गठन, वेषभूषा आकृति, स्वास्थ्य, आचरण, कृशता, पुष्टता, स्थूलता, रंग-गुण, रू स्वभाव आदि का अध्ययन किया जाता है। लग्न भाव में विभिन्न ग्रह विभिन्न विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि कोई ग्रह लग्न में हो या लग्न को देख रहा हो तो उस ग्रह से सम्बन्धित तत्व उस जातक में विशेष प्रबल होंगे। नीचे प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित तत्व एवं स्वभाव आदि का संक्षेप में विचार प्रस्तुत किया जा रहा है—

सूर्य—ईमानदारी, तुनकमिजाजी, गुस्सा एवं शारीरिक पुष्टता। सूर्य यदि लग्नेश या लग्न में हो तो रंग (वर्ण) भी खुलता हुआ होगा।

चन्द्र—कोमलता, कल्पना शक्ति की प्रवलता, भावुकता, सहृदयता, दयार्द्रता, मानसिक चिन्ता से ग्रस्त एवं उदर रोगी।

मंगल—रूखापन, चेहरे पर रक्तिमता, साहसी, स्वस्थ शरीर, भव्य आकृति, धोखा देने वाला, स्वार्थ साधन में तत्पर और अपने सिद्धान्तों तथा भावनाओं पर दृढ़ रहने वाला।

बुध—चेहरे की सुन्दरता, बनावट, कुछ पीलापन लिए हुए गौर वर्ण, ठिगना कद और पुष्ट शरीर।

बृहस्पति—ऊँचा, लम्बा और दृढ़ शरीर, पीतिमा बाहुल्य वर्ण, विशाल आँखें, उन्नत ललाट, भव्य आकृति।

शुक्र—विशेष सुन्दर, परिवार से स्नेह रखने वाला, स्त्रियों पर अनुसक्त, सुन्दर स्त्रियों के सम्पर्क में रहने का इच्छुक, कोमलता, मसृणता और गेहुआँ रंग।

शनि—श्याम वर्ण, स्थूल शरीर, छोटी-छोटी पर पैनी आँखें, लम्बा तगड़ा शरीर, संकरा तथा अन्दर खिचा हुआ सीना एवं चालाक, कुटिल स्वभाव रखने वाला।

राहु—शनि के समान ही इसका प्रभाव है।

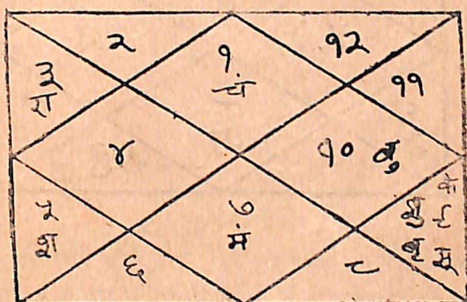
केतु—मंगल के समान इसका प्रभाव भी समझना चाहिए।

यदि लग्न में एक से अधिक ग्रह हों या एकाधिक ग्रह लग्न को देख

रहे हों तो उन ग्रहों का मिला-जुला प्रभाव समझना चाहिए।

आगे के पृष्ठों में राशिगत प्रभाव एवं विशेषताएं स्पष्ट की जा रही हैं।

मेष—मेष लग्न में जन्म लेने वाला जातक मँझोले कद का, रक्तिम बहुत गौर वर्ण का, चंचल नेत्रों वाला, तीक्षण दृष्टियुक्त, तुरन्त मन की थाह पा लेने में समर्थ व्यक्ति होता है। उसका चेहरा चौड़ाई की अपेक्षा लम्बा कुछ ज्यादा होता है। मोटी और दृढ़ जांघें, भूरे रंग से मिश्रित काले बाल और चमकदार दाँत ऐसे व्यक्ति की विशेषता होती है। ऐसा व्यक्ति चतुर, तुरन्त निर्णय लेने में सक्षम और स्वतन्त्र विचारों का धनी होता है। संकटों में भी मुस्कराता हुआ यह बाधाओं को पार कर लेता है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक मामलों में लचीला होता है। सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोही विचार रखता हुआ भी उनका पालन करता रहता है, राज्य समाज में यह प्रगति करता है और जाति में श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। हाथ में द्रव आने पर यह दान देने में हिचकिचाहट महसूस नहीं करता। समुद्र यात्रा अथवा जल से भय रखता हुआ भी दुर्गम कार्यों को सरल करने में तत्पर रहता है। मेष लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति वैज्ञानिक विचारों में अथवा कार्यों में विशेष रुचि रखता है। प्रत्येक कार्य को योजनाबद्ध तरीके से करने में रुचि रखता है।

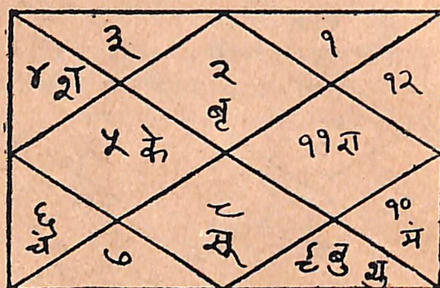


डा० सम्पूर्णानन्द जी (भूतपूर्व राज्यपाल राजस्थान)

साधारण कुल में जन्म लेने पर भी अपनी प्रतिभा एवं बुद्धि से उच्च पद पर पहुँचते हैं। थोड़ी सी भी विपरीत बात या कार्य से ये एकदम क्रोधित हो जाते हैं, परन्तु पुनः शान्त भी शीघ्र हो जाते है। धार्मिक कार्यों के

अतिरिक्त कला, विज्ञान, संगीत और ज्योतिष में भी रुचि रखते हैं। सौन्दर्य के प्रति इनका स्वाभाविक रुझान रहता है। इनके जीवन में उत्थान-पतन भी अवश्यम्भावी है।

वृष—वृष लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति शरीर से बलिष्ठ और पुरुषार्थी होता है, चेहरा गौर वर्ण और लम्बा होता है, होंठ जरूरत से ज्यादा मोटे तथा कान और आँखें लम्बी होती हैं। ऐसे व्यक्ति का चेहरा आकर्षक होता है तथा उन्नत ललाट एवं लम्बे हाथ एसे व्यक्ति की विशेषता होती हैं। ऐसा व्यक्ति हर समय नवीन शोध में प्रवृत्त रहता है, स्वभाव से यह गम्भीर एवं कम मित्र रखने वाला होता है, अनुचित कार्य करता है और करने के वाद घण्टों पछताता रहता है। इस लग्न में जन्म लेने वाले की प्रवृत्तियाँ भी साँड की तरह ही होती हैं, अपने आप में मस्त और धुन का पक्का होता है। जिस काम को एक बार छेड़ लेता है, उसके पीछे पूरी तरह लग जाना इसका स्वभाव होता है। ये निरंतर योजनाएँ बनाते रहते हैं तथा अपने ही विचारों को मूर्त रूप देने में सदा तत्पर रहते हैं। इनका व्यक्तित्व भव्य और कार्य करने की शैली नूतन



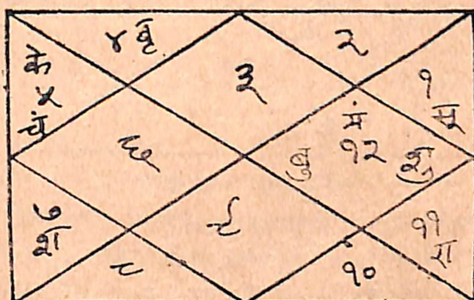
जगदीशचन्द्र वसु

होती है। इस प्रकार का जातक वाद्य संगीतादि कलाओं में भी रुचि रखता है तथा विविध प्रकार के भोग भोगने में प्रवृत्त रहता है।

मिथुन—मिथुन लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति कठिन परिश्रमी होता है तथा जीवन के प्रत्येक क्षण को सार्थक करने में लगा रहता है, परन्तु फिर भी उसे वह सब प्राप्त नहीं होता, जिसकी उसे चाह रहती है अथवा जिसे वह पाने का अधिकारी होता है। फलस्वरूप वह हीन

वना का शिकार हो जाता है तथा दबी ज़बान से विद्रोही स्वर निका-
ने में तत्पर रहता है ।

ऐसा व्यक्ति एक साथ कई कार्यों को करने की जोखिम उठा लेता है, लिखने-पढ़ने का विशेष शौकीन होता है तथा यदि लग्न को गुरु देख रहा हो तो लेखन कार्य में भी ख्याति अर्जित करता है, परन्तु ऐसे जातक का लेखन किसी एक विशेष धारा या विषय पर न होकर विविध विषयों पर होता है । हर समय कुछ न कुछ करते रहने की इन्हें धुन रहती है । ऐसा जातक लम्बे कद का, हृष्ट-पुष्ट शरीर और आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है । नया कार्य प्रारम्भ करने में इन्हें विशेष प्रसन्नता

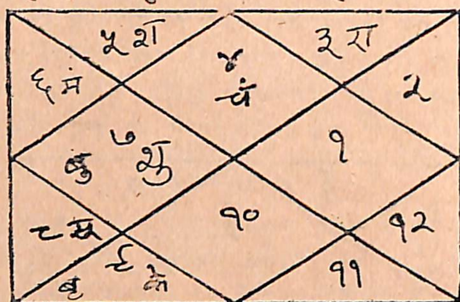


श्री मोरारजी देसाई

होती है, इनकी प्रत्येक कार्यसिद्धि में व्यर्थ की देर होती है और परिश्रम से कम फल प्राप्त होता है । फिर भी इनमें गजब की हिम्मत होती है तथा ये भारी से भारी बाधाओं का सामना करने को तैयार रहते है । मैकेनिकल कार्यों में इनका दिमाग अत्यन्त तेज होता है । पुस्तक व्यवसाय, लेखन-प्रकाशन इनके शौक होते हैं । चतुर, बात करने में प्रवीण और अपना कार्य निकालने में ये होशियार होते हैं । सच्ची मित्रता की कसौटी पर ये खतरे उतरते हैं ।

कर्क—इस लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति भावुक और सहृदय होता है, भावनाओं में जब वह बह जाता है तो अपना भला-बुरा भी नहीं सोचता । निरन्तर कठोर परिश्रम करते रहने पर भी कभी-कभी फल प्राप्ति में देरी हो जाती है । जीवन में आगे बढ़ते रहने की तीव्र इच्छा रहती है, परन्तु लगातार असफलताओं के कारण हीन भावना मन में

घर कर जाती है। सजावट और गायन आदि में ऐसे जातक विशेष रुचि लेते हैं। नये-नये कार्य करते रहने की प्रवृत्ति रहती है। अत्यन्त तीक्ष्ण बुद्धि और अन्वेषक विचारधारा जीवन में सफलता प्रदान करने में सहायक होती है, परन्तु भावुकता का तत्व प्रधान रहने के कारण ये किसी भी कार्य की गहराई तक पहुँचने की क्षमता नहीं रखते। पैसे की कमी



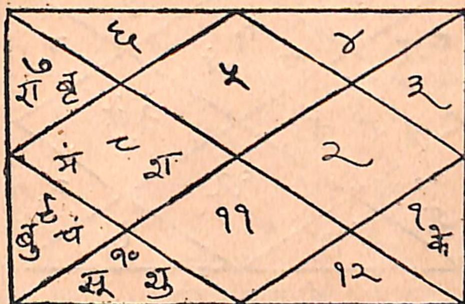
श्री जवाहरलाल नेहरू

रहने पर भी द्रव्य के कारण इनका कोई काम रुकता नहीं और सामाजिक कार्यों में खर्च करने को यह सदा तत्पर रहते हैं। न्यायशीलता, पक्षपात रहितता और ईमानदारी के लिए ऐसे व्यक्ति प्रख्यात होते हैं। दाम्पत्य जीवन इनका सुखी नहीं कहा जा सकता, पति-पत्नी के विचारों में विभिन्नता तथा मनमुटाव स्वाभाविक है।

सिंह—सिंह लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति क्रोधी और उन्नत विचारों को रखने वाला होता है। कठिनता से गुस्सा होता है और गुस्सा आने पर एकदम से शान्त भी नहीं होता है। संगीत कलादि में रुचि रखने वाला और भ्रमण का शौकीन होता है। इस लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति का शरीर आकर्षक होता है। गोल और चौड़ा मुँह, ऊँचा उठा हुआ ललाट चेहरे की विशेषता होती है। नीचे के भाग की अपेक्षा शरीर के ऊपर का भाग ज्यादा प्रभावकारी और सुन्दर होता है।

अपने जीवन में ऐसे व्यक्ति प्रत्येक प्रकार की स्थितियों को अपने अनुकूल ढाल लेते हैं। अपने अफसरों के प्रति कृतज्ञ रहते हैं तथा आत्मविश्वास की भावना प्रबल होती है। धर्म के मामले में ये कट्टर न रहकर बीच का रास्ता स्वीकार कर लेते हैं, भावनाओं पर नियंत्रण रखते

हैं, परन्तु संतुष्ट हो जाने के बाद आलसी भी हो जाते हैं। इसके विचार मौलिक होते हैं तथा जीवन का एक निश्चित उद्देश्य होता है, जिसे पूर्ण करने में कृतसंकल्प रहते हैं।

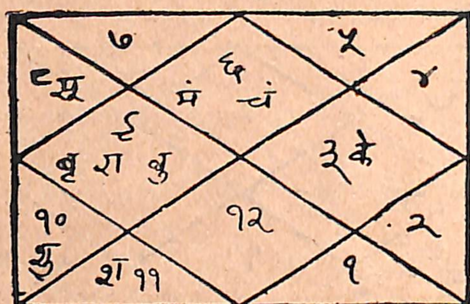


श्री कैलाशचन्द्र

ये संशयात्मक और शक्की प्रकृति के भी होते हैं तथा किसी की भी बात का तुरंत विश्वास कर लेते है, फलस्वरूप जीवन में कठिनाइयाँ एवं खतरे भी उठाने पड़ते हैं। सिंह लग्न वालों में अधिकांशतः जातकों के एक ही पुत्र होता है। ऐसा जातक भ्रमण कार्य में तत्पर, कई मित्र रखने वाला, विनयशील, माता-पिता का प्रिय, व्यसनशील तथा प्रख्यात होता है।

कन्या — कन्या लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्रत्येक कार्य करने में उतावली करता है, फिर वह कार्य चाहे उसके लिए हितकर हो अथवा अहितकर। भावना प्रधान होने के कारण ऐसे व्यक्ति भावुक होते हैं और अपनी भावनाओं पर सहज ही नियंत्रण नहीं कर पाते। ऐसे लोगों का मस्तिष्क बहुत अधिक क्रियाशील रहता है और हर क्षण कुछ न कुछ नया ही सोचते रहते हैं। संगीत, वाद्य आदि में रुचि रखने वाले होते हैं। मध्यम कद के, गौर वर्ण तथा तीखी नासिका के धनी ऐसे व्यक्ति अपने चेहरे पर कोमलता और मसृणता लिये होते हैं। इनका सीना उभरा हुआ सजीला होता है, ललाट देदीप्यमान और केश राशि सघन होती है। यौवन-काल इनका सर्वाधिक उन्नत काल होता है, पठन-पाठन में कम रुचि रहती है तथा दूसरों को अपनी भावनाओं के साथ बहा ले जाने की इनमें अपूर्व क्षमता होती है। ये स्वार्थी होते हैं और अपने मामूली से

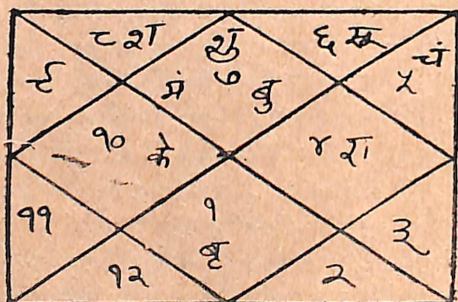
स्वार्थ के लिए दूसरों का बड़े से बड़ा नुकसान करने में भी हिचकिचाहट महसूस नहीं करते। ये जातक सफल कूटनीतिज्ञ होते हैं तथा राजनीतिक



श्री भगवानचन्द

जीवन में सर्वाधिक सफल होते हैं। इनके मन में कुछ और तथा होठों पर कुछ और होता है, फलस्वरूप इनके मन की थाह पा लेना कठिन होता है। मानसिक हीनता भी रहती है। जीवन के संघर्षों में हिम्मत हार बैठते हैं। विपरीत योनि के प्रति विशेष झुकाव रहता है तथा प्रेम के क्षेत्र में असफल रहते हैं।

तुला—तुला लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति आदर्श भावना-प्रधान, शीघ्र निर्णय लेने की शक्ति रखने वाले, अपने प्रभाव से दूसरों को मित्र

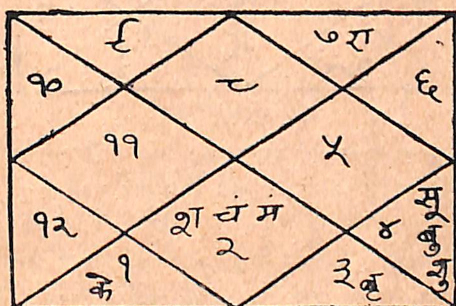


महात्मा गाँधी

बनाने वाले तथा रचनात्मक कार्य करने में तत्पर रहते हैं। खुलता हुआ गोरा रंग, न अधिक ठिगना और न अधिक लम्बा कद, कफ प्रधान प्रकृति,

चतुर, सदा मुस्कराते रहने वाले, चौड़ा चेहरा, तीखी और सुन्दर आँखें चौड़ी छाती और सुन्दर आकृति का धनी यह जातक सफल माना जाता ये व्यक्ति योग्य और कार्यदक्ष होते हैं। सामने वाले मनुष्य के मन की थाह पा लेने की इनमें विशेष योग्यता होती है और अवसरानुकूल अपने आपको ढाल लेने में ये प्रवीण होते हैं। न्याय, दया, क्षमा, शान्ति एवं अनुशासन की ओर इनका झुकाव रहता है। इनको कल्पना शक्ति प्रबल रहती है तथा साधन-विहीन होने पर भी इनका लक्ष्य ऊँचा होता है। राजनीतिक क्षेत्र में ये जातक सफल होते हैं।

वृश्चिक—पुरुष तत्व प्रधान ऐसा जातक दूसरों को छेड़ने में आनन्द अनुभव करता है। अस्थिर प्रकृति का ऐसा जातक आकर्षक व्यक्तित्व रखने वाला होता है। मँझला कद, गठीला शरीर, विशाल मस्तिष्क, दीप्त ललाट, छितरे काले बाल, उभरी हुई ठोढ़ी और चमकती हुई आँखें ऐसे जातकों की विशेषता होती है। इनका व्यक्तित्व सहज ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। चुम्बकीय और सम्मोहक व्यक्तित्व के ऐसे धनी जातक लोकप्रिय होते हैं। प्रेम के क्षेत्र में ये अग्रणी होते हैं तथा विपरीति योनि के प्रति सहज आकर्षण अनुभव करते हैं।

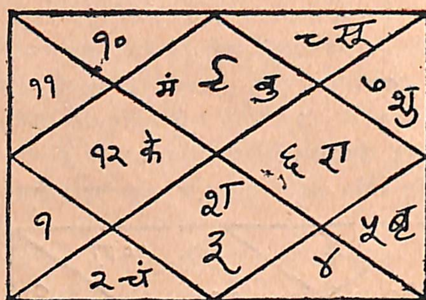


इटली का प्रधान—मुसोलिनी

अपनी भावनाओं पर ये सहज ही नियन्त्रण नहीं कर पाते और बिना परीक्षा लिए दूसरों पर विश्वास कर लेते हैं। स्वार्थ सिद्ध होने तक दुश्मन को कंधे पर बिठाने में भी ये नहीं हिचकिचाते, परन्तु स्वार्थपूर्ति के पश्चात उसे पैरों तले रोंदने में भी देर नहीं लगाते। राजनीति के क्षेत्र में ऐसे जातक पूर्ण सफल होते हैं। स्वभाव उग्र होता है तथा जरा

सी विपरीत बात होने पर ये भड़क उठते हैं। जान-पहचान विस्तृत होती है तथा विरोधियों तक से काम निकालने में चतुर होते हैं। लेखन कार्य में ये सफल हो सकते हैं, परन्तु शारीरिक झंझटों एवं आलस्य के कारण नियमित लेखन नहीं कर पाते। धन का इनके जीवन में अभाव नहीं रहता, पर धन को संचय कर एक जगह रखने की कला भी उन्हें नहीं आती। हीन भावना की प्रबलता होने पर ईश्वराधना का दिखावा भी करते हैं।

धनु—धनु लग्न में जन्म लेने वाले जातक अधिकांशतः दार्शनिक विचारों के धनी होते हैं, ईश्वर में इनकी दृढ़ आस्था रहती है, दूसरों पर तुरन्त विश्वास कर लेते हैं। शारीरिक गठन सुन्दर और सजीली होती

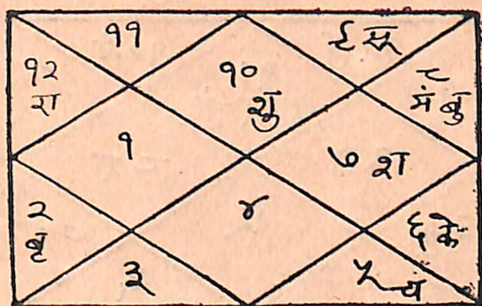


डॉ॰ राजेन्द्रप्रसाद

है। गोल और आकर्षक चेहरा, श्याम-पीत-केश, पैनी और खिलती हुई आँखें तथा सम्मोहक मुस्कराहट उसकी विशेषता होती है। इनके शरीर में साधारणतः स्थूलता ही रहती है। निरन्तर परिश्रमरत ऐसे जातक वणिक् वृत्ति प्रधान होते हैं तथा प्रत्येक कार्य में अपना भला-बुरा पहले सोच लेते हैं। ऐसे जातक सात्विक वृत्ति प्रधान होते हैं। व्यर्थ का दिखावा, फैशन, अपव्यय आदि से दूर रहते हैं। जीवन में सत्य, न्याय, ईमानदारी, दयालुता और स्वतन्त्रता को विशेष महत्व देते हैं।

मकर – यह व्यक्ति रहस्यमय होता है तथा इसका कोई भी कार्य निश्चित नहीं होता, अपने उद्देश्यों के प्रति यह सचेत रहता है तथा ऊँची-ऊँची योजनाएँ बनाने में सदा तत्पर रहता है। लम्बा, ऊँचा, रक्त गौर वर्ण और कड़े केशों वाला यह जातक चपटी नाक, बड़ा सिर

ौर पैनी आँखों का धनी होता है। शरीर से ये पतले और फुर्तीले होते
। इनका स्वभाव उग्र होता है, परन्तु जहाँ अपना पक्ष कमजोर पड़ता



माओ-त्से-तुंग (चीन के भूतपूर्व राष्ट्रपति)

खते हैं. वहाँ नम्र भी हो जाते हैं। कमाते हैं, पर पैसा इनके पास टिकता नहीं, अतः हर समय द्रव्य का अभाव ही बना रहता है। दिखावे और शान-शौकत में ये अपव्यय कर डालते हैं। इनका दाम्पत्य-जीवन मधुर नहीं कहा जा सकता। दोनों के विचारों में मतभेद बना रहता है, व्यापारिक कार्यों में इनकी रुचि होती है, पर उसमें ये सफल नहीं हो पाते। हीन भावना से भी ये ग्रस्त रहते हैं तथा बहुत अधिक बोलते हैं। वाक् शक्ति पर इनका नियन्त्रण नहीं रहता। ये अच्छे अभिनेता होते हैं, तथा क्षण-क्षण में रूप बदलने में पारगत होते हैं। स्वार्थ की भावना विशेष होती है।

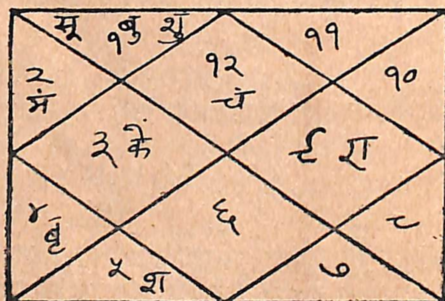
कुम्भ—कुम्भ लग्न दार्शनिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। इस लग्न में जन्म लेने वाला जातक शिक्षित, सभ्य, शान्त एवं कुलीन विचारों का धनी होता है। दूसरों की सहायता करने को ये सदा तत्पर रहते हैं, सेवा, सहानुभूति एवं सहायता इनके जीवन का उद्देश्य होता है। मस्तिष्क इनका तीव्र होता है तथा स्मरणशक्ति इनमें गजब की होती है। ये व्यक्ति लम्बे, हृष्टपुष्ट, प्रभावयुक्त चेहरा तथा उभरा हुआ मस्तिष्क रखते हैं। सरल स्वभाव के ये जातक प्रत्येक विचार में नवीन युक्ति प्रस्तुत करते हैं तथा खरी-खरी कह देने में हिचकिचाहट महसूस नहीं करते। इनकी उन्नति और अवनति अप्रत्याशित रूप से ही होती है तथा जीवन में निरन्तर बाधाओं के थपेड़े सहने पड़ते हैं, कठिन से कठिन

संघर्षों में उलझना इनका स्वभाव होता है। दाम्पत्य जीवन साधारण होता है, वृद्धावस्था में पेट और छाती सम्बन्धी बीमारियाँ हो जाती हैं।



श्री रामकृष्ण परमहंस

मीन—मीन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति श्रद्धालु, ईश्वर में विश्वास रखने वाले, मेहमान प्रिय, सामाजिक रूढ़ियों का पालन करने वाले, बातचीत में प्रवीण और समझदार होते हैं। ऐसा लग्न रखने वाले जातक मध्यम कद के, सुन्दर घुंघराले केश, उन्नत नासिका, छोटे-छोटे दाँत, पैनी आँखें और भव्य आकृति लिए हुए होता है। ये सहिष्णु होते हैं, यदि कोई इनके साथ बुराई का भी व्यवहार करते हैं, तो ये प्रत्युत्तर में भलाई ही करते हैं। अधिकतर ये अपने आप में ही केन्द्रित रहते हैं।



विश्वकवि—रवीन्द्रनाथ टैगोर

आर्थिक मामलों में ये लचीले होते हैं। पारिवारिक जीवन इनका पूर्ण सुखी होता। लेखन में ये रुचि रखते हैं तथा संगीत, नाटक, काव्य

ादि में आस्था प्रकट करते हैं। आर्थिक मामलों में ये पिछड़े रहते हैं, न इनके पास आता है, पर टिकता नहीं। दोनों हाथों से खर्च करते । आत्मविश्वास इनमें भरपूर होता है तथा जीवन में ये अपने लक्ष्य क पहुँच जाते हैं।

लग्न के अतिरिक्त लग्नेश की स्थिति, लग्नस्थ ग्रह, उनका स्वभाव तथा अन्य भावों से उनके सम्बन्धों का ज्ञान प्राप्त करके ही फलाफल निर्देश करना चाहिए। कुण्डली मे लग्न प्रधान होता है, अतः लग्न एवं लग्नेश की जानकारी का पूर्णतः अध्ययन करना चाहिए।

द्वितीय भाव

कुण्डली का द्वितीय भाव भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस भाव से संचित द्रव्य, पैतृक धन, कुटुम्ब, मित्र, भाषण कला, सुख-भोग, संचित पूँजी, मृत्यु के कारण, मृत्यु का स्थान आदि का ज्ञान होता है। आर्थिक मामलों का सम्बन्ध विशेषतः इसी भाव से है।

इस भाव का अध्ययन करने से पूर्व निम्न तथ्यों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

(१) दूसरा भाव और उसकी राशि।
(२) दूसरे भाव का स्वामी और उसकी स्थिति।
(३) दूसरे भाव में स्थित ग्रह।
(४) दूसरे भाव पर ग्रहों की दृष्टि।
(५) कारक, अकारक और तटस्थ ग्रह।
(६) दूसरे भाव से सम्बन्धित विशेष योग।

दूसरे भाव में जो राशि है उनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए। नीचे द्वादश राशियों में से प्रत्येक राशि के सम्बन्ध में फलाफल विवेचन किया जा रहा है।

मेष – आर्थिक मामलों के सम्बन्ध में यह राशि बड़ी अनिश्चित है। जातक किसी समय अच्छा अन्न प्राप्त कर लेता है, पर पुनः उड़ाते भी देर नहीं लगाता है। विवाह के पश्चात भाग्योदय होता है। जातक का कुछ स्वभाव ही ऐसा होता है कि वह जरूरत से ज्यादा प्रदर्शन करता

है, शत्रुओं के मामले में असावधानी रहने से भी हानि की सम्भावना रहती है।

वृष—जिस जातक के दूसरे भाव में वृष राशि होती है, वे व्यक्ति अर्थ संचय प्रवीण होते हैं, परन्तु हाथ में धन टिकने के आसार कम रहते हैं। वास्तविकताओं को नज़रअन्दाज़ कर देने से भी कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं। व्यापार में काफी उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। ऐसा जातक साझेदारी के कार्यों से लाभ नहीं उठा पाता। जीवन का १८, २२, २४, ३३ और ३५वाँ वर्ष आर्थिक दृष्टि से सफल कहे जा सकते हैं।

मिथुन—जिस जातक के दूसरे भाव में मिथुन राशि हो वह आर्थिक मामलों में कमजोर रहता है। जीवन में कई अवसर ऐसे भी आते हैं, जब किसी स्त्री का इनके जीवन में प्रवेश होता और वह आर्थिक सम्बन्धों को डगमगा देती है। भावना प्रधान होने के कारण जातक अर्थ सम्बन्धी विषय को गम्भीरता से नहीं लेता, फलस्वरूप कई बार हानियाँ उठानी पड़ती हैं। राजकीय नौकरी की अपेक्षा ऐसे जातक को व्यापार, व्यक्तिगत या अर्द्ध शासकीय सेवाएँ भी फलप्रद रहती हैं। बीमा, लघु-उद्योग, यूनीवर्सिटी, विद्युत उद्योग आदि क्षेत्रों में लाभ रहता है।

कर्क—आर्थिक मामलों में ये कंजूस होते हैं। यद्यपि ये जितना परिश्रम करते हैं, उतना उन्हें लाभ नहीं मिलता, फिर भी ये जो कुछ अर्जित करते हैं, उसे भली प्रकार संचित करके रखते हैं। आकस्मिक खर्चों से जातक परेशान रहता है। स्टैण्डर्ड बनाये रखने में भी कई बार इन्हें बाधाओं का सामना करना पड़ता है। २०, २६, २७, ३३, ३४, ३६, ४४, ४५ और ५३, ५४वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं।

सिंह—ऐसे जातकों की बाल्यावस्था बड़े आराम से व्यतीत होती है और आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ता, परन्तु जीवन के मध्यकाल में या तो ये अपना संचित द्रव्य उड़ा देते हैं या अनिश्चित कार्यों-व्यापारों में लगाकर गवाँ बैठते हैं। भावुकता के कारण भी इन्हें हानि उठानी पड़ती हैं। भाग्य इनके साथ होता है। पास में पैसा न होने पर भी जरूरत पड़ने पर उनके हाथ में पैसा आ जाता है और काम निपट जाता है। राजनीतिक कार्यों या राजकीय नौकरों से धन संचय होने के ज्यादा अवसर रहते हैं।

कन्या—द्वितीय भाव में कन्या राशि रखने वाले जातक आर्थिक

ष्टि से कम सम्पन्न होते हैं। ऐसे जातक परिश्रम से धनार्जन करते ह, जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में इन्हें आर्थिक अभाव देखना पड़ता है। स्वभाव र्म होने से तथा तुरन्त निर्णय न लेने की अवस्था में कई बार एसे कार्य र बैठते हैं, जिनसे इन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। व्यापार से ये ातक लाभ उठा सकते हैं। विशेष रूप से रेडीमेड कपड़ों की दुकान ा फैन्सी स्टोर से विशेष लाभ रहता है।

तुला—जिसके दूसरे भाव में तुला राशि हो, वे शान-शौकत में धिक व्यय करने वाले होते हैं, व्यापारिक कार्यों में भी ये सफल हो कते हैं। एसे जातक यदि नौकरी भी करते हों, तो उन्हें चाहिए कि वे यापारिक दृष्टिकोण से भी विचार करें। ये योजनाएं बना सकते हैं, , लम्बे-लम्बे मन्सूबे बाँध सकते हैं, पर उन्हें पूरा करने की सामर्थ्य नमें नहीं होती। भाग्य इनका साथ देता है तथा अनुचित तरीके से ी धनागम सम्भव है, परन्तु इनके हाथों में पैसा टिकता नहीं। मौज-ौक, सुख-सुविधा तथा सजावट पर हैसियत से भी ज्यादा खर्च कर ालते हैं। होटल, ढाबा, रेस्टोरेन्ट या इसी प्रकार के उद्योग से इन्हें ाभ हो सकता हैं।

वृश्चिक—आर्थिक मामलों में ऐसे जातक डावाँडोल रहते हैं। ौकरी की अपेक्षा व्यापार से ज्यादा धन कमा सकते हैं। इनकी प्रवृत्ति ी वणिक प्रधान ही होती है तथा जीवन में इन्हें मित्रों व सम्बन्धियों भी हानि उठानी पड़ती है। व्यर्थ की योजनाओं में धन लगाना इनके लिए हानिकारक ही होता है। लघु उद्योगों में ये लाभ उठा सकते हैं।

धनु—यदि दूसरे भाव में धनु राशि हो तो जातक निश्चय ही धन के मामले में लापरवाह होता है, साझेदारी या किसी के साथ व्यापार करना इनके लिए हानिकारक ही होता है। सहयोगी इसे धोखा ही देगा, लाभ नहीं दे सकता। जीवन में कई बार धोखा खाते हैं। इन्हें चाहिए कि ये किसी भी कागज पर हस्ताक्षर करते समय सोच-समझकर करें। इस राशि वाले यदि नौकरी करते हैं तो उन्हें धन के प्रश्न को लेकर काफी उतार-चढ़ाव देखने पड़ेंगे। २४, २७, २८, ३२, ३३, ३४, ३७, ४२, ४८, ५२, ५४, ५५ और ५८वाँ वर्ष श्रेष्ठ रहता है।

मकर—मकर राशि दूसरे भाव में रखने वाले जातक सौभाग्यशाली होते हैं। ये लम्बे-चौड़े प्लान बनाते हैं और उनमें सफलता भी प्राप्त

है, शत्रुओं के मामले में असावधानी रहने से भी हानि की सम्भावना रहती है।

वृष—जिस जातक के दूसरे भाव में वृष राशि होती है, वे व्यक्ति अर्थ संचय प्रवीण होते हैं, परन्तु हाथ में धन टिकने के आसार कम रहते हैं। वास्तविकताओं को नज़रअन्दाज़ कर देने से भी कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं। व्यापार में काफी उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। ऐसा जातक साझेदारों के कार्यों से लाभ नहीं उठा पाता। जीवन का १८, २२, २४, ३३ और ३५वाँ वर्ष आर्थिक दृष्टि से सफल कहे जा सकते हैं।

मिथुन—जिस जातक के दूसरे भाव में मिथुन राशि हो वह आर्थिक मामलों में कमजोर रहता है। जीवन में कई अवसर ऐसे भी आते हैं जब किसी स्त्री का इनके जीवन में प्रवेश होता और वह आर्थिक सम्बन्धों को डगमगा देती है। भावना प्रधान होने के कारण जातक अर्थ सम्बन्धी विषय को गम्भीरता से नहीं लेता, फलस्वरूप कई बार हानियाँ उठानी पड़ती हैं। राजकीय नौकरी की अपेक्षा ऐसे जातक को व्यापार, व्यक्तिगत या अर्द्ध शासकीय सेवाएँ भी फलप्रद रहती हैं। बीमा, लघु-उद्योग, यूनीवर्सिटी, विद्युत उद्योग आदि क्षेत्रों में लाभ रहता है।

कर्क—आर्थिक मामलों में ये कंजूस होते हैं। यद्यपि ये जितना परिश्रम करते हैं, उतना उन्हें लाभ नहीं मिलता, फिर भी ये जो कुछ अर्जित करते हैं, उसे भली प्रकार संचित करके रखते हैं। आकस्मिक खर्चों से जातक परेशान रहता है। स्टैण्डर्ड बनाये रखने में भी कई बार इन्हें बाधाओं का सामना करना पड़ता है। २०, २६, २७, ३३, ३४, ३६, ४४, ४५ और ५३, ५४वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं।

सिंह—ऐसे जातकों की बाल्यावस्था बड़े आराम से व्यतीत होती हैं और आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ता, परन्तु जीवन के मध्यकाल में या तो ये अपना संचित द्रव्य उड़ा देते हैं या अनिश्चित कार्यों-व्यापारों में लगाकर गवाँ बैठते हैं। भावुकता के कारण भी इन्हें हानि उठानी पड़ती हैं। भाग्य इनके साथ होता है। पास में पैसा न होने पर भी जरूरत पड़ने पर उनके हाथ में पैसा आ जाता है और काम निपट जाता है। राजनीतिक कार्यों या राजकीय नौकरों से धन संचय होने के ज्यादा अवसर रहते हैं।

कन्या—द्वितीय भाव में कन्या राशि रखने वाले जातक आर्थिक

करते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यापार या स्वतन्त्र व्यवसाय इनके लिए विशेष हितकारी होता है। ऐसे जातकों को चाहिए, वे 'प्लान-मेकर' या 'योजना आयोग' अथवा किसी ऐसे विभाग में नौकरी करें, जिसमें कल्पना एवं वास्तविकता का सुखद मिश्रण हो। खान, पत्थर का कार्य आदि से भी ये लाभ उठा सकते हैं।

कुम्भ—यदि द्वितीय भाव में कुम्भ राशि हो तो वे जातक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं। इन जातकों के आय के स्रोत भी एक से अधिक होते हैं। पत्रकारिता, लेखन, प्रकाशन, व्यापार और राजनीतिक कार्यों में भाग लेकर भी ये द्रव्य संचय कर सकते हैं। इन जातकों को भाइयों तथा सम्बन्धियों से विशेष लाभ नहीं मिलता। विश्वास करना इनके लिए हानिकारक सिद्ध होता है। साझेदारी इनके लिए लाभप्रद होती हैं। जीवन के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध आर्थिक दृष्टि से ज्यादा सफल होता है।

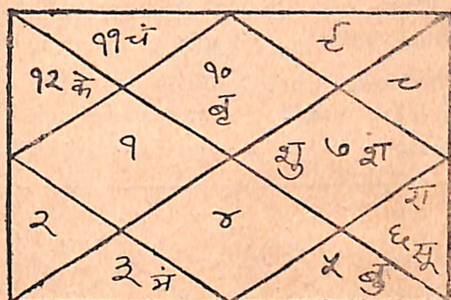
मीन—दूसरे भाव में मीन राशि रखने वाले यदि अपनी भावनाओं तथा विचारों पर नियंत्रण रख सकें, तो निस्सन्देह सफल धनी हो सकते हैं। इस प्रकार का जातक डॉक्टरी, वैद्यक या दवाइयों का विक्रेता बनकर धनी हो सकता है। यदि ये व्यक्ति 'शेयर' खरीदें या लघु उद्योगों में रुपया लगावें, तो भी लाभ उठा सकते हैं। ऐसे जातक धन संग्रह करने में सिद्धहस्त होते हैं और एक से अधिक स्रोतों से अर्थ लाभ करते हैं। खर्च पर ये पूर्ण नियंत्रण रखते हैं, परन्तु धन के पीछे भूत की तरह लगे रहते हैं, इनके जीवन में शान्ति नहीं रहती। तुरंत निर्णय लेने में असफल रहते हैं, अतः कई बार हानि उठानी पड़ती है। २२, २४, २८, ३२, ३३, ३४, ३७, ४२, ४८, ५२, ५४, ५५ और ६०वाँ साल महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

ऊपर राशियों से प्रभावित दूसरे भाव के लिए फलादेश दिया गया है, अब आगे के पृष्ठों में द्वितीयस्थ ग्रहों का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

सूर्य—द्वितीय भाव में यदि सूर्य हो, तो जातक द्रव्य के सम्बन्ध में चिन्तित रहता है और पिता द्वारा अर्जित धन उसे नहीं मिलता है। जीवन के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध अधिक सफल माना जा सकता है। मध्यकाल में उसे रोगों का शिकार होना पड़ता है तथा आपरेशन जैसे

कष्ट भी देखने पड़ते हैं। नौकरी की अपेक्षा ऐसे जातक उद्योग कार्यों में विशेष सफलता प्राप्त करते हैं।

चन्द्र—जिस जातक के दूसरे भाव में चन्द्र हो, वह सुखी-सम्पन्न और वृहद परिवार का स्वामी होता है, स्त्रियों के मामले में वह सौभाग्यशाली होता है और स्त्रियों के सम्पर्क से ही वह द्रव्योपार्जन में सफलता भी प्राप्त करता है। चन्द्र व्यक्ति को सफल पत्रकार अथवा लेखक भी बना देता है और पुस्तक व्यवसाय, प्रकाशन संस्था अथवा लेखन से भी उसका भाग्योदय कर सकता है।



एच. जी. वेल्स (प्रसिद्ध लेखक)

मंगल—दूसरे भाव में पड़कर मंगल जातक को आर्थिक दृष्टि से कमजोर बना देता है। समय पर वह द्रव्य संचय करता है, परन्तु धन उसके पास टिकता नहीं तथा जितनी शीघ्रता से वह धन इकट्ठा करता है, उतनी ही शीघ्रता से वह समाप्त भी हो जाता है। विद्या के क्षेत्र में भी यह कमजोर रहता है तथा विद्या प्राप्ति के बीच में कई प्रकार की बाधाएँ आती रहती हैं। बातचीत करने में पटु, ऐसे जातक सफल सेल्समैन सिद्ध होते हैं।

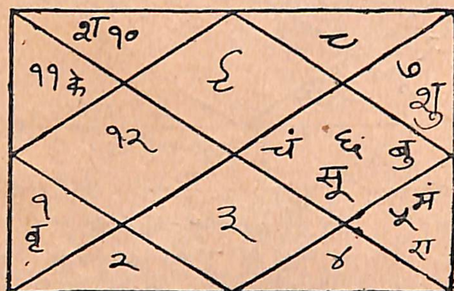
बुध—जिसके दूसरे भाव में बुध पड़ा हो, वह धार्मिक मामलों में कट्टर होते हुए भी अर्थ संचय में प्रवीण होता है। जीवन में उसे धन का अभाव नहीं रहता। ऐसा जातक भाषण देने में पटु होता है और लोगों को अपने पक्ष में करने की कला में प्रवीण होता है। बड़े-बड़े उद्योगों में वह धन लगाने का इच्छुक होता है।

बृहस्पति—जिसके दूसरे भाव में गुरु हो वह धार्मिक नेता होता है।

कवि, लेखक अथवा सफल धर्मोपदेशक भी वह हो सकता है। लेखन कार्य से वह द्रव्योपार्जन करता है। ऐसा व्यक्ति सफल वैज्ञानिक भी होता है तथा उसकी खोज से विज्ञान को काफी बल मिलता है। मित्रों की संख्या अधिक होती है तथा उसने सहायता मिलती है, ससुराल से भी उसे द्रव्य सहायता मिल सकती है, अथवा पढ़ी-लिखी पत्नी प्राप्त हो जो द्रव्योपाजन में सहायक हो।

शुक्र—यदि शुक्र दूसरे भाव में हो तो उसका परिवार विस्तृत होता है, दूसरों से काम निकालने में वह चतुर होता है तथा जीवन में उसे द्रव्य का अभाव नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति डॉक्टर, सफल पत्रकार अथवा व्यवसायी होता है। दृढ़ व्यक्तित्व प्रधान होने के साथ-साथ ऐसा जातक शत्रुओं को अपने वश में करने का प्रधान गुण रखता है।

शनि—दूसरे भाव में शनि का होना शुभ सूचक नहीं है। यदि शनि स्वगृही न हो तो जातक को धनहीन, परेशान और दुखी भी कर देता है।



श्री लालबहादुर शास्त्री

जीवन में धन के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है एवं धन जुटाने के लिए जरूरत से ज्यादा परिश्रम भी करना पड़ता है, परन्तु यदि शनि स्वगृही होकर द्वितीयस्थ हो तो जातक की बाल्यावस्था तो दुःख और अभावों में बीतती है, परन्तु यौवनावस्था और वृद्धावस्था शुभसूचक होती है एवं आर्थिक अभाव नहीं रहते।

राहु—यदि किसी जातक की कुण्डली में दूसरे भाव में राहु हो तो जातक रोगी और चिड़चिड़े स्वभाव का होता है तथा पारिवारिक जीवन में उसे कई व्याघात सहन करने पड़ते हैं। यदि अन्य धन योग न हो तो

आर्थिक दृष्टि से स्थिति डावाँडोल ही रहती है, फिर भी ऐसा जातक बाल्यावस्था में तो द्रव्याभाव से पीड़ित रहता है, परन्तु ज्यों-ज्यों उमर बढ़ती है, उसके पास अर्थ संचय होता रहता है।

केतु – यदि दूसरे भाव में केतु पड़ा हो तो जातक कटुभाषी होता है, समय पड़ने पर धोखा भी दे देता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति दृढ़ निश्चयी होता है और एक बार जो मन में धार लेता है, उसे पूरा ही करके छोड़ता है। अपने पिता की सम्पत्ति उसे प्राप्त नहीं होती, अपने भुजबल से ही वह धन कमाता है एवं संचय करता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों की अपेक्षा यह व्यक्ति आगे चलकर जीवन में धनी होता है। यदि सूर्य उच्च का होकर एकादश भाव में हो, तो जातक लखपति बनता है।

धन किस दिशा से प्राप्त होगा

इसको जानने से पूर्व यह जानना जरूरी है कि कौन-कौन से ग्रह किस-किस दिशा के कारक हैं। नीचे ग्रह और उनकी दशा स्पष्ट की जा रही है।

१	सूर्य	पूर्व दिशा
२	चंद्र	वायव्य दिशा
३	भौम	दक्षिण दिशा
४	बुध	उत्तर दिशा
५	बृहस्पति	ईशान दिशा
६	शुक्र	अग्निकोण
७	शनि	पश्चिम दिशा
८	राहु	नैऋत्य दिशा
९	केतु	नैऋत्य दिशा

इसके साथ ही बारह राशियाँ कौन-कौन सी दिशाओं की कारक हैं, उसे भी स्पस्ट कर लेना चाहिए।

१	मेष	पूर्व दिशा
२	वृष	दक्षिण दिशा
३	मिथुन	पश्चिम दिशा
४	कर्क	उत्तर दिशा
५	सिंह	पूर्व दिशा
६	कन्या	दक्षिण दिशा

७	तुला	पश्चिम दिशा
८	वृश्चिक	उत्तर दिशा
९	धनु	पूर्व दिशा
१०	मकर	दक्षिण दिशा
११	कुम्भ	पश्चिम दिशा
१२	मीन	उत्तर दिशा

धनेश जिस राशि में बैठा हो, उस राशि की दिशा में विशेष अर्थ लाभ एवं भाग्योदय होगा। यदि उस राशि में कोई ग्रह बैठा हो तो उस ग्रह की दशा में ग्रह से सम्बन्धित दिशा में अर्थ लाभ होगा।

किस दशा (समय) में भाग्योदय होगा

सम्पूर्ण जीवन में एक समय ऐसा अवश्य आता है, जो पूरे जीवन का सर्वोच्च समय Cream Period of Life होता है। उस समय जातक जीवनोन्नति के सर्वोच्च शिखर पर होता है। इस प्रकार का समय जीवन में कब आयेगा अथवा किस ग्रह की दशा में आएगा, इसके लिए एक नवीन विधि पाठकों की जानकारी हेतु नीचे दे रहा हूं।

प्रत्येक ग्रह के मूलांश होते हैं। नीचे हर एक ग्रह के मूलांश स्पष्ट किए जा रहे हैं।

सूर्य-७
चन्द्र-३
मंगल-१०
बुध-६
बृहस्पति-९
शुक्र-५
शनि-१
राहु-०
केतु-०

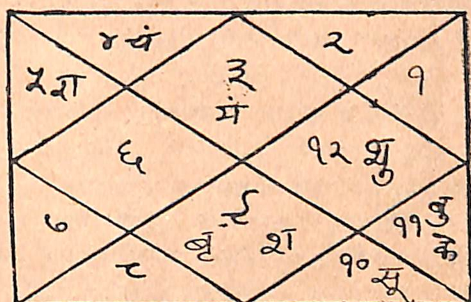
इस विधि का प्रयोग निम्न रूप से होगा।

(१) द्वितीय भाव में जो राशि अंक हों, वे अंक
(२) लग्न भाव में जो राशि अंक हों, वे अंक
(३) चतुर्थ भाव में जो राशि अंक हों, वे अंक
(४) नवम भाव में जो राशि अंक हों, वे अंक

(५) एकादश भाव में जो राशि अंक हों, वे अंक

इन पाँचों प्रकार के अंकों का योग कर लो। यदि इन भावों पर कोई ग्रह हो तो इनके मूलांश भी इस योग में जोड़ लो (यदि कोई ग्रह नहीं हो, तो केवल राशि संख्या ही लो) इस कुल योग में १२ का भाग दो। जो शेष बचे, उसे धनेश स्थित राशि से आगे गिनो, जो राशि आवे, उस राशि के स्वामी की दशा में ही पूर्ण भाग्योदय होगा।

पाठकों की सुविधा के लिए एक उदाहरण दे देना पर्याप्त होगा।



सुश्री सरोजकुमारी

उपरोक्त कुण्डली का सर्वोच्च भाग्योदय समय निकालना है। इसके लिए ऊपर लिखी विधि के अनुसार निर्णय किया जाय तो······

(१) द्वितीय भाव के राशि अंक = ४

(२) लग्न के राशि अंक = ३

(३) चतुर्थ भाव के राशि अंक = ६

(४) नवम भाव के राशि अंक = ११

(५) एकादश भाव के राशि अंक = १

कुल योग = ४ + ३ + ६ + ११ + १ = २५ अंक

अब ग्रहों के मूलांश लिए जायें—

(१) द्वितीय भाव में बैठे चन्द्र के मूलांश = ३

(२) लग्न भाव में बैठे भौम के मूलांश = १०

(३) चतुर्थ भाव में ग्रह नहीं हैं = ०

(४) नवम भाव में बैठे बुध के मूलांश = ६

(५) नवम भाव में बैठे केतु के मूलांश = ०

(६) एकादश भाव में कोई ग्रह नहीं है = ०

कुल योग = ३ + १० + ६ = १९

मूलांश योग = १९

राशि अंक योग = २५

कुल योग = १९ + २५ = ४४

कुल ४४ के अंक में १२ का भाग दिया, तीन बार भाग लगा और ८ शेष रहे।

धनेश (दूसरे भाव का स्वामी) दूसरे भाव में बैठा है, दूसरे भाव से आगे ८ गिने, तो नवम भाव आया, जिसकी राशि कुम्भ है, और स्वामी शनि है।

अतः शनि की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा आने पर पूर्ण भाग्योदय होगा।

अब मैं धन भाव से सम्बन्धित प्रमुख योग दे रहा हूँ।

धन भाव से सम्बन्धित प्रमुख योग

यद्यपि ज्योतिष ग्रन्थों में धन भाव से सम्बन्धित कई योग हैं, परन्तु उनमें से चुनकर मैं कुछ प्रमुख योग पाठकों के लाभार्थ नीचे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

(१) **अकस्मात धन-प्राप्ति योग**—यदि धन भाव का स्वामी शनि ४, ८ या १२वें भाव में हो तथा बुध सप्तम भाव में स्वगृही होकर बैठा हो तो अकस्मात धन-प्राप्ति योग बनता है।

चाहे जातक कितना ही निर्धन हो, बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा आने पर जातक को भारी धन लाभ होगा।

(२) **अकस्मात धन-नाश योग**—यदि धन भाव में कर्क का चन्द्रमा होकर पड़ा हो तथा अष्टम भाव में शनि स्वगृही होकर स्थित हो तो परस्पर महादशा-अन्तर्दशा में जातक दिवालिया बनता है।

(३) **क्रमिक धन-नाश योग**—यदि धन भाव का स्वामी बुध गुरु के साथ हो तथा गुरु अष्टम भाव में हो तो जातक पिता का संचित द्रव्य नष्ट कर डालता है।

(४) **धन-नाश योग**—यदि धन भाव का स्वामी सूर्य लग्न में शनि के साथ हो तो जातक निस्सन्देह मुकद्दमेबाजी में घर का समस्त द्रव्य नष्ट कर डालता है।

(५) **अचल सम्पत्ति-नाश योग**—यदि धनेश बुध के घर का होकर उसके साथ दूसरे भाव में हो मंगल चौथे भाव में हो तो अचल सम्पत्ति नाश योग होता है। इस योग वाला जातक धीरे-धीरे जमीन-जायदाद, मकान, यहाँ तक कि अपने कपड़े भी बेच देता है।

(६) **धन-संग्राहक योग**—यदि धन भाव का स्वामी मंगल एकादश भाव में पड़कर दूसरे घर को देख रहा हो तो जातक धन संग्रह करने वाला होता है तथा अपनी बुध्दि से वह धन को खूब बढ़ा देता है।

(७) **धन-असंग्राहक योग**—धन भाव का स्वामी बृहस्पति स्वगृही होकर धन राशि में हो और शुक्र बारहवें भाव में हो तो धन-असंग्राहक योग बनता है। इस योग द्वारा जातक धन अर्जित करता हुआ भी धन संग्रह नहीं कर पाता।

(८) **धन वृद्धि-योग**—धन भाव का स्वामी गुरु उच्च का होकर नवम भाव में हो, तो धन वृद्धि योग बनता है। इस योग वाला जातक स्वयं धन संग्रह करता है, एवं उसे पैत्रिक सम्पत्ति भी प्राप्त होती है।

(९) **कोष-वृद्धि योग**—धनभाव का स्वामी सूर्य हो और लग्न में उच्च का गुरु हो तो कोष-वृद्धि योग होता है। इस योग वाला व्यक्ति लखपति होता है।

(१०) **लक्ष्मी योग**—लग्नेश बलवान हो और नवम भाव का स्वामी स्वगृही हो, तो लक्ष्मी योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले के पास अटूट सम्पत्ति रहती है।

(११) **धन योग**—लग्न से पाँचवीं राशि शुक्र की हो तथा शुक्र एवं शनि पाँचवें या ग्यारहवें भाव में हो तो धन योग होता है। ऐसा जातक जीवन में खू- धन प्राप्त करता है।

(१२) **श्री योग**—लग्न से पाँचवीं राशि मिथुन या कन्या हो तथा एकादश भाव में चन्द्र मंगल हो तो श्री योग होता है। ऐसा योग जातक को विशेष धनवान बनाता है।

(१३) **कमला योग**—लग्न से पाँचवीं राशि मकर या कुम्भ हो, तथा बुध मंगल ११वें भाव में हों तो कमला योग होता है। ऐसा जातक जीवन में धन से खाली नहीं रहता।

(१४) **वित्त योग**—लग्न से पाँचवीं राशि सिंह हो तथा उसमें सूर्य हो एवं चन्द्र गुरु ११ वें भाव में हों तो वित्तयोग होता है। ऐसा जातक

जीवन में लखपति बनता है।

(१५) **अखंड धन योग**—लग्न से पाँचवीं राशि धनु या मीन हो, तथा एकादश भाव में चन्द्र मंगल हो तो अखंड धन योग बनता है। इस योग को रखने वाला जातक निस्सन्देह लखपति बनता है।

तृतीय भाव

जातक की कुण्डली में तीसरा भाव उसकी आत्मा के रूप में होता है, क्योंकि बिना आत्मा या बल के शरीर मृतवत् है, ठीक उसी प्रकार बिना बली तृतीय भाव के जातक का जीवन निष्प्राण है, इसलिए तृतीय भाव का गहराई के साथ विवेचन करना चाहिए।

तीसरे भाव को पराक्रम स्थान, भ्रातृ स्थान और सहज स्थान भी कहा जाता है तथा तीसरे भाव के स्वामी को पराक्रमेश, भ्रातृेश और सहजेश कहते हैं। इस भाव से मुख्यतः जातक का बल, विक्रम, शौर्य, हिम्मत, दृढ़ता, पुरुषार्थ आदि का विचार किया जाता है। इसके साथ ही इस भाव से लघुभ्राता, बहनें, परिवार, सम्बन्धी, अस्थियाँ, गला, कान, वस्त्र, दास-दासी, फल, मूल, औषधि का भी अध्ययन किया जाता है। इस भाव को देखने के लिए निम्नलिखित तथ्यों का सावधानीपूर्वक अवलोकन करना चाहिए।

१. तीसरे भाव की राशि।
२. तीसरे भाव में बैठे ग्रह।
३. तीसरे भाव पर ग्रहों की दृष्टि।
४. तीसरे भाव का स्वामी।
५. तृतीयेश जहाँ बैठा हो।
६. तृतीयेश पर ग्रहों की दृष्टि।
७. तृतीयेश की दृष्टि।
८. कुण्डली के कारक, अकारक और तटस्थ ग्रह।
९. विशेष योग (तृतीय भाव से सम्बन्धित)

उपर्युक्त तथ्यों का सावधानीपूर्वक निश्चय करना चाहिए। अब

राशिगत तृतीय भाव का विवेचन किया जा रहा है।

मेष—जिसके तृतीय भाव में मेष राशि हो, वह जातक बल-विक्रम में धनी होता है। मांसल भुजाएँ, बलिष्ठ स्कंध और उत्तम साहस वाला होता है। भुज बल से यश लाभ करता है। दूसरों की भलाई करने वाला, कई प्रकार की कलाएँ जानने वाला एवं धन संचय करने वाला होता है।

वृष—यदि तृतीय भाव में वृष राशि हो तो जातक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करता है, परिवार में उसकी प्रशंसा होती है, दान-पुण्य में वह अग्रणी रहता है। ऐसा जातक लेखन-शैली से भी धन प्राप्त करता है। कवि, चित्रकार, कलाकर बनने के साथ-साथ कलाओं में उसकी सहज ही रुचि होती है तथा कलाओं के माध्यम से वह लाभ प्राप्त करता है।

मिथुन—जिसके तृतीय भाव में मिथुन राशि हो, वह भाग्यशाली होता है, जीवन में उसे उत्तम सवारियों को प्राप्त करने का सौभाग्य मिलता है। पारिवारिक जीवन सुखी और प्रसन्न रहता है तथा स्त्री से उसे सहयोग मिलता है। समाज में उसका सम्मान रहता है एवं राज कीय सेवा से वह पुरस्कृत होता है।

कर्क—यदि तीसरे भाव में कर्क राशि हो तो जातक का भाग्योदय व्यापार के द्वारा होता है। जीवन में उसे मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलता है। उसका स्वभाव सरल एवं सौम्य होता है तथा लोगों से काम निकालने में वह चतुर होता है। भूमि-सम्बन्धी कार्यों से भी इसे लाभ होता है। ईश्वर में श्रद्धा रखते हुए भी सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने में विश्वास रखता है, नवीन विचारों का वह हामी होता है। पारिवारिक जीवन सुखी एवं प्रसन्न रहता है।

सिंह—जिसके तृतीय स्थान में सिंह राशि हो, वह अद्भुत साहस एवं जीवट वाला आदमी होता है। बाल्यावस्था में शिक्षा के लिए जगह-जगह भटकना पड़ता है, परन्तु उत्तम शिक्षा प्राप्त कर लेता है। स्वस्थ शरीर एवं महत्त्वपूर्ण चिंतन शक्ति होती है। ऐसा जातक कला-प्रेमी होता है। काव्य-संगीत आदि में उसकी विशेष रुचि होती है। लेखन या प्रकाशन कार्य से भी ऐसा जातक अर्थ संचय करता है। परिवारिक जीवन सुखी होता है।

कन्या—जिसके तीसरे भाव में कन्या राशि हो, वह शास्त्रों में अनुराग रखता है एवं मित्रों में भी प्रशंसा प्राप्त करता है। ऐसे जातक को

सम्बन्धियों से बिलकुल सहायता नहीं मिलती, बल्कि दूसरे सम्पर्क में आ वाले लोग और मित्रगण ही उसकी सहायता करते हैं। उसे क्रोध शी आ जाता है, परन्तु वह क्रोध उचित अवस्था में ही आता है। जित जल्दी क्रोध चढ़ता है, उतनी ही शीघ्रता से वह उतर भी जाता है। ऐस जातक हीन भावना का भी शिकार होता है।

तुला—यदि तीसरे भाव में तुला राशि हो तो जातक की संग अपने से निम्न पदों के लोगों से होती है। उसका मन अस्थिर होता है और वह किसी भी प्रश्न पर तुरन्त निर्णय नहीं ले पाता। यह बहुत अधिक बोलता है और बोलते समय उसे देश काल पात्र का भी ध्या नहीं रहता। अनुचित कार्य करने के बाद पछताना भी उसका स्वभाव है। ऐसे जातक का पारिवारिक जीवन मतभेदों के बीच में से गुजरता है।

वृश्चिक—जिसके तृतीय भाव में वृश्चिक राशि हो तो उसकी संगति निम्न स्तर के लोगों से होती है तथा वह व्यसनों का आदी होत है। ऐसे जातक को क्रोध भी बहुत आता है तथा क्रोध में उचितानुचित का भी ध्यान नहीं रहता। भाइयों से उसे कुछ भी लाभ नहीं होता। परिवारिक जीवन मध्य स्तर का होता है।

धनु—जो जातक तीसरे भाव में धनु राशि रखता हो, वह शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, बलवान एवं सुन्दर होता है। चेहरा सुन्दर एवं उन्नत ललाट होता है। ऐसे जातक अधिकतर नौकरी करते हैं तथा इसी में भाग्योदय होता है। व्यापार इन्हें हितकर नहीं होता और व्यापार करने पर हानि एवं धोखा भी सहन करना पड़ता है। ऐसा जातक वीर, पुलिस या मिलिटरी में उच्च पद प्राप्त करता है।

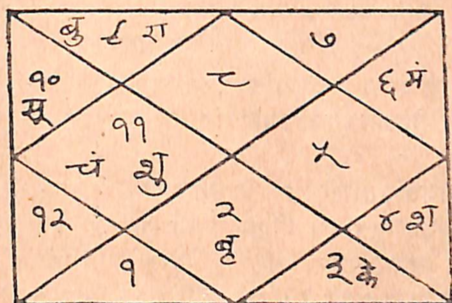
मकर—जिस जातक की कुण्डली में तीसरे भाव में मकर राशि हो, उस जातक की शारीरिक गठन बहुत सुन्दर होती है। सुन्दर श्याम केश, उन्नत ललाट, गौर वर्ण एवं प्रभावपूर्ण चेहरा होता है। संतान की दृष्टि से ऐसा जातक सौभाग्यशाली होता है। मित्रों में ख्याति तथा धार्मिक कार्यों में वह श्रद्धा रखता है।

कुम्भ—जिसके तृतीय भाव में कुम्भ राशि हो, वह गम्भीर स्वभाव का होता है, भाइयों से उसे स्नेह मिलता है, परन्तु सहायता प्राप्त नहीं होती है। समाज में उसका आदर होता है। नये विचारों का स्वागत करने वाला एवं गायन कलादि में रुचि रखने वाला होता है।

मीन—जिसके तीसरे भाव में मीन राशि हो, वह धनवान होता है। सन्तान से उसे विशेष स्नेह होता है तथा वृद्धावस्था में उसे पुत्रों से पूर्ण सहायता प्राप्त होती है। धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, अतिथियों का आदर करने वाला तथा सभी को प्रसन्न रखने वाला होता है।

राशि विवेचन करने के बाद तीसरे भाव में स्थित ग्रहों का संक्षिप्त अध्ययन भी आवश्यक है। पाठकों की जानकारी हेतु तीसरे भाव में स्थित प्रत्येक ग्रह का फल विवेचन कर रहा हूँ।

सूर्य—जिसके तीसरे भाव में सूर्य होता है, उसके हौसले बहुत बड़े-बड़े होते हैं, झुकना तो वह जानता ही नहीं। शत्रुओं से खिलवाड़ करना और खतरों से खेलना इनके लिए सहज होता है। दिमागी कार्यों में

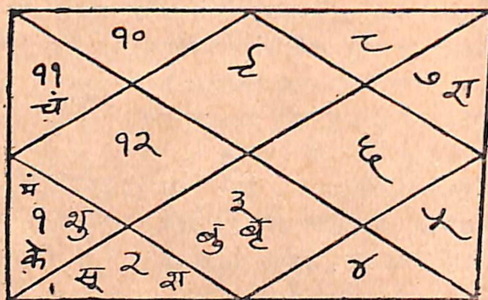


श्री नासिर (अरब राष्ट्राध्यक्ष)

इनका मुकाबला कम लोग ही करते हैं। राजनीति में ऐसा व्यक्ति भाग लेता ही है और राजनीति में लोकप्रिय एवं सफल भी होता है। भाइयों को ऐसे जातक से कोई लाभ नहीं होता और न भाई-बान्धवों का इसे पूर्ण सहयोग ही मिलता है। धनवान, सुखी एवं सानन्द जीवन व्यतीत करने वाला यह जातक धैर्यवान होता है।

चन्द्र—जिस जातक की जन्म कुण्डली में सहज भाव में चन्द्र हो, वह शीघ्र सोचने वाला व्यक्ति होता है। तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता इसमें अद्भुतरूपेण होती है। कठिन संघर्षों में भी बढ़ते रहना एवं बाधाओं पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करना इनका स्वभाव होता है। ऐसा जातक अल्पभाषी होता है। कम से कम बोल कर अधिक से अधिक कार्य कर दिखाना इसका स्वभाव होता है। जीवन के मध्यकाल में ये अपना

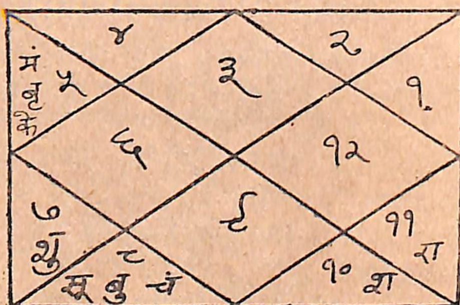
रास्ता बदल देते हैं। जिनके तीसरे भाव में चन्द्र होता है, वह यात्रा का शौकीन होता है तथा जीवन में कई यात्राएँ करता है। शत्रुओं



श्री विनायक दामोदर सावरकर

मान-मर्दन करने वाला ऐसा जातक परम साहसी होता है। पारिवारि जीवन अल्प होता है तथा परिवार से इसका मनमुटाव चलता ही रहता है।

मंगल—जिसके तीसरे भाव में मंगल होता है, वह सीमित साधनों के बीच भी अडिग रहते हैं। जीवन में पग-पग पर इन्हें बाधाओं एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु ये संकटों के बीच में से भी अपनी राह निकाल देते हैं। ऐसे व्यक्ति दृढ़ निश्चयी होते हैं, लेकिन

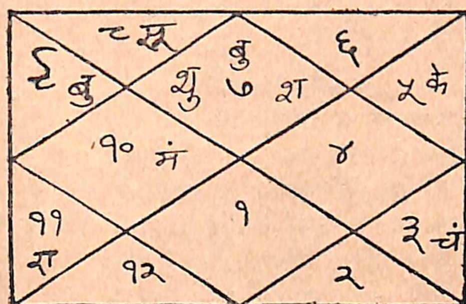


श्री ओमप्रकाश शर्मा (संचालक अनुपम पॉकेट बुक्स)

कोई भी निर्णय लेने से पूर्व उसके पक्ष-विपक्ष के बारे में पूर्णतः सोच लेते हैं, पर जब एक बार कोई निर्णय ले लेते हैं तो उस पर अडिग रहते

। यात्राओं का यह शौकीन होता है। यद्यपि राज्य पक्ष से इसे विशेष लाभ नहीं होता, तथापि समाज में अपने प्रयत्नों से अपना सम्मान एवं आदर कायम करते हैं। पारिवारिक जीवन सुखी होता है। ननिहाल सामान्य होता है। खतरों से खेलना, नये प्रयोग करना, नई युक्तियों एवं नये विचारों को ललक कर अपनाना, इनका स्वभाव होता है। राजनीति में पटु ऐसा जातक अपने जीवन का स्वयं ही निर्माता होता है।

बुध—जिसकी कुण्डली में तीसरे भाव में बुध पड़ा हो वह निश्चित रूप से दूसरों के लिए हितकारी होता है। मेधा शक्ति विलक्षण होती

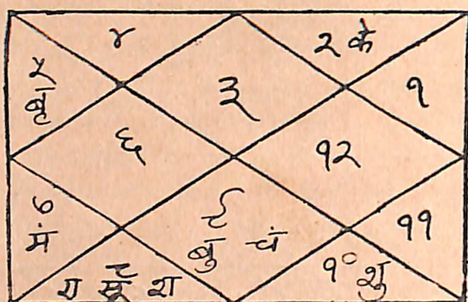


सम्राट अकबर

है और परिस्थिति को भाँपने की उसमें अपूर्व क्षमता होती है। पढ़ने-लिखने का वह शौकीन होता है और ज्ञान वृद्धि के लिए वह सदैव उत्सुक रहता है। ऐसा जातक साहसी होता है। उसका पारिवारिक जीवन सुखी एवं सानन्द होता है।

बृहस्पति—जिसके तीसरे भाव में गुरु होता है, वह शुभ लक्षणों से सम्पन्न होता है। जीवन में इसे कई बार उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं तथा संघर्षों का सामना करते रहना पड़ता है, परन्तु यह मजबूत होता है। साहसी होने के साथ-साथ यह व्यक्ति परिस्थिति की गम्भीरता को तुरंत भांप लेता है और तदनुसार कार्य कर बाजी अपने हाथ में ले लेता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह जातक सफल होता है। एक से अधिक क्षेत्र में यह निष्णात् होता है तथा मशीनरी कार्यों में शौक रखने वाला होता है। यद्यपि इसे शत्रुओं से कई बार आघात खाने पड़ते हैं, परन्तु हिम्मत इसमें अटूट होती है। आर्थिक दृष्टि से ऐसे जातक सम्पन्न होते हैं और पारि-

वारिक जीवन भी सुखद कहा जा सकता है।



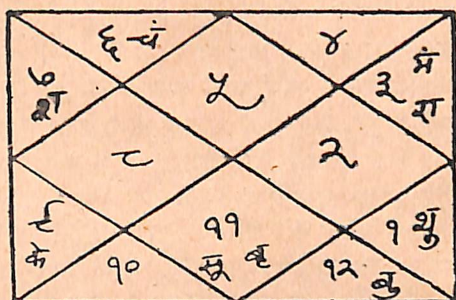
श्री नन्दकिशोर

शुक्र—जिस जातक के तीसरे भाव में शुक्र होता है, वह भाग्यहीन होता है। यद्यपि उसके साथ द्रव्य रहता है, परन्तु वह उसका पूर्ण उप-भोग नहीं कर सकता। मस्तिष्क शक्ति प्रबल होती है एवं व्यूह रचना, शत्रु भेदन तथा संकट के क्षणों में अपूर्व साहस दिखाता है। ऐसा जातक संगीत, काव्य, चित्रकलादि में प्रवीण होता है तथा उसे इन बातों का शौक होता है। यदि शुक्र स्वगृही या उच्च का होकर स्थित हो तो जातक प्रसिद्ध लेखक या चित्रकार बनता है। आर्थिक दृष्टि से ऐसा जातक सफल नहीं कहा जा सकता। आर्थिक चिन्ता से वह परेशान ही रहता है एवं हर समय कठिन परिश्रम में जुटा रहता है। जीवन के मध्यकाल में उसे कई बार यात्राएँ भी करनी पड़ती हैं। पारिवारिक जीवन साधारण रहता है तथा सन्तान की ओर से भी कोई विशेष लाभ नहीं रहता।

शनि—जिसके तीसरे भाव में शनि होता है उसके या तो छोटे भाई होते ही नहीं और अगर अन्य योगों के कारण छोटे भाई हों भी तो उसे विशेष लाभ नहीं होता। साहस, वीरता, कर्मण्यता में इसका मुकाबला कम ही लोग कर पाते हैं।

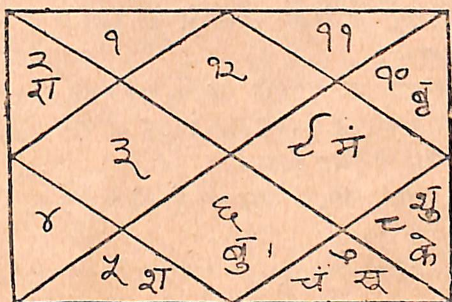
ऐसा जातक क्रूर और क्रोधी होता है। भयंकर से भयंकर कार्य करने में भी यह नहीं हिचकिचाता। बड़े भाइयों की तरफ से इसे परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। ऐसा जातक जीवन भर संघर्षों से घिरा रहता है एवं कठिन परिश्रम से भाग्य को अपने अनुकूल बनाता है। शत्रुओं से खिल-

वाड़ करने में इसे विशेष आनन्द आता है। नियमों का यह बड़ा पाबन्द होता है तथा स्वयं के निश्चित आदर्श एवं लक्ष्य रखता है तथा उन आदर्शों का दृढ़ता से पालन करता है। इसके मित्र भी वही होते हैं जो इसके समान प्रकृति रखते हैं। स्थानीय स्वशासन का यह मुखिया होता है तथा अपने कठोर नियंत्रण से सम्बन्धित लोगों को सन्मार्ग पर चलने के लिये विवश कर देता है।



श्री शिवाजी

राहु—तीसरे भाव में राहु हो तो वह अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति होता है। पराक्रम एवं बल में उसकी समानता कम ही लोग कर पाते हैं। जातक की जान-पहचान भी विस्तृत क्षेत्र में होती है एवं अपने प्रभाव से वह



आइजन हॉवर

लोगों को अपने पक्ष में करने की युक्ति जानता है। सुन्दर दृढ़ शरीर, मांसल भुजाएँ, उन्नत वक्षस्थल एवं सामर्थ्ययुक्त व्यक्ति होता है। यह

जातक प्रारम्भ में संकट देखता है, पर शीघ्र ही इसे मन लायक पद प्राप्त हो जाता है एवं उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है। ऐसा जातक पुलिस या मिलिटरी में विशेष सफल होता है। इसके छोटे भाई नहीं होते, अगर होते भी हैं तो जातक को उनसे नहीं के बराबर लाभ प्राप्त होता है। इसके अपने स्वयं के मौलिक विचार होते हैं, पर कभी-कभी हठधर्मी के कारण इसे परेशानियाँ भी देखनी पड़ती है।

केतु—जिस कुण्डली के तृतीय भाव में केतु हो, वह शारीरिक शक्ति की दृष्टि से अत्यन्त सुदृढ़ होता है एवं नित्य नवीन व्यूह रचना करने वाला तथा योजनाबद्ध रूप से कार्य करने वाला होता है। शान्त होकर ऐसा जातक नहीं बैठता, प्रत्येक से झगड़ा मोल लेना इसके लिए बायें हाथ का खेल होता है। शत्रुओं को परास्त करने में यह विशेष सफल होता है। शारीरिक एवं मानसिक किसी भी रूप में यह शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होता है। आर्थिक दृष्टि से ऐसा जातक सम्पन्न होता है तथा द्रव्य की उसे विशेष चिन्ता नहीं करनी पड़ती। यद्यपि इसे पैतृक धन प्राप्त नहीं होता, परन्तु भुजबल से धन उपार्जित कर वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा जमा लेता है। पारिवारिक जीवन विशेष सुखी नहीं कहा जा सकता।

तृतीय भाव से सम्बन्धित विशेष योग

(१) तीसरा, नवाँ, ग्यारहवाँ तथा सातवाँ ये चार भाव भ्रातृकारक हैं। अतः इन भावों के स्वामियों की दशा में व्यक्ति को भ्रातृ लाभ होता है।

(२) तीसरे स्थान का स्वामी, उसमें स्थित ग्रह और तीसरे भाव को देखने वाला ग्रह। इनमें से जो ग्रह बलवान होता है, उसकी दशा में भाई से लाभ होता है।

(३) बलहीन मंगल तीसरे भाव में हो तो जातक का भाई दीर्घायु प्राप्त करता है।

(४) भावपति निर्बल, पापग्रह या अकारक हो तो भाइयों का नाश होता है।

(५) तृतीयेश और मंगल अष्टम स्थान में हों तो जातक के सामने उसके सहोदर की मृत्यु होती है।

(६) भौम हमेशा भ्रातृकारक होता है, अतः उसकी स्थिति से भाइयों

का विचार करना चाहिए।

(७) राहु या केतु से तीसरा भाव भरा हो तो जातक के बड़े भाई की मृत्यु होती है।

(८) बलवान द्वितीयेश अष्टम हो, पापयुक्त भ्रातृकारक ग्रह तृतीय एवं चतुर्थ भाव के कारक से भी युक्त हो तो उसको सौतेली माता से उत्पन्न भाई हो।

(९) तृतीय भाव पर पाप ग्रह की दृष्टि हो और शुभकारक योग न हो तो जातक के भाई अल्पायु होते हैं।

(१०) सूर्य पाप ग्रह से दृष्ट तृतीय में हो तो जातक के ज्येष्ठ भ्राता का विनाश हो।

(११) मंगल पाप ग्रह से दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हो तो जातक का एक भी भाई जीवित न रहे।

(१२) तृतीय भाव से यदि त्रिकोण या केन्द्र में पापग्रह हों तो भाई का नाश समझना चाहिए।

(१३) तृतीय भाव से यदि त्रिकोण या केन्द्र में शुभ ग्रह हो तो भाई की वृद्धि हो।

(१४) चन्द्र ६, ८ या १२ वें भाव में तीसरे भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु बाल्यावस्था में ही हो जाती है।

(१५) चतुर्थेश और तृतीयेश दोनों चौथे भाव में हों तो जातक को भाइयों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

(१६) तीसरे शनि बैठा हो तो भाई का नाश करे, परन्तु राहु वृद्धि करने वाला होता है।

(१७) तृतीय भाव का स्वामी पाप ग्रह से युक्त सप्तम भाव में हो तो जातक के लघु भ्राता नहीं होते।

(१८) लग्न के दूसरे और तीसरे भाव में कुल जितने ग्रह होते हैं, उतने ही भाई होते हैं।

(१९) शुभग्रह तीसरे भाव में भ्रातृ सुखकारक तथा पापग्रह दुःखकारक होते हैं।

(२०) तृतीयेश और भौम स्त्री ग्रह की राशि में हों तो जातक के बहन होती है, यही दोनों ग्रह भाई-बहन को सुख देते हैं।

जातक प्रारम्भ में संकट देखता है, पर शीघ्र ही इसे मन लायक प
प्राप्त हो जाता है एवं उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है। ऐसा जात
पुलिस या मिलिटरी में विशेष सफल होता है। इसके छोटे भाई नह
होते, अगर होते भी हैं तो जातक को उनसे नहीं के बराबर लाभ प्राप्त
होता है। इसके अपने स्वयं के मौलिक विचार होते हैं, पर कभी-कभी
हठधर्मी के कारण इसे परेशानियाँ भी देखनी पड़ती है।

केतु—जिस कुण्डली के तृतीय भाव में केतु हो, वह शारीरिक शक्ति की दृष्टि से अत्यन्त सुदृढ़ होता है एवं नित्य नवीन व्यूह रचना करने वाला तथा योजनाबद्ध रूप से कार्य करने वाला होता है। शान्त होकर ऐसा जातक नहीं बैठता, प्रत्येक से झगड़ा मोल लेना इसके लिए बायें हाथ का खेल होता है। शत्रुओं को परास्त करने में यह विशेष सफल होता है। शारीरिक एवं मानसिक किसी भी रूप में यह शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होता है। आर्थिक दृष्टि से ऐसा जातक सम्पन्न होता है तथा द्रव्य की उसे विशेष चिन्ता नहीं करनी पड़ती। यद्यपि इसे पैतृक धन प्राप्त नहीं होता, परन्तु भुजबल से धन उपार्जित कर वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा जमा लेता है। पारिवारिक जीवन विशेष सुखी नहीं कहा जा सकता।

तृतीय भाव से सम्बन्धित विशेष योग

(१) तीसरा, नवाँ, ग्यारहवाँ तथा सातवाँ ये चार भाव भ्रातृकारक हैं। अतः इन भावों के स्वामियों की दशा में व्यक्ति को भ्रातृ लाभ होता है।

(२) तीसरे स्थान का स्वामी, उसमें स्थित ग्रह और तीसरे भाव को देखने वाला ग्रह। इनमें से जो ग्रह बलवान होता है, उसकी दशा में भाई से लाभ होता है।

(३) बलहीन मंगल तीसरे भाव में हो तो जातक का भाई दीर्घायु प्राप्त करता है।

(४) भावपति निर्बल, पापग्रह या अकारक हो तो भाइयों का नाश होता है।

(५) तृतीयेश और मंगल अष्टम स्थान में हों तो जातक के सामने उसके सहोदर की मृत्यु होती है।

(६) भौम हमेशा भ्रातृकारक होता है, अतः उसकी स्थिति से भाइयों

का विचार करना चाहिए।

(७) राहु या केतु से तीसरा भाव भरा हो तो जातक के बड़े भाई की मृत्यु होती है।

(८) बलवान द्वितीयेश अष्टम हो, पापयुक्त भ्रातृकारक ग्रह तृतीय एवं चतुर्थ भाव के कारक से भी युक्त हो तो उसको सौतेली माता से उत्पन्न भाई हो।

(९) तृतीय भाव पर पाप ग्रह की दृष्टि हो और शुभकारक योग न हो तो जातक के भाई अल्पायु होते हैं।

(१०) सूर्य पाप ग्रह से दृष्ट तृतीय में हो तो जातक के ज्येष्ठ भ्राता का विनाश हो।

(११) मंगल पाप ग्रह से दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हो तो जातक का एक भी भाई जीवित न रहे।

(१२) तृतीय भाव से यदि त्रिकोण या केन्द्र में पापग्रह हों तो भाई का नाश समझना चाहिए।

(१३) तृतीय भाव से यदि त्रिकोण या केन्द्र में शुभ ग्रह हो तो भाई की वृद्धि हो।

(१४) चन्द्र ६, ८ या १२ वें भाव में तीसरे भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु बाल्यावस्था में ही हो जाती है।

(१५) चतुर्थेश और तृतीयेश दोनों चौथे भाव में हों तो जातक को भाइयों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

(१६) तीसरे शनि बैठा हो तो भाई का नाश करे, परन्तु राहु वृद्धि करने वाला होता है।

(१७) तृतीय भाव का स्वामी पाप ग्रह से युक्त सप्तम भाव में हो तो जातक के लघु भ्राता नहीं होते।

(१८) लग्न के दूसरे और तीसरे भाव में कुल जितने ग्रह होते हैं, उतने ही भाई होते हैं।

(१९) शुभग्रह तीसरे भाव में भ्रातृ सुखकारक तथा पापग्रह दुःखकारक होते हैं।

(२०) तृतीयेश और भौम स्त्री ग्रह की राशि में हों तो जातक के बहन होती है, यही दोनों ग्रह भाई-बहन को सुख देते हैं।

(२१) यदि तीसरे भाव में चन्द्र, शुक्र हो तो जातक को बहन से ला
हो ।

(२२) भ्रातृ कारक, सहज का स्वामी, तीसरे भाव को देखने वा
और तीसरे भाव में बैठे ग्रह, ये चारों अपनी दशा-अन्तर्दशा
शुभाशुभ फल देते हैं ।

(२३) तृतीय भाव से सप्तम राशि (अर्थात् नवम् भाव से) भाई क
स्त्री का फल समझना चाहिए ।

(२४) लग्नेश, भौम और तृतीयेश से भाई के अनिष्ट और शुभ फल क
विचार करना चाहिए ।

(२५) लग्नेश और तृतीयेश यदि एकत्र हों तो भाइयों में विशेष स्नेह
रहता है । इसके विपरीत यदि लग्नेश लग्न में तथा तृतीये
तृतीय भाव में हो तो भाइयों में विरोध रहता है ।

(२६) कारक, सहजेश, सहजदर्शी, एवं सहजस्थ ग्रहों का योग करने पर
जितना नवांश हो, उतने ही जातक के भाई होते हैं ।

भ्रातृ अरिष्ट

(२७) यदि लग्नेश और तृतीयेश निर्बल तथा परस्पर शत्रु ग्रह हों
अथवा तृतीय भाव में स्थित और तीसरे भाव का कारक दुष्ट
स्थान में निर्बल हो, तो भाइयों में परस्पर कलह रहती है ।

(२८) तीसरे स्थान में शुक्र हो तथा उसे गुरु देखता हो तो जातक
भाइयों का पालन-पोषण करता है ।

(२९) तृतीयस्थ बुध को सूर्य देखता हो तो भाई अशक्त होता है ।

(३०) भ्रातृ भावस्थ, भ्रातृ भावेश और भ्रातृ कारक ये यदि नीच, शत्रु
राशि या ६, ८, १२वें भाव में हों तो उनकी दशा-अन्तर्दशा में
भाइयों का नाश, विग्रह एवं धन बल का नाश समझना चाहिए ।

पराक्रम विचार

(३१) तृतीय भाव का स्वामी उच्च स्थान में होकर अष्टम में हो तथा
पाप ग्रह के साथ हो तो ज़ातक युद्धोन्मादी होता है ।

(३२) भ्रातृ कारक बलहीन हो और तृतीयेश शुभग्रह से युक्त एवं दृष्ट
हो तो जातक मिलिटरी में उच्च पद सुशोभित करता है ।

(३३) तृतीयेश सूर्य के साथ हो तो वीर हो ।

(३४) तृतीयेश चन्द्र के साथ हो तो धैर्यवान, एवं गुणी हो ।

(३५) तृतीयेश भौम के साथ हो तो दुष्ट, जड़ और क्रोधी हो ।

(३६) तृतीयेश बुध के साथ हो तो सात्विक बुद्धि वाला हो ।

(३७) तीसरे भाव का स्वामी गुरु के साथ हो तो धीर, गुणयुक्त एवं पूर्ण शिक्षा प्राप्त हो ।

(३८) तृतीयेश शुक्र के साथ हो तो कामी एवं भोगी हो ।

(३९) तृतीयेश शनि से युक्त हो तो मूर्ख होता है ।

(४०) तृतीयेश राहु से युक्त हो तो डरपोक होता है ।

(४१) तीसरे भाव का स्वामी केतु के साथ हो तो जातक हृदय रोग से पीड़ित होता है ।

(४२) लग्न में गुरु, तृतीयेश से युक्त हो तो जातक पशु का शिकार होता है अथवा पशु से चोट खाता है ।

(४३) जलचर लग्न हो तथा लग्न में गुरु, तीसरे भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक की मृत्यु जल में डूब कर होती है ।

(४४) मंगल से युक्त ग्रह बली हो तो जातक पराक्रमी होता है ।

(४५) मंगल, तृतीयेश और सहज राशिस्थ तीनों ग्रह बलवान हों तो जातक स्थल सेनाधिकारी होता है ।

इनके अतिरिक्त कुछ विशेष योग भी हैं, जो तीसरे भाव से सम्बन्धित हैं। पाठकों की जानकारी हेतु वे आगे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

विशेष योग

(१) **बन्धु पूज्य योग**—चौथे भाव या चौथे भाव के स्वामी को गुरु देखता हो तो यह योग होता है । यह योग होने से जातक अपने कुटुम्ब एवं भाइयों में आदर प्राप्त करता है ।

(२) **रवि योग**—दशम् भाव में सूर्य हो और दशम भाव का स्वामी शनि के साथ तीसरे भाव में हो तो रवियोग होता है । जिस जातक की कुण्डली में ऐसा योग होता है, वह नौकरी में उच्च पद प्राप्त करता है और सफल वैज्ञानिक होता है । जीवन के १५वें साल के बाद वह प्रसिद्धि प्राप्त करता है ।

(३) **चन्द्र योग**—समस्त ग्रह यदि लग्न ३, ५, ७, ९ और ११वें भाव में हों तो चन्द्र योग होता है। इस प्रकार के योग वाला व्यक्ति महान भूमिपति होता है, नौकरों पर उसकी आज्ञा चलती है और आर्थिक

दृष्टि से अटूट सम्पत्ति का मालिक होता है।

(४) भ्रातृ मूल धन प्राप्ति योग -- लग्नेश और द्वितीयेश यदि ती भाव में हों तो उपर्युक्त योग बनता है। इस प्रकार का योग र वाला जातक भाइयों से पूर्ण सहायता प्राप्त करता तथा उसके जी को ऊँचा उठाने में भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलता है।

(५) भ्रातृवर्धन योग—तृतीयेश या मंगल या तीसरा भाव का ग्रहों से युक्त हो या दृष्ट हों तो उपर्युक्त योग बनता है। जिस कुण्ड में यह योग होता है, उसे भाइयों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा भ द्वारा कमाया हुआ धन वह भोगता है।

(६) सोदरनाशा योग—तृतीयेश और मंगल आदि आठवें भाव हों तो ऐसा योग बनता है। यह योग रखने वाला व्यक्ति भाइयों लाभ नहीं उठाता और उसकी आँखों के सामने समस्त भाइयों का क्षय जाता है।

(७) इक भगनी योग — बुध, मंगल और तृतीयेश तीनों तीसरे में हों तो यह योग बनता है। जिस कुण्डली में यह योग होता है उ एक ही बहन होती है।

(८) द्वादश सहोदर योग—यदि तृतीयेश केन्द्र में हो तथा म एवं गुरु त्रिकोण में बैठकर इनमें से कोई एक तृतीयेश को देखता हो उपर्युक्त योग होता है, जिस जातक की कुण्डली में यह योग होता उसके कुल बारह भाई-बहिन होते हैं।

(९) सप्त संख्य सहोदर योग -- द्वादशेश और भौम साथ में बैठे तथा चन्द्र गुरु तृतीय भाव में हों एवं शुक्र द्वारा दृष्ट हों तो उपर्यु योग बनता है। जिस जातक की कुण्डली में यह योग होता है, उसे स भाइयों का सहयोग प्राप्त होता है।

(१०) पराक्रम योग -- तृतीयेश कारक ग्रह के साथ हो तथा उच्च राशि या स्वराशि में हो तो पराक्रम योग बनता है। इस योग रखने वाला जातक सैनिक होता है तथा युद्ध में पूर्ण विजय दिखाकर लाभ करता है।

(११) युद्ध प्रवीण योग—मंगल, कुण्डली एवं नवमांश दोनों स्वराशि या उच्च राशि में स्थित हो तो उपर्युक्त योग बनता है। ऐ जातक युद्ध सम्बन्धी कार्यों मे प्रवीण अथवा युद्ध सम्बन्धी कार्यों

स्कार होता है।

(१२) **संहारक योग**—तीसरे भाव में मंगल, राहु या शनि बलवान होकर बैठे हों तो चाहे कुण्डली में अन्य अनिष्टकारक योग भी हों, तब भी जातक सफलता प्राप्त करता है और वे अनिष्टकारक योग नष्ट हो जाते हैं।

तीसरे भाव से सम्बन्धित कुछ प्रमुख योग ऊपर दिये गये हैं। पाठकों को चाहिए कि वे कुण्डली का अध्ययन करते समय अन्य प्रमुख योगों को ध्यान में रखें और तत्पश्चात ही फलाफल निर्णय करें। अन्य योगों के लिए देखिए लेखक की ही अन्य पुस्तक 'ज्योतिष-योग'।

चतुर्थ भाव

चौथा भाव कुण्डली के बारह भावों में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि जीवन का आनन्द, सुख-शान्ति, मस्तिष्क-सुख आदि का आधार यही भाव है। फलस्वरूप ज्योतिष के विद्यार्थियों को चाहिए कि इस भाव का सूक्ष्मतापूर्वक निरीक्षण करें और सम्बन्धित ग्रह तथा योगों का अध्ययन करें।

चतुर्थ भाव से मुख्यतः निम्न तथ्यों का अध्ययन किया जाता है।

(१) माता, उसका सौभाग्य, दुर्भाग्य एवं सुख-दुःख आदि।

(२) जातक की अचल सम्पत्ति।

(३) शिक्षा (निर्णायिक ज्ञान, कलाएँ, व्यवहार)

(४) वाहन-सुख

(५) जातक का घर

(६) मानसिक शान्ति, अशान्ति एवं इच्छाशक्ति।

(७) द्रव्य सम्बन्धी बाधाएँ, आदि।

(८) सुगन्ध, गौ, बन्धु, मनोगुण

(९) भूमि सुख आदि-आदि।

कुण्डली के ग्रह योगों का सम्बन्ध सावधानीपूर्वक करना आवश्यक है। उदाहरणार्थ भाव से ही ज्ञान एवं वाहन दोनों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है, परन्तु व्यवहारतः देखा जाता है कि एक उच्चशिक्षित

व्यक्ति वाहन सुख से वञ्चित रहता है. जबकि एक धनी पिता का अन पढ़ पुत्र पूर्ण वाहन सुख भोग करता है। इस प्रकार एक ही भाव, ए समान ग्रह होते हुए भी दोनों बातों में बहुत अन्तर हो जाता है। अत प्रत्येक बात का अध्ययन चतुर्थ भाव में सूक्ष्मता एवं सावधानीपूर्वक ही करना चाहिए।

चतुर्थ भाव में मुख्यतः निम्न तथ्यों को दृष्टि में रखना चाहिए।

(१) चतुर्थ भाव एवं उसकी राशि।
(२) चतुर्थ भाव का स्वामी, उसकी प्रकृति।
(३) चतुर्थ भावेश की स्थिति।
(४) चौथे भाव में स्थित ग्रह।
(५) चौथे भाव पर ग्रहों की दृष्टि।
(६) चतुर्थेश का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध।
(७) चतुर्थेश पर अन्य ग्रहों की दृष्टि।
(८) कुण्डली में कारक, अकारक एवं तटस्थ ग्रह।
(९) चौथे भाव से सम्बन्धित विशेष योग।

चतुर्थ भाव का विवेचन करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि चौथे भाव में कौन सी राशि है तथा उसका फलाफल क्या है।

राशि के अनुसार चतुर्थ भाव विवेचन

मेष—चतुर्थ भाव में यदि मेष राशि हो तो जातक के घर में कई जानवर बँधे रहते हैं अर्थात् दूध देने वाले तथा सवारी के काम में आने वाले अनेक जानवरों का वह आश्रयदाता होता है। इस प्रकार के जातक की या तो सगाई होकर छूट जाती है, या जीवन में एक से अधिक स्त्रियों से उसका सम्पर्क रहता है। जीवन सुख एवं शान्तिमय रहता है तथा वह विविध भोगों का भोग करता है। व्यापार एवं कृषि कार्यों में जातक को विशेष लाभ रहता है।

वृष—जिसके चौथे भाव में वृष राशि हो, उसकी समाज में विशेष इज्जत होती है तथा सामाजिक कार्यों में वह बढ़-चढ़ कर भाग लेता है। साहस, धीरता एवं गम्भीरता में जातक अग्रणी रहता है एवं स्वस्थ सुदृढ़ शरीर तथा सुन्दर रूप, गुण वाला जातक होता है। धार्मिक कार्यों में जातक का विशेष चित्त रहता है। व्रतोत्सव आदि धूमधाम से मनाता है। शिव की पूजा से जातक को विशेष लाभ रहता है। पारिवारिक

जीवन सुखी होता है तथा वृद्धावस्था में उसे पूर्ण सन्तान-सुख मिलता है।

मिथुन—जिसके चतुर्थ भाव में मिथुन राशि होती है, वह कामी एवं सुखी होता है। सुन्दर स्त्रियों की संगति में इसे विशेष आनन्द मिलता है, तथा यौवनावस्था में यह व्यर्थ का द्रव्य लुटाता है। सुगन्धित पदार्थों, इत्र, तेल आदि पर इसका खर्च होता रहता है। आर्थिक दृष्टि से यह जातक साधारण होता है तथा द्रव्य संचय के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता है। जीवन के अन्तिम काल में इसे प्रबल धन-हानि सहन करनी पड़ती है।

कर्क—जिसके सुख भाव में कर्क राशि हो, वह अत्यन्त सुन्दर होता है। गौर वर्ण, आकर्षक चेहरा एवं प्रभावित मुख-मुद्रा सहज ही सबको लुभाने वाली होती है। जीवन में इसे मित्रों की कमी नहीं रहती। इसे सुन्दर, स्वस्थ एवं गौर वर्ण की पत्नी प्राप्त होती है, जो रूपवान होने के साथ ही साथ गुणवान भी होती है। जीवन बनाने में स्त्री का विशेष हाथ रहता है।

सिंह—जिस जातक के चतुर्थ भाव में सिंह राशि होती है, वह अत्यन्त क्रोधी और चिड़चिड़ा होता है। बान्धवों एवं भाइयों से कोई विशेष सहायता प्राप्त नहीं होती। परिवारिक जीवन भी सुखद नहीं कहा जा सकता। इस जातक की सन्तान पिता द्वारा व्यर्थ ही दण्ड पाती रहती है तथा साधारण स्तर की होती है व जीवन में विशेष प्रगति नहीं कर पाती। पुत्रों की अपेक्षा कन्या सन्तति विशेष होती है।

कन्या—जिस जातक के चतुर्थ भाव में कन्या राशि होती है, वह सौभाग्यशाली होता है, उसे जीवन में पूर्ण सुखभोग मिलता है। परिवारिक जीवन सुखी एवं सन्तोषजनक होता है। विवाह बाल्यावस्था में ही हो जाता है तथा उसे सुन्दर, ऐवं सुघड़, सुशील पत्नी प्राप्त होती है। ऐसे जातक को कन्या की अपेक्षा पुत्र सन्तान अधिक होती है। आर्थिक दृष्टि से यह राशि श्रेष्ठ कही गई है। यद्यपि बाल्यावस्था में उसे धनाभाव से दुःख देखना पड़ता है, परन्तु जीवन के २८वें वर्ष के बाद से धनागम होता है, पूर्ण धन-सुख ३६वें साल से मिलता है। जातक सदगुणी, शिक्षित एवं विवेकवान होता है।

तुला—जिस जातक के चतुर्थ भाव में तुला राशि होती है, वह एक सफल व्यापारी होता है। बाल्यावस्था में निर्धन होते हुए भी भुजबल से

व्यापार जमाता है और उसे चतुर्दिक फैलाता है। ऐसा व्यक्ति नम्र और दयालु होता है, दूसरों की मदद करना इसका स्वभाव होता है तथा अपने द्रव्य का कुछ न कुछ भाग धार्मिक कार्यों में लगाता रहता है। छल-कपट से दूर शुभ कार्यों में लगा हुआ ऐसा व्यक्ति शीलवान एवं शिक्षित भी होता है। यौवनावस्था से ही वह सुखोपभोग करता है तथा वृद्धावस्था सुखद एवं सफल होती है।

वृश्चिक—जिस जातक के चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि हो, वह हर समय परेशानी में रहता है, उसका मस्तिष्क शान्त नहीं रहता एवं कई कठिनाइयों का सामना करता रहता है। शत्रुओं से ऐसा जातक डरता रहता है, क्योंकि शत्रु ऐसे जातक पर हावी रहते हैं। इसके प्रत्येक कार्य में प्रथम बाधा उत्पन्न होती हैं, एवं फिर वह कार्य सम्पन्नता की ओर अग्रसर होता है। प्रारम्भ में जातक मन्दभागी होता है, पर ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती जाती है, भाग्य भी उसे उन्नति की ओर अग्रसर करता रहता है। पारिवारिक जीवन सुखी कहा जा सकता है।

धनु—जिस जातक के चौथे भाव में धनु राशि हो, वह लड़ाकू प्रवृत्ति का होता है, झगड़ा करना उसका स्वभाव होता है तथा संग्राम में सफलता प्राप्त करता है। ऐसा जातक व्यापारी अथवा लेन-देन करने वाला होता है, जो दूसरों को ब्याज पर रुपये देता-लेता रहता है। इसकी अधिकांश उमर मुकदमेबाजी में ही बीतती है। नौकरी की अपेक्षा यह जातक व्यापार या व्यक्तिगत प्रयत्नों में अधिक सफलता प्राप्त करता है। मिलिटरी या पुलिस की नौकरी में जातक ख्याति अर्जित करता है। यह स्वयं भाग्य का निर्माता होता है तथा बाल्यावस्था साधारण रूपेण व्यतीत होती है, परन्तु समय एवं मनुष्य को पहचानने की इसमें अद्भुत क्षमता होती है। इसका पारिवारिक जीवन सामान्य ही कहा जा सकता है।

मकर—जिस जातक के चतुर्थ भाव में मकर राशि हो, वह बागबानी या बगीचों का स्वामी होता है। उसकी नौकरी भी कुछ इस प्रकार की होती है कि जिसका सम्बन्ध वनस्पति से हो। मित्रों की दृष्टि से जातक सौभाग्यशाली होता है तथा जीवन में मित्र सहायक भी होते हैं। पत्नी से मतभेद बने रहते हैं, परन्तु सन्तान से जातक को लाभ रहता है।

कुम्भ—जिस जातक के चौथे भाव में कुम्भ राशि हो वह स्त्रियों के

मामले में सौभाग्यशाली होता है। इसे सुन्दर एवं शिक्षित पत्नी मिलती है। ससुराल से इसे धन प्राप्त होता है तथा भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है। पारिवारिक जीवन सफल हाता है, पत्नी सुशील होती है, जो कि जातक के जीवन को बनाने में सहायक होती है। आर्थिक दृष्टि से यह राशि साधारण ही कही जाती है। आय की अपेक्षा व्यय बढ़ा रहता है।

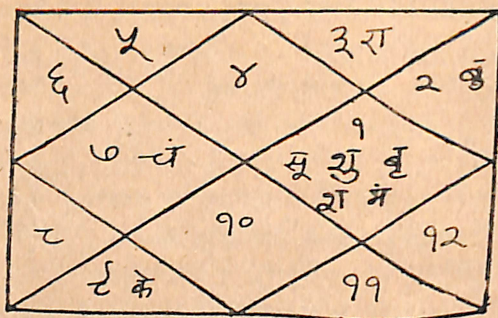
मीन – जिस जातक के सुख भाव में मीन राशि हो, वह नौका चालक या जहाज का कप्तान होता है अथवा जल से सम्बधित सरकारी नौकरी करता है। धीर-गम्भीर होने के साथ-साथ जातक शिक्षित भी होता है तथा अपने सदगुणों के कारण समाज में आदर प्राप्त करता है। आर्थिक दृष्टि से यह जातक धनी होता है तथा जीवन में धन संचय करने वाला होता है। इसे अपने जीवन में पूर्ण सुखोपभोग की सामग्री उपलब्ध होती रहती है। ऐसा जातक धार्मिक विचारों वाला होता है तथा नवीन विचारों का स्वागत करने को सदा प्रस्तुत रहता है। जातक का पूर्ण जीवन सुखी कहा जा सकता है।

चौथे भाव से सम्बन्धित राशियों का विवेचन करने के उपरान्त चौथे भाव में स्थित ग्रह और उनका फल भी स्पष्ट करना आवश्यक है।

सूर्य—चौथे भाव में सूर्य की उपस्थिति अधिक अच्छी नहीं मानी गई है। जिस जातक की कुण्डली के चौथे भाव में सूर्य होता है, वह मानसिक रूप से परेशान रहता है तथा उसके दिमाग में अस्थिरता, असन्तोष एवं घुमड़न-सी बनी रहती है। ऐसा जातक जीवन से अप्रसन्न रहता है। मित्र जीवन में सहायक होते हैं, पर उसका स्वभाव स्वार्थी होता है, फलस्वरूप यह मित्रों का विशेष लाभ नहीं ले पाता। गाने-बजाने में जातक की रुचि रहती है तथा गम्भीर विषयों की ओर प्रवृत्त रहता है। राज-नीतिक जीवन में इसे कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है तथा कठिनता से सफलता प्राप्त होती है।

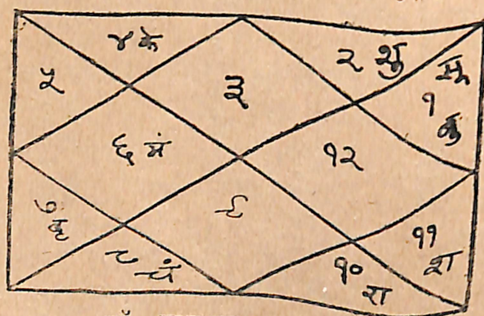
चन्द्र—चौथे भाव में चन्द्रमा की स्थिति जातक को भावुक, दयालु और परोपकारी बना देती है। बान्धवों एवं निकट के सम्बन्धियों के विचारों यथा इसके विचारों में गहरी असमानता विद्यमान रहती है। आत्म-विश्वास एवं आत्मसन्तोष की मात्रा जरूरत से ज्यादा होती है तथा जीवन में हर समय हँसमुख बना रहता है। बलवान चन्द्र जातक को

विख्यात, धनी एवं प्रभावशाली भी बना देता है।



श्री गौतम बुद्ध

मंगल—चतुर्थ भाव में मंगल की उपस्थिति साधारण ही है। मंगल होने से जातक की प्रगति शनैः-शनैः होती है तथा प्रारम्भिक जीवन में वह उत्तम भोगों से वंचित रहता है। पिता तथा उसके विचारों में भी



डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

मतभेद स्वाभाविक है। नौकरी के लिए तथा नौकरी में उन्नति के लिये उसे कठोर संघर्ष करते रहना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति में आत्मविश्वास और हिम्मत गजब की होती है। संघर्ष के क्षणों में भी यह विचलित नहीं होता और दृढ़तापूर्वक उसका सामना करता रहता है। माता के लिये जातक के दिल में आदर एवम् श्रद्धा रहती है। मंगल की दशा में जातक को वाहन-सुख की प्राप्ति भी होती है। राजनीतिक क्षेत्र में भी ऐसा व्यक्ति

पूर्ण सफल कहा जा सकता है। किस समय कौन-सा कार्य करना है तथा किस प्रकार से, किसी दूसरे को अपने विचारों का अनुयायी बनाना है, यह खूब जानता है। परिस्थिति एवं मनुष्य को भाँपने की इसमें गजब की क्षमता होती है। पारिवारिक जीवन सुखी एवं सन्तुष्ट कहा जा सकता है।

बुध—जिस जातक के चतुर्थ भाव में बुध हो, वह एकसफल कूटनीतिज्ञ होता है। यदि बुध कारक ग्रह या उच्च का हो तो व्यक्ति राजदूत का पद सुशोभित करता है। यदि बुध नीच राशि का हो या पापाक्रान्त हो तो व्यक्ति स्थानीय राजनीति में भाग लेकर सफलता प्राप्त करता है। शिक्षा की दृष्टि से यह ग्रह उत्तम है। व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त वह विरोधी दल का नेता भी हो सकता है तथा अपने भाषणों एवं लेखों से राजनीतिक क्षेत्र में हलचल उत्पन्न कर देता है। भाषण कला में जातक पटु होता है तथा जनता को सम्मोहित करने की उसमें शक्ति होती है।

बृहस्पति—यदि चतुर्थ भाव में गुरु हो तो वह व्यक्ति दार्शनिक टाइप का हो जाता है। हर समय उन्नति की ओर अग्रसर होते रहना उसका स्वभाव होता है। सामाजिक जीवन में वह ख्याति अर्जित करता है तथा मित्रों एवं शत्रुओं में समान रूप से प्रशंसा प्राप्त करता है। वाहन,धन आदि की दृष्टि से जातक सौभाग्यशाली होता है तथा जीवन में विविध भोग भोगता है। राजकीय नौकरियों में ऐसा व्यक्ति शनैः-शनैः प्रगति करता है तथा गजेटेड अधिकारी भी बन जाता है। धार्मिक कार्यों में जातक की गहरी रुचि होती है।

शुक्र—चौथे भाव में शुक्र शुभकारक कहा गया है। ऐसे जातक का जीवन सुखी एवं आनन्दमय होता है, सुन्दर एवं गुणवान पत्नी प्राप्त होती है, जो कि जीवनोन्नति में सहायक होती है। यह जातक मातृभक्त होता है, यद्यपि कई बार माता के विचारों से इसका स्वाभाव मिलता नहीं, फिर भी यह अपनी ओर से नम्र बना रहता है। मन का गहरा होता है। इसके मन की थाह पा लेना आसान नहीं होता। इसके जीवन तथा विचारों पर राजनीति हावी रहती है। मित्रों की इसके जीवन में कमी नहीं रहती तथा वे सहायक भी होते हैं। स्त्रियों एवं प्रेमिकाओं का इसके जीवन में गहरा हस्तक्षेप होता है।

शनि—चौथे भाव में शनि का होना इस बात का सूचक है कि व्यक्ति बाल्यावस्था में स्वस्थ नहीं रहा होगा तथा कई व्याधियों एवं संकटों-बाधाओं से त्रस्त रहा होगा। भाइयों का इसके जीवन में कोई महत्व नहीं रहता और न यह भाइयों का सहायक होता है। माँ को यह तृणवत् समझ अपने जीवन से बाहर कर देता है। जीवन से यह सदा अप्रसन्न रहता है तथा मानसिक रूप से अस्वस्थ रहता है। जीवन में इसे कोई न कोई चिन्ता लगी ही रहती है। मानसिक परेशानी के साथ-साथ इसमें हीन भावना का भी आधिक्य होता है।

राहु—यदि चौथे भाव में राहु हो तो जातक व्यवहारकुशल नहीं होता। बोलने में असभ्यता प्रदर्शित करता है तथा कई बार वाणी के ही कारण अपना कार्य बिगाड़ देता है। धोखा देने में यह जातक कुशल होता है तथा समय पड़ने पर बड़े से बड़ा झूठ बोल लेता है। राजनीतिक क्षेत्र में यह पूर्ण सफलता प्राप्त करता है पुत्रों की अपेक्षा कन्या सन्तान इसके ज्यादा होती है।

केतु—यदि चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक जीवन में परेशान रहता है तथा प्रतिक्षण कुछ न कुछ मानसिक परेशानियाँ बढ़ती ही रहती हैं। जातक हीन भावना से ग्रस्त रहता है। माता-पिता के साथ जातक के सम्बन्ध उचित कहे जाते हैं तथा ऐसा व्यक्ति पूर्ण मातृभक्त होता है। परिवार में अशाँति स्वाभाविक है। जीवन में धन का अभाव रहने पर भी जातक ख्याति लाभ कर सबको आश्चर्यचकित करते में समर्थ होता है। जीवन के अन्तिम वर्ष असफल एवं कष्टदायक होते हैं।

वाहन

चतुर्थ भाव से वाहन का भी विचार किया जाता है। जीवन में साधारण वाहन ही उपलब्ध रहेगा या उच्च वाहन (कार वगैरह) की भी प्राप्ति हागी ? इस प्रकार के प्रश्नों का सम्बन्ध भी चतुर्थ भाव से होता है। वाहन योग के सम्बन्ध में कुण्डली में दो ग्रह विशेष कारक होते हैं।

१. चौथे भाव का स्वामी, और

२. शुक्र।

शुक्र ग्रह चूँकि वाहनाधिपति है, अतः इस सम्बन्ध में शुक्र का गहराई के साथ विचार करना चाहिए।

वाहन कारक—शुक्र

वाहन स्थान=कुण्डली का चौथा भाव।

वाहन से सम्बन्धित कुछ योग नीचे प्रस्तुत कर रहा हूं।

१. चतुर्थेश बली हो तो वाहन सुख होता है।

२. चौथा भाव अच्छे अंशों से युक्त हो तो भी जातक को वाहन प्राप्ति होती है।

३. चतुर्थेश चतुर्थ भाव बुध के साथ हो तो साधारण वाहन योग्य बनता है।

४. चन्द्रमा लग्नेश हो तथा चौथे भाव के स्वामी के साथ बैठा हो तो जातक को जीवन में वाहन-सुख प्राप्त होता है।

५. दूसरे या चौथे भाव में शुभ राशि का चन्द्र हो तो जातक को साधारण वाहन सुख मिलता है।

६. यदि चतुर्थेश चन्द्रमा के साथ लग्न में हो तो वाहन सुख मिलता है। साधारण वाहन का तात्पर्य आजकल के युग में साइकिल आदि से है। उच्च वाहनों में मोटर साइकिल तथा कार की गिनती होती है। नीचे उच्च वाहनों का योग प्रस्तुत कर रहा हूं।

७. यदि चतुर्थेश शुक्र के साथ लग्न में हो तो उच्च कोटि का वाहन प्राप्त होता है।

८. बलवान शुक्र और चन्द्रमा त्रिकोण या केन्द्र में हों तो उच्च वाहन योग बनता है।

९. चन्द्रमा यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो भी उच्च वाहन प्राप्त होता है।

१०. शुक्र, चन्द्रमा और चतुर्थेश लग्नेश के साथ हो तो उच्च वाहन योग बनता है।

११. गुरु चतुर्थेश, चन्द्र और शुक्र एकत्र होकर केन्द्र या त्रिकोण में हों तो उसके घर में कई उच्च वाहन उपलब्ध होते हैं।

१२. चतुर्थेश गुरु के साथ या गुरु से दृष्ट हो तो भी उच्च वाहन योग बनता है।

१३. चतुर्थेश शुभ ग्रह के साथ दशम् भाव में हो तो उच्च वाहन योग बनता है।

१४. चतुर्थेश केन्द्र में हो और उसके केन्द्र का स्वामी लग्न में हो तो जातक

उच्च वाहन प्राप्त करता है।

१५. दशम भाव का स्वामी एकादश भाव में हो और द्वितीयेश दसवें भाव में हो तो उच्च वाहन योग बनता है।

१६. चतुर्थेश, नवमेश, लग्न में हों या सातवें भाव में हों तो उच्च वाहन मिलता है।

१७. चतुर्थेश चन्द्र और शुक्र के साथ एकादश भाव में हो तो उच्च वाहन प्राप्ति होती है।

१८. लग्नेश और सप्तमेश चौथे भाव में हों तो जातक को उच्च वाहन मिलता है।

१९. चतुर्थेश केन्द्र में हो और उस पर किसी भी पापग्रह की दृष्टि न हो तो जातक उच्च वाहन सुख भोगता है।

२०. चतुर्थेश, दशमेश केन्द्र में हों तो जातक वाहन सुख भोगता है।

२१. बलवान शुक्र चौथे भाव में बैठा हो तो उच्च वाहन मिलता है।

उच्च वाहन प्राप्ति समय

मैंने अपने अनुभव और निरीक्षण से उच्चवाहन-प्राप्ति समय की विधि निकाली है, जो प्रामाणिक होने के साथ-साथ स्पष्ट भी है। पाठकों के हित के लिए विधि नीचे दे रहा हूँ।

प्रत्येक ग्रह की मूल कलाएँ होती हैं, जो कि निम्न प्रकार से हैं।

ग्रह	कला
सूर्य	३०
चन्द्र	१६
मंगल	६
बुध	८
गुरु	१०
शुक्र	११
शनि	१
राहु-केतु	०

अब हमें निम्न तथ्यों पर ध्यान देना है—

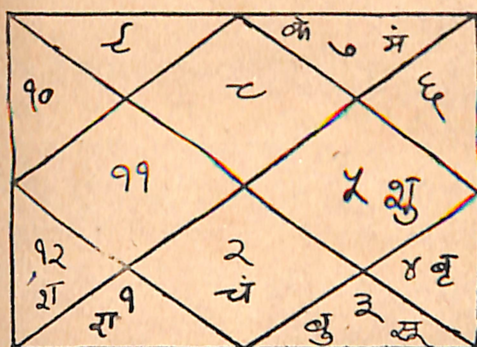
१. चतुर्थेश की कलाएँ।

२. शुक्र की कलाएँ।

३. चतुर्थ भाव में बैठे ग्रह की कलाएँ।

४. चतुर्थ भाव को देखने वाले ग्रह की कलाएँ

इन समस्त ग्रहों की कलाओं का योग कर १२ का भाग दो। जो [शेष] उसे चंद्रस्थ राशि से आगे गिनो। जो राशि आवे, उस राशि के [स्वा]मी की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा आने पर उच्च वाहन प्राप्ति [हो]ती है।



श्री अरविन्द कुमार

उदाहरणार्थ इस कुण्डली का अध्ययन कर उच्च वाहन प्राप्ति समय निकालना है।

नियमानुसार ग्रहों की कलाएँ निम्न प्रकारेण होंगी। चतुर्थेश (शनि) की कलाएँ = १

शुक्र की कलाएँ = ११

चतुर्थ भाव में बैठे ग्रह की कलाएँ = ०

चतुर्थ भाव को देखने वाले ग्रह की कलाएँ = ११

सभी कलाओं का योग = १ + ११ + ११ = २३। २३ में १२ का भाग दिया, १ लब्धि, शेष ११ रहे। इन ग्यारह को चन्द्रस्थ राशि (वृष) [से] आगे गिना तो मीन राशि आई। चूँकि मीन राशि का स्वामी बृह[स्प]ति है, अतः जातक को बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा [आ]ने पर उच्च वाहन योग प्राप्त होगा।

वाहन सम्बन्धी विचार करने के उपरान्त चतुर्थ भाव से सम्बन्धित [प्र]मुख योग नीचे दे रहा हूँ।

१. **राज्य लक्षण योग**—चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र चारों ग्रह चौथे [भा]व या केन्द्र में हों तो राज्य लक्षण योग बनता है। इस योग वाला,

व्यक्ति हँसमुख, उच्च व्यक्तित्व रखने वाला, धीर-गम्भीर, सर्वगुण संपन्न तथा सौभाग्यशाली होता है।

२. **काहल योग**—चतुर्थेश और नवमेश केन्द्र स्थानों में हों तथा आमने-सामने बैठे हों एवं लग्नेश बलवान हो तो काहल योग बनता है। जिस कुण्डली में यह योग होता है, वह सेना में उच्च पद प्राप्त कर सभी सुखों का भोग करता है।

३. **हंस योग**—बृहस्पति स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो हंस योग होता है। इस को रखने वाला जातक चुम्बकीय व्यक्तित्व को रखने वाला, धनवान तथा उत्तम सवारी से विभूषित होता है।

४. **मालव्य योग**—यदि शुक्र स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो उपर्युक्त योग बनता है। जिस कुण्डली में यह योग होता है, वह ऊँचे दिमाग वाला, केन्द्रीय सरकार में उच्च पद पर आसीन एवं सौभाग्यशाली होता है।

५. **शश योग**—यदि शनि स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव में हो तो शश योग होता है। शश योग वाला जातक राजनीति में पटु एवं चारित्रिक दृष्टि से शिथिल होता है।

६. **रुचक योग**—मंगल स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव या केन्द्र में बैठा हो तो रुचक योग होता है। ऐसा व्यक्ति ऊँचा, लम्बा, दृढ़ शरीर, व्यापारी या स्थल सेना में उच्च पद का प्रसिद्ध अधिकारी होता है, जो अपने कार्यों से ख्याति अर्जित करता है।

७. **भद्र योग**—बुध यदि स्वराशिस्थ चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो भद्र योग बनता है। ऐसा योग रखने वाला जातक सिंह के समान आकृति वाला, विशाल वक्षस्थल तथा स्वस्थ शरीर वाला होता है। वृद्धावस्था में ऐसा जातक पूर्ण सुख भोगता है।

८. **पुष्कल योग**—लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान होकर चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो पुष्कल योग बनता है। ऐसा व्यक्ति धनवान, मृदु एवं मधुरभाषी तथा प्रसिद्ध होता है।

९. **वाहन योग**—शुक्र बलवान होकर चतुर्थेश के साथ चतुर्थ भाव में हो तो वाहन योग होता है। इस योग को रखने वाला जातक जीवन भर उच्च वाहन सुख भोगता है।

१०. **मातृ सौख्य योग**—चन्द्रमा चतुर्थेश के साथ चौथे भाव में हो, तो

ग्रह योग बनता है तथा इस योग वाले जातक को माता का पूर्ण सुख मिलता है।

११. **गृह योग**—लग्नेश शुक्र चतुर्थ भाव में हो तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो गृह योग बनता है। ऐसा व्यक्ति उत्तम कोटि का भवन प्राप्त कर सुख भोगता है।

१२. **लक्ष्मी योग**—मंगल चौथे हो, शुक्र १२वें भाव में हो तथा एकादश भाव में उच्च का सूर्य हो तो लक्ष्मी योग बनता है। जिसकी कुण्डली में लक्ष्मी योग होता है, वह जातक प्रसिद्ध विद्वान, पराक्रमी, सौम्य, सभी सुखों का भोग करने वाला तथा भाग्यशाली होता है।

पञ्चम भाव

जन्म कुण्डली में पंचम भाव का विशेष महत्व है, क्योंकि यह पहला त्रिकोण स्थान है। दूसरे यह कि इस भाव से विद्या व शिक्षा का अध्ययन किया जाता है। चूँकि विद्या ही मानव-प्रगति की आधार शिला है, फलस्वरूप इस भाव का महत्व इस दृष्टि से बढ़ जाता है।

पंचम भाव से जानने योग्य बातें

विद्या, शिक्षा, संतान, संतान-सुख, संतान एवं माता-पिता का पारस्परिक सम्बन्ध, भावनाएँ, विचार, ईश्वर-भक्ति, राजा से सम्बन्ध, उच्चाधिकारियों से सम्पर्क, पुण्य आदि का विचार पंचम भाव से ही किया जाता है।

पंचम भाव का अध्ययन करने से पूर्व निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

१. पंचम भाव की राशि।
२. पंचम भाव का स्वामी।
३. पंचम भाव का स्वामी किस भाव में बैठा है।
४. पंचम भाव के स्वामी के साथ कौन-कौन से ग्रह स्थित हैं?
५. पंचम भाव में कौन-कौन से ग्रह स्थित हैं?
६. पंचम भाव पर किन-किन ग्रहों की दृष्टि है?

७. पंचम भाव के स्वामी पर किन-किन ग्रहों की दृष्टि है ?

८. पंचमेश कारक है या अकारक, पापग्रह है या सौम्यग्रह, शुभग्रह है या दुष्टग्रह ।

६. पंचम भाव से सम्बन्धित दशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा ।

पंचम भाव गत राशि फल विवेचन

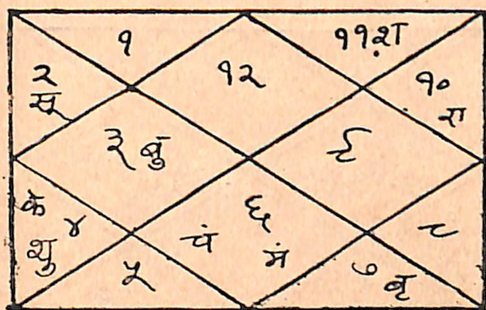
मेष—जिस पुरुष के पंचम भाव में मेष राशि होती है, वह व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का होने के साथ-साथ विवेकहीन भी होता है । कई बार उतावली में ऐसे कार्य कर डालता है, जिसके लिए उसे आगे चलकर पछताना पड़ता है । घर में पति-पत्नी एक मत नहीं हो पाते और पुत्रों के विचारों से उसकी असमानता रहती है । ऐसे व्यक्तियों का चित्त अस्थिर रहता है तथा किसी भी प्रश्न पर ये तुरन्त निर्णय नहीं ले पाते ।

वृष—जिस व्यक्ति के पचम भाव में वृष राशि हो, वह मनुष्य सहज ही धन प्राप्त कर डालता है । द्रव्योपार्जन में वह विशेष संलग्न रहता है, तथा उसे कई बार लॉटरी या जुए से भी धन लाभ हो जाता है । ऐसे व्यक्ति की स्त्री सुन्दर तथा भाग्यशाली होती है, परन्तु सारी चिन्ता इसे भोगनी पड़ती है । संतान या तो देरी से होती है अथवा संतान से उसे त्रास मिलता है या फिर संतान दुर्बल एवं मलिन स्वभाव की होती है । ऐसे व्यक्ति क्षमावान, धैर्यवान, सहिष्णु एवं समझदार होते हैं ।

मिथुन—जिस व्यक्ति के पंचम भाव में मिथुन राशि होती है, उसे पूर्णतः संतान-सुख प्राप्त होता है । वह स्वयं दृढ़, साहसी एवं मजबूत होता है, परन्तु उसके विचारों में अस्थिरता रहती है । वह किसी भी एक कार्य पर काफी समय तक विचार नहीं कर सकते । इन्हें क्रोध भी जल्दी आता है, परन्तु क्रोध शान्त भी शीघ्र ही हो जाता है । विद्या योग उन्नत होता है। यद्यपि ऐसे व्यक्तियों के शिक्षा काल में कई प्रकार की बाधाएँ उपस्थित होती हैं।

कर्क—जिसके पंचम भाव में कर्क राशि हो, उसके लड़कियाँ अधिक होती हैं तथा पुत्र सुख उसे देरी से प्राप्त होता है । ऐसा व्यक्ति स्थूलकाय होता है, शीघ्र ही दूसरों पर विश्वास कर लेता है एवं संतान-सुख से पीड़त एवं दुखी रहता है । प्रस्तुत कुण्डली ११-६-१६३५ को जन्म लेने वाली एक महिला की है, जिसके ६ पुत्रियाँ हैं, परन्तु पुत्र एक भी नहीं है ।

पाठक स्वयं देखेंगे कि पंचम भाव में कर्क राशि है, जो कि उपर्युक्त कारण का हेतु है, साथ ही राहु की दृष्टि भी संतान सुख में बाधक बनी

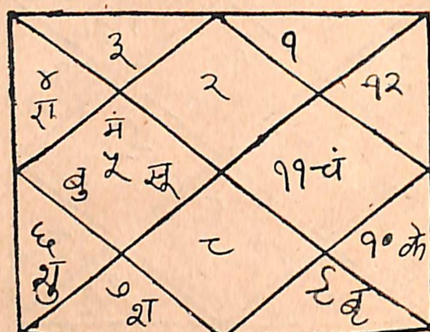


है। एवं बात और पंचम भाव में शुक्र है, जो कि स्त्री कारक ग्रह है, फलस्वरूप लड़कियों की बहुतायत रही। ऐसे जातक विनयशील, समझदार एवं नम्र होते हैं।

सिंह--जिसके पंचम भाव में सिंह राशि होती है, वह अत्यन्त असहिष्णु एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। मजाक उसे पसंद नहीं एवं बराबरी वालों के साथ उसकी कम ही बनती है। ऐसा व्यक्ति क्रूर स्वभाव का होता है तथा निर्दयतापूर्ण कार्य करने में उसे आनन्द आता है। ऐसे व्यक्तियों के भी लड़कियाँ ज्यादा होती हैं। ये घर से दूर जीविकोपार्जन के लिए रहते हैं तथा परिश्रमी, साहसी एवं हिम्मत वाले व्यक्ति होते हैं।

कन्या—जिन जातकों के पंचम भाव में कन्या राशि होती है, वे स्थूलकाय होते हैं। लम्बी-चौड़ी डींग हाँकते हैं तथा व्यर्थ के प्रदर्शन में ज्यादा विश्वास रखते हैं। वास्तविकता कुछ और होती है और ये दिखाते कुछ और हैं। ऐसे व्यक्ति मोटी बुद्धि के होते हैं। समय की नाजुकता को पहचान नहीं पाते तथा अपने सिद्धान्तों पर व्यर्थ ही अड़े रहते हैं, फलस्वरूप वे हानि भी उठाते हैं। शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता इनमें होती ही नहीं। इनको यदि जरा सा भी अधिकार मिल जाता है तो ये उसका दुरुपयोग करने में भी नहीं हिचकते हैं। प्रस्तुत कुण्डली एक फिजिकल कालेज की प्रिंसीपल की है। जिन जातकों के पंचम भाव में कन्या राशि होती है, उन्हें पुत्र सुख का अभाव रहता है। प्रस्तुत कुण्डली का जातक भी पुत्र

न होने के कारण पुत्र-सुख से वंचित है। पंचम भाव में शुक्र की उपस्थिति के कारण लड़कियाँ अवश्य हो गईं। स्त्री की कुण्डली में यदि



पंचम भाव में कन्या राशि हो तो वह धर्म-कर्म में विश्वास रखने वाली होती है, पाप कृत्यों से दूर रहती हैं तथा पुत्र-सुख से वंचित रह कर दुखी रहती है। आभूषणप्रियता ऐसे जातकों की विशेषता कही जा सकती है।

तुला—यदि पंचम भाव में तुला राशि हो तो जातक सुशील, नम्र और अध्ययन प्रेमी होता है, सुन्दर भी होता है तथा उसकी सुन्दरता लोगों द्वारा सराही जाती है। सुन्दर नेत्रों वाले ऐसे पुरुष कार्य तत्पर होते हैं। यदि स्त्री की कुण्डली में पंचम भाव में तुला राशि हो तो वह ज्यादा प्रभावकारी मानी जाती है।

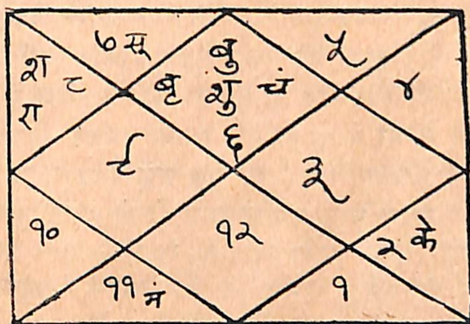
वृश्चिक—जिस जातक की कुण्डली के पंचम भाव में वृश्चिक राशि होती है. वह गुप्त रोगों से पीड़ित रहता है। संतान सुख जातक को प्राप्त होता है एवं-अंग प्रत्यंग सुन्दर एवं दर्शनीय होते हैं। ये व्यक्ति सहनशील होते हैं तथा ठंडे दिमाग से सोच-विचार कर कार्य करने वाले होते हैं। ये व्यक्ति धुन के पक्के होते हैं एवं जिस काम को एक बार हाथ में ले लेते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। धार्मिक कार्यों में ये पूर्णतः विश्वास रखते हैं तथा धर्म सम्बन्धी कार्यों में अग्रणी रहते हैं।

धनु—जिसके पंचम भाव में धनु राशि हो, वह घोड़ों से प्रेम रखने वाला होता है। घुड़सवारी उसका प्रिय विषय होता है। ऐसा व्यक्ति रेस के घोड़ों का सवार या तांगेवाला हो सकता है। शत्रुओं के मान-मर्दन में यह समर्थ होता है तथा अपने से बड़े लोगों का आदर करता है। संतान

सुख इसे पूर्ण होता है तथा आज्ञाकारी पुत्र उत्पन्न होते हैं।

मकर—जिस व्यक्ति के पंचम भाव में मकर राशि हो, वह मलिन चित्त वाला होता है। बुरे कार्यों या गंदी राजनीति में उसे आनन्द आता है। दास्य वृत्ति प्रधान ऐसा व्यक्ति चतुर एवं समय को पहचानने वाला होता है। शत्रुओं से भी काम निकालने में यह प्रवीण होता है तथा चरित्र की दृष्टि से शिथिल कहा जा सकता है। स्त्री जातक की कुण्डली में यदि पंचम भाव में मकर राशि हो तो वह शुभ होती है। ऐसी स्त्री सुयोग्य होती है तथा बहुत आगे और पीछे का सोचती है। यदि अन्य ग्रह कारक हों तो ऐसे जातक की स्मरणशक्ति अत्यन्त तीव्र होती है।

मैं यहाँ पाठकों के लाभार्थ कुमारी सरोजबाला की कुण्डली दे रहा हूँ, जिसमें अन्य योग भी बने हैं जिनका विवेचन आगे किया जाएगा, परन्तु साथ ही यह भी स्मरण रखने योग्य है कि पंचम भाव में मकर राशि है, जिस पर शनि की स्वगृही दृष्टि है।



कुमारी सरोजबाला
(१-११-१९५६)

कुमारी सरोजबाला को अपने पूर्व जन्म का पूरा हाल मालूम है, तथा उसने जो कुछ भी कहा है, वह पूरा का पूरा सही उतरा है। दस वर्ष की अवस्था में ही यह इतनी पंडित हो गई थी कि गूढ़ से गूढ़ विषय पर भी घंटों प्रवचन दे सकती थी। ढाई वर्ष की अवस्था में जब इसने शुद्ध गायत्री मंत्र का उच्चारण किया तो पिता श्यामसुन्दर शास्त्री चकित रह गये। जब यह छः वर्ष की थी तो इसने एक पंडित को इसलिए टोक दिया था कि वह किसी संस्कृत-श्लोक का मनमाना अर्थ कर रहा था।

बाद में इस छः वर्षीय बालिका ने श्लोक का इतनी उत्तमता से विशद विवेचन किया कि पंडित मंडली दंग रह गई। ज्योतिष के प्रेमी और विद्यार्थी इस कुण्डली का गंभीरता से अध्ययन करें और ज्ञात करें कि किन ग्रहों के संयोग से उसे पूर्व जन्म की बातें याद रही।

वस्तुतः पंचम भाव कल्पना तथा स्मरणशक्ति का भाव है। पंचम भाव में शनि की राशि मकर है, तथा उस पर शनि की ही दृष्टि है, साथ ही उस पर गुरु की भी दृष्टि है, जो कि उच्च के बुध के साथ केन्द्र में बैठा है। राहु-शनि का संयोग तथा शनि की दृष्टि ने जहाँ उसे पूर्व जन्म की बातें स्मरण कराईं, वहाँ बलवान वृहस्पति ने उसे पांडित्य भी दिया। बृहस्पति और चन्द्र का संयोग लग्न में होकर प्रसिद्धि दिलाने में कामयाब रहा।

कुम्भ जिसके पंचम भाव में कुम्भ राशि हो, वह स्थिर चित्त का होता है। ऊपर से शान्त दिखाई देने पर भी उसके हृदय में हलचल मची रहती है। गंभीरता इसका प्रधान गुण है। यह व्यक्ति व्यर्थ का असत्य भाषण नहीं करेगा। दूसरों की भलाई एवं परोपकार कार्य करने में प्रसन्नता अनुभव करेगा। प्रसिद्धि भी ऐसे जातकों को शीघ्र ही मिलती है। कष्ट सहन करने में भी ये माहिर होते हैं तथा भयंकर विपत्तियों में भी ये अडिग रहते हैं। संतान एवं विद्या सुख इन्हें श्रेष्ठ रहता है।

मीन—यदि पंचम भाव में मीन राशि हो तो वह कामुक प्रकृति का होता है। ऐश-आराम में ज्यादा विश्वास रखता है तथा स्त्रियों में यह विशेष लोकप्रिय होता है। स्वभाव से यह जातक भावुक, हर समय मुस्कराहट बिखेरने वाला तथा सौम्याकृति का होता है। संतान-सुख मध्यम रहता है तथा स्त्री के विचारों से मतभेद रहने के कारण पारिवारिक कलह भी सम्भव होती है। वृद्धावस्था सफल कही जा सकती है।

पंचम भाव में ग्रह एवं फल

पंचम भाव में कौन सा ग्रह क्या फल देगा, इसका वर्णन कर रहा हूँ, परन्तु यदि पंचम भाव में एक से अधिक ग्रह हों, तो जो भी ग्रह सर्वाधिक बली हो, उसका सबसे अधिक बल अन्य ग्रहों का उनके बल के अनुसार मिश्रित फल समझना चाहिए।

सूर्य—जिस जातक की कुण्डली के पंचम भाव में सूर्य हो, उसे संतान सुख का अभाव रहता है या स्त्री के गर्भपात हो जाता है अथवा देरी से

सन्तान लाभ होता है। जीवन में प्रसन्नता का अभाव रहता है तथा उसे कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। बाल्यावस्था कष्ट में बीतती है तथा वृद्धावस्था में कठोर संघर्ष में रत रहना पड़ता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में उसे 'हार्ट ट्रबल' भी रहती है तथा दिल के दौरे से मृत्यु भी संभव है। आय की अपेक्षा व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है।

चन्द्र—जिस जातक की कुण्डली में पंचम भाव में चन्द्र होता है, उसे सन्तान से पूर्ण सुख मिलता है। ऐसे व्यक्ति की सन्तान सरल, सौम्य गुणवान औरप्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली होती है, जो कि जातक के नाम को विख्यात करती है। आर्थिक क्षेत्र में भी ऐसा जातक सम्पन्न होता है। आय के स्रोत एक से अधिक होते हैं तथा जीवन में सुख भोग करता है। ऐसे जातक को स्त्री भी गुणवान एवं कुलीन मिलती है। ज़मीन से लाभ रहता है तथा स्वयं का भी मकान होता है। यह व्यक्ति ईश्वर से डरने वाला होता है। ईश्वर आराधना इसकी दैनिक चर्या होती है। धार्मिक कार्यों के लिए यह आगे बढ़कर सहयोग देता है, यथासंभव सत्य बोलता है तथा ईमानदारीपूर्ण जीवन बिताने का इच्छुक होता है। चातुर्य, बुद्धि की तीक्ष्णता, कलाओं का ज्ञान एवं तत्परता इसके प्राकृतिक गुण हैं।

मंगल - जिस व्यक्ति की कुण्डली में पंचम भाव में मंगल हो वह पुत्र रहित होता है। यदि भौम निर्बल हो तो वह पुत्रों द्वारा प्रताड़ित होता है तथा दुःख भोगता है। पाप कृत्यों में रत ऐसा जातक कई बाधाओं का सामना करता है। यह व्यक्ति प्रबल रूपेण साहसी होता है। साहस के बल पर ये भयंकर से भयंकर विपत्तियों के आघातों को भी सहन कर लेता है। जीवन पूर्णतः संघर्षशील होता है। पत्नी तथा इनके विचारों में मतभेद रहते हैं, परन्तु फिर भी कुछ न कुछ ऐसा मध्यम मार्ग निकल आता है, जिससे वातावरण अनुकूल बन जाता है। डॉक्टरी वैद्यक आदि क्षेत्र में ऐसे जातक नाम कमाते हैं।

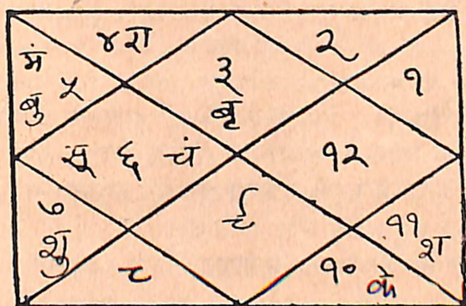
बुध—जो व्यक्ति अपनी कुण्डली के पंचम भाव में बुध ग्रह रखता है, वह सौभाग्यशाली होता है तथा उसका जीवन आनन्दमय बीतता है। स्त्री के मामले में भी ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली होता है। इसे गुणवान, समझदार एवं पढ़ी-लिखी पत्नी मिलती है। सन्तान की तरफ से भी जातक सौभाग्यशाली होता है। सन्तान अधिक होती है तथा

कन्या सन्तान विशेष होती है। ऐसा व्यक्ति हँसमुख, प्रसन्नचित्त, विनोदी एवं मधुर जीवन बिताने वाला होता है। देवताओं का भक्त, बड़ों पर श्रद्धा रखने वाला एवं पवित्र जीवन बिताने वाला होता है। जिसके पंचम भाव में बुध होता है, वह सेक्रेटरी, सचिव, मैनेजर या मिनिस्टर बन जाता है। बुद्धि तीक्ष्ण होती है तथा शीघ्र निर्णय लेने की उसमें विशेष योग्यता रहती है। ऐसा व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी नहीं घबराता तथा विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बनाने की सामर्थ्य रखता है। प्रेम के क्षेत्र में यह सफल सिद्ध होता है।

बृहस्पति—जिसके पंचम भाव में बृहस्पति होता है, वह तर्क शास्त्र, व्याकरण हिस्ट्री अथवा कानून में रुचि रखने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति मंत्र-तंत्र, वेद-पाठ, आदि में भी सिद्ध होता है तथा परिश्रमी होता है। यह व्यक्ति पत्नी के मामले में सौभाग्यशाली होता है। इसे सुन्दर, गुणवान, कुलीन एवं पतिव्रता पत्नी मिलती है, तथा दोनों में गहरा प्रेम रहता है। स्मरणशक्ति यद्यपि कुछ कमजोर होती है, परन्तु ऐसा व्यक्ति अधिकारियों का प्रिय पात्र होता है। यह व्यक्ति सेक्रेटरी, सलाहकार अथवा शक्ति सम्पन्न अधिकारी होता है। घर की सजावट की ओर ये विशेष ध्यान देता है तथा स्वयं की सजावट पर भी व्यय करता है। इसे जीवन में उत्तम कोटि के मित्र मिलते हैं, जो इसकी उन्नति में सहायक होते हैं। यह व्यक्ति गंभीर, धैर्यपूर्वक विपक्षी को भी सुनने वाला, सहिष्णु, क्षमावान, परोपकारी, चतुर एवं धनवान होता है। सन्तान सुख श्रेष्ठ होता है तथा उच्च वाहन सुख भी प्राप्त होता है।

शुक्र—पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक कल्पनाशील युवक होता है। काव्य प्रतिभा इसमे नैसर्गिक रूप से देखी जा सकती है एवं काव्य, संगीत, नृत्य, कलादि के माध्यम से द्रव्योपार्जन भी करता है। ऐसे व्यक्ति के कई घनिष्ठ मित्र होते हैं जो उसके जीवन में सहायक होते हैं। संतान सुख भी श्रेष्ठ होता है तथा पाँच से ज्यादा संतानें होती हैं। पुत्रियों की संख्या ज्यादा होती है तथा वृद्धावस्था में पूर्ण संतान-सुख मिलता है। भोग प्रधान प्रवृत्ति रखने वाला ऐसा व्यक्ति हँसमुख तथा रंगीले स्वभाव का होता है। जीवन सानन्द बीतता है। राज्य की ओर से उसे पूर्ण सम्मान प्राप्त होता है। धुन का धनी होता है, जीवन में जो निश्चय कर लेता है, उसे पूरा करता है। बाल्यावस्था कष्टमय होती है तथा

शिक्षण काल में कई व्यवधान उपस्थित होते हैं। ऐसा व्यक्ति यौवन काल में पूर्ण संघर्ष करता हुआ वर्तमान को अपने अनुकूल बनाने में समर्थ होता है।



प्रसिद्ध हास्यकवि काका हाथरसी

शनि—जिसके पंचम भाव में शनि होता है, उसका दिमाग ऊलजलूल विचारों से ग्रस्त रहता है। व्यर्थ की बातों में वह अधिक दिमाग खपाता है एवं मंदमति होता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होता है। यदि शनि उच्च का होकर पंचम में हो तो जातक के पैरों में कमजोरी ला देता है। जीवन में निरन्तर उत्थान-पतन देखते रहना पड़ता है। मित्रों से वाद-विवाद होता रहता है यथा योजनाएँ बनाने में यह सफल होता है।

राहु - पंचम भाव स्थित राहु नुकसानदायक ही होता है। जीवन में मित्रों का अभाव रहता है, लेकिन शत्रुओं से प्रताड़ित होने पर भी यह जीवट वाला व्यक्ति होता है। संतान दुःख इसे सहन करना पड़ता है तथा गृह-कलह से भी यह चिंतित रहता है। ऐसा जातक क्रोधी एवं हृदय का रोगी होता है।

केतु—जिस कुण्डली के पंचम भाव में केतु होता है, वह दरिद्र जीवन बिताने वाला होता है। सन्तान-सुख नगण्य होता है तथा जीविका के लिए कठोर संघर्ष करता रहता है। इस व्यक्ति को पेट सम्बन्धी कई बीमारियाँ होती हैं तथा इसका ऑपरेशन भी होता है। वात रोग से भी जातक पीड़ित रहता है। सहोदर भाइयों से इसकी बनती नहीं तथा इसे बान्धवों से परेशानियाँ ही प्राप्त होती हैं। भाई इसे धोखा भी दे सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में यह पिछड़ा रहता है तथा विद्या का अभाव इसे

उम्र भर खटकता रहता है। भावनाओं के वशीभूत यह गलत कार्य भी कर बैठता है, जिससे यह परेशान रहता है। मुकदमेबाजी, सट्टा या अनर्गल कार्यों में इसका धन व्यय हो जाता है। पूर्वार्द्ध की अपेक्षा जीवन का उत्तरार्द्ध ज्यादा सफल कहा जा सकता है।

समय निर्देश

ऊपर हमने पंचम भाव का विवेचन किया, पर अब यह जानना भी आवश्यक है कि पंचम भाव से सम्बन्धित फलाफल किस समय फलदायी होंगे। मुख्य रूपेण पंचम भाव से संतान, विद्या, बुद्धि एवं प्रसिद्धि का ज्ञान किया जाता है। यदि पंचमेश शुभ एवं कारक ग्रह होता है तो शुभ फल अन्यथा अशुभ फल प्रगट होता है।

पंचम भाव से सम्बन्धित फलाफल निम्न दशाओं में स्पष्ट होते हैं :—

१. पंचमेश की दशा में।
२. पंचमेश की दशा में पंचमेश का अन्तर आने पर।
३. पंचम भाव पर जिन ग्रहों की दृष्टि हो, उनमें सर्वाधिक बली ग्रह की दशा में।
४. पंचम भाव की दशा में।
५. पंचम भाव में स्थित ग्रह की दशा में।
६. पंचमेश जिस भाव में बैठा हो, उस भाव के स्वामी की दशा में।
७. चन्द्रमा से पंचम भाव के स्वामी की दशा में।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि पंचम भाव से संतान, संतान-सुख, संतान की प्रसिद्धि आदि के बारे में जानकारी की जाती है, ज्योतिष के पाठकों को चाहिए कि वे पति या पत्नी दोनों की कुण्डलियों का अध्ययन कर इसके बारे में फलादेश करें तो ज्यादा उचित एवं सही होगा। पत्नी की कुण्डली क्षेत्र-कुण्डली कहलाती है तथा पति की कुण्डली 'बीज-कुण्डली' कहलाती है।

यदि बीज एवं क्षेत्र दोनों ही कुण्डली सशक्त हों तो संतान श्रेष्ठ होती है। यदि बीज-कुण्डली मजबूत हो और क्षेत्र कुण्डली अशक्त हो तो लड़कों की संख्या ज्यादा समझनी चाहिए, इसी प्रकार क्षेत्र कुण्डली सशक्त हो और बीज कुण्डली निर्बल हो तो लड़कियों की संभावना अधिक रहती है। यदि दोनों की कुण्डलियों के पंचम भाव निर्बल हों तो संतान

होती और होती है तो शीघ्र मर जाती है।

एक बात और ! स्त्री की कुण्डली में पंचमेश का अध्ययन करने के साथ-साथ मंगल और चन्द्र का भी अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि मंगल सम्बन्ध रक्त से है तथा चन्द्रमा का सम्बन्ध संतति से। इन दोनों के मजबूत होने पर संतति गुणवान एवं प्रसिद्ध होती है।

पुरुष की कुण्डली में पंचमेश का अध्ययन करने के साथ-साथ सूर्य र शुक्र का भी अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि सूर्य उसके पराक्रम कारक है तो शुक्र का सम्बन्ध पुरुष के वीर्य से है। यदि पुरुष की ण्डली में शुक्र क्षीण, अशक्त या शत्रु क्षेत्री होता है तो संतति उत्पादन बाधा रहती है।

इस प्रकार से पाठकों को पंचम भाव का सावधानीपूर्वक निरीक्षण-रीक्षण करना चाहिए।

संतान संख्या

महर्षियों ने संतान संख्या जानने के दो प्रकार बताये हैं। मैं यहाँ दोनों ही प्रकार स्पष्ट कर देता हूँ —

(१) पंचम भाव पर जितने भी ग्रहों की दृष्टि हो, उससे उस भाव के गत नवांश संख्या को गुणाकर २०० का भाग दें, लब्धि तुल्य संतान होगी, जो शेष बचे, उसको भी एक मान लेना चाहिए।

(२) पंचम भाव की राशि छोड़कर अंशों की कला बनायें, फिर जिन जिन ग्रहों की शुभ दृष्टि हो, उनसे क्रमशः गुणा कर ६० का भाग दें। जो लब्धि प्राप्त हो, उसे फिर २०० से विभाजित करें, जो लब्धि प्राप्त होगी, उतने ही पुत्र होंगे।

पाप ग्रहों की दृष्टि से पैदा हुए पुत्रों का नाश समझना चाहिए।

पंचम भाव से सम्बन्धित कुछ योग

(१) सप्तमेश पुत्र भाव (पंचम भाव) में हो तो जातक पुत्र रहित या स्त्री रहित होता है।

(२) लग्नेष पंचम भाव में हो और पंचमेश लग्न हो तो जातक के दत्तक पत्र हो।

(३) शुभ राशिस्थ पंचमेश केन्द्र त्रिकोण में हो तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो बाल्यावस्था में पुत्र उत्पन्न हो।

(४) पुत्रेश और धनेश बाल रहित हो, पुत्र भाव पाप ग्रह से देखा

जाता हो तो जातक निस्सन्तान रहता है।

(५) पंचम भाव या पंचमेश शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभ ग्रहों से युक्त हो तो निस्सन्देह पुत्र प्राप्ति होती है।

(६) पूर्णबली गुरु पंचम भाव में हो तो बुद्धिमान पुत्र उत्पन्न होते हैं।

(७) चन्द्र दशम भाव में हो, शुक्र सप्तम भाव में हो, पापग्रह चौथे भाव में हो तो संतान का नाश होता है।

(८) लग्नेश ६ या ८वें भाव में हो, पंचम भाव में पापग्रह हो या उसे शत्रु ग्रह देखते हों तो पुत्र की हानि होती है।

(९) गुरु लग्नेश, सप्तमेश और पंचमेश सभी निर्बल हों तो जातक के दुर्बल संतति होती है।

(१०) पंचम भाव मिथुन या कन्या राशि हो या कुम्भ अथवा मकर राशि हो तो जातक के दत्तक पुत्र होता है।

(११) पंचमेश मंगल के साथ हो तथा छठे भाव का स्वामी उसे देखता हो तो जातक का पुत्र शत्रुओं द्वारा मारा जाता है।

(१२) लग्न में मंगल हो, अष्टम भाव पर या चतुर्थ भाव पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक को विलम्ब से संतान प्राप्ति होती है।

बुद्धियोग

(१३) पंचमेश ६, ८ या १२वें स्थान में हो तो जातक (स्वगृही न होने पर) मंद बुद्धि होता है।

(१४) यदि पंचमेश बुध और गुरु से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक तीक्ष्ण बुद्धि, समझदार एवं संकेत से समझने वाला होता होता है।

(१५) गुरु अपने ही नवांश में हो या शुभ षष्ठ्यांश में हो तो जातक भूत, भविष्य की सूक्ष्मता समझ, परिस्थिति एवं वातावरण के अनुसार उचित कार्य करने वाला होता है।

षष्ठ भाव

षष्ठ भाव से मुख्यतः रोग, शत्रु व्यसन, चोट, घाव, एक्सीडेंट, बीमारी, मानसिक असन्तुलन, माता का दुर्भाग्य, पुत्र एवं भाई का दुर्भाग्य आदि का विचार किया जाता है। ऋण एवं ननिहाल का विचार

भी छठे भाव से ही किया जाता है, परन्तु इस भाव को सावधानीपूर्वक देखने एवं अध्ययन करने की जरूरत है, क्योंकि कई बार ऐसा देखा गया है कि जातक बीमारी से ग्रस्त रहता है, पर ननिहाल से उसे विशेष लाभ मिलता रहता है अथवा वह ऋण से मुक्त रहता है। इसलिए एक ही भाव से अलग-अलग बातों का विचार करते समय पूरी सावधानी अपेक्षित है।

षष्ठ भाव का अध्ययन करते समय निम्न तथ्यों की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए।

१. छठा भाव और उसकी राशि।
२. छठे भाव में स्थित ग्रह।
३. छठे भाव पर ग्रहों की दृष्टि।
३. षष्ठेश (छठे भाव का स्वामी) के बैठने की राशि।
४. षष्ठेश के साथ बैठने वाले ग्रह।

यदि देखा जाय तो कुण्डली में मुख्यतः छठे भाव, षष्ठेश और मंगल को मुख्य विचारणीय बिन्दु बनाना चाहिए। इन तीनों का अध्ययन कर शुभाशुभ फल निर्देश करना ही उचित होता है।

आगे के पृष्ठों में छठे भाव की राशि से जो फल उत्पन्न होता है, उसका स्पष्टीकरण किया जा रहा है।

षष्ठ भाव गत राशि फल

मेष—यदि छठे भाव में मेष राशि हो तो जातक का स्वभाव दुष्टतापूर्ण होता है। यद्यपि वह परिश्रमी होता है, परन्तु फिर भी चुगली खाना, अफसरों के कान भरना आदि उसका स्वभाव होता है।

वृष—यदि छठे भाव में वृष राशि हो तो जातक की संतान विद्रोही होती है। उसके तथा उसकी पत्नी के विचारों में असमानता रहती है तथा वह खिन्न हृदय घूमता रहता है।

मिथुन—मिथुन राशि छठे भाव में हो तो जातक का गार्हस्थ्य जीवन कलहपूर्ण होता है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार की ओर उसका झुकाव अधिक होता है। आर्थिक दृष्टि से वह बार-बार हानि उठाता है।

कर्क—छठे भाव में कर्क राशि हो तो जातक पुत्रों से अत्यधिक प्रेम करने के कारण दूसरों व अकारण झगड़ा मोल लेता रहता है। न तो वह स्वयं आराम करता है और न अपने अधीनस्थ सम्बन्धियों अथवा कर्म-

चारियों को आराम करने देता है।

सिंह—यदि षष्ठ भाव की राशि सिंह हो तो जातक क्रोधी और कामुक होता है। परस्त्री के सम्पर्क से वह हानि उठाता है, गृह कलह रहती है तथा सन्तान का उसे स्वल्प सुख ही मिलता है।

कन्या—कन्या राशि में छठा भाव हो तो वह व्यक्ति वीर साहसी एवं बलवान होता है। शत्रु उसके नाम से थर्राते हैं, परन्तु ऐसा व्यक्ति कामुक भी होता है। हल्के स्तर की स्त्रियों के सम्पर्क में रहने के कारण आर्थिक हानि भी सहन करता है।

तुला—छठे भाव में यदि तुला राशि हो तो वह व्यक्ति धनवान होता है, परन्तु साथ ही साथ वह नास्तिक स्वभाव का होता है। स्वार्थ की मात्रा कुछ विशेष होती है।

वृश्चिक—जिस जातक की कुण्डली के छठे भाव में वृश्चिक राशि होती है, वह मंद भाग्य वाला होने के साथ-साथ कठोर परिश्रमी होता है। परिश्रम के बल पर वह वर्तमान एवं भविष्य को अपने अनुकूल बना लेता है। ऐसा व्यक्ति कामुक एवं विलासी भी होता है।

धनु—यदि छठे भाव में धनु राशि हो तो जातक निर्धन होता है। आजीविका के लिए उसे कठोर परिश्रम करना पड़ता है। मेहनत करना, परिश्रम के बल पर निरन्तर उन्नति करते रहना ही उसका स्वभाव होता है। वह जीवन में किसी विधवा स्त्री से सम्पर्क स्थापित कर भी द्रव्य प्राप्त करता है।

मकर—जिसके छठे भाव में मकर राशि हो, वह निस्संदेह गरीबी का जीवन व्यतीत करता है। आय की अपेक्षा व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है। संगति रोग ग्रस्त रहती है, जिसके कारण भी व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है। मित्रों से, पुत्रों से तथा पत्नी से उसका स्वभाव मेल नहीं खाता।

कुम्भ—जिस जातक के छठे भाव में कुम्भ राशि होती है, उसकी अधिकारियों से शत्रुता रहती है तथा परस्पर वाद-विवाद होता रहता है। बचपन में उसे जलघात होती है तथा ४१ वें वर्ष में भी जल में डूबने का खतरा रहता है। ऐसा व्यक्ति नौसेनिक तथा जहाज पर काम करने वाला हो सकता है।

मीन—जिसके षष्ठ भाव में मीन राशि हो, उसका पुत्रों से झगड़ा रहता है तथा न्यायालय में व्यय होता रहता है। स्त्री से भी उसकी कम

स्ती तथा जातक जीवन में रिक्तता का अनुभव करता है।

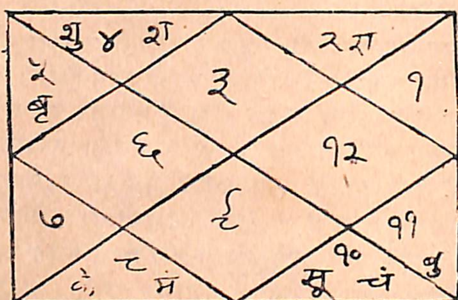
नीचे षष्ठ भाव स्थित ग्रहों में से प्रत्येक ग्रह एवं उसका शुभाशुभ का वर्णन कर रहा हूँ।

सूर्य—जिस जातक की जन्म कुण्डली के छठे भाव में सूर्य हो वह कुशल राजनीतिज्ञ, समय को पहचानने वाला, सोच-विचार कर कार्य करने वाला तथा प्रसिद्धि प्राप्त जातक होता है। यद्यपि इस प्रकार के जातक का स्वास्थ्य उत्तम कोटि का नहीं कहा जा सकता तथापि वृद्धावस्था में से लम्बी बीमारी भुगतनी पड़ती है। यह व्यक्ति योगाभ्यास में रत, अपने परिवार का कल्याण करने वाला, भाइयों की सहायता करने वाला बन्धु-बांधवों में पूज्य एवं पूर्ण गृहस्थ-सुख प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति कुशल प्रशासक होता है। यद्यपि इसके शत्रु होते हैं, जो कि पीठ पीछे कुचक्र रचते रहते हैं, परन्तु सामने आकर कहने की उनकी हिम्मत नहीं होती। ऐसा जातक पूर्ण परिश्रमी एवं धनवान होता है। 'सैल्फ मेड मैन' होता हुआ भी अर्थ संचय में निपुण होता है। वृद्धावस्था में इसके सीने में दर्द, हार्ट ट्रबल एवं रक्त सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

चन्द्र—जिस जातक की जन्म कुण्डली के छठे भाव में चन्द्र होता है वह बाल्यावस्था में विविध रोगों से ग्रस्त रहता है। मानसिक परेशानियाँ उसे हर समय घेरे रहती हैं। दुःखों को झेलते-झेलते वह सहिष्णु हो जाता है। मित्रों में वह सम्मान की दृष्टि से भी देखा जाता है, परन्तु यदि चन्द्र पूर्ण बली और वृष राशि का हो तो वह मानव को बहुत प्रकार से सुख प्रदान करने में समर्थ होता है।

मंगल—यदि मंगल छठे भाव में हो तो जातक युद्धस्थल में मृत्यु प्राप्त करता है अथवा शत्रुओं से संघर्ष करने में विजय लाभ करता हुआ ही मरण प्राप्त कर लेता है राजनीतिक क्षेत्र में ऐसा जातक पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। कठोर हृदय का यह व्यक्ति शत्रुओं एवं विपक्षियों का काल होता है। तथा हर संभव प्रयत्न से ऊपर उठने का प्रयत्न करता है। शत्रु उसके नाम से थर्राते हैं। यदि मंगल मकर राशि का होकर छठे स्थान पर पड़ा हो तो जातक पूर्ण गृहस्थ जीवन भोगता है तथा ऐश-आराम से जीवन व्यतीत करता है। ऐसा व्यक्ति उच्चस्तरीय अधिकारी, शासक या मंत्री होता है। यदि मंगल शत्रु ग्रहों द्वारा देखा

जाता है तो जातक का ऐक्सीडेन्ट होता है तथा अंगभंग होता है। यदि शनि मंगल एक साथ छठे घर में बैठे हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि



चुग़ुल का वीर—कृपालसिंह

न हो तो व्यक्ति की मृत्यु पशु से कुचलने जाने के कारण होती है अथवा ऑपरेशन के समय मृत्यु हो जाती है यदि छठे घर में राहु तथा मंगल बलवान होकर स्थित हों तो व्यक्ति आत्महत्या करता है तथा सम्बन्धियों को दुःख देने वाला होता है। यदि कर्क का भौम छठे भाव में हो तो जातक पाप कर्म में रत रहता है।

बुध—यदि छठे भाव में बुध हो तो जातक चिड़चिड़ा एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। दूसरे की सलाह पर बिना ध्यान दिये उसके दिल में जो जँचती है, वही कार्य करता है। शिक्षा अपूर्ण रहती है, मानसिक परेशानियों से ग्रस्त रहता है तथा प्रबल रूप से हीन भावना का शिकार होता है। जीवन के प्रत्येक कार्य का वह अन्धकार पक्ष ही देखता है अथवा निराशाजन्य स्थिति में रहता है। यदि छठे भाव में बुध, राहु तथा शनि के साथ होता है तो नौकर के विश्वासघात के कारण मारा जाता है। ऐसा व्यक्ति आलसी, निकम्मा, शत्रुओं से भयभीत रहने वाला एवं कायर होता है।

बृहस्पति—यदि छठे भाव में गुरु हो तो जातक अपने समाज एवं जाति में अपमानित होता है तथा निरन्तर व्यंग वाणों का शिकार रहता है। साथ ही ऐसा व्यक्ति आलसी, छिन्द्रान्वेषी एवं हाथ की सफाई दिखाने वाला होता है। शत्रुओं से भयभीत रहने वाला ऐसा व्यक्ति अभाग्यशाली ही होता है। तकदीर इससे निरन्तर छल करती रहती है तथा जीवन में

काफी विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य साधारण स्तर का होता है।

शुक्र—जिसकी कुण्डली के छठे भाव में शुक्र पड़ा हो, वह शत्रु रहित होता है। मित्रों से उसे हमेशा लाभ पहुँचता रहता है तथा प्रतिष्ठित कुल में जन्म लेकर वह विद्वान होता है। ऐसा व्यक्ति विलासी भी होता है तथा उसका चरित्र संदिग्ध कहा जा सकता है। यह स्वस्थ एवं सुन्दर स्त्रियों के प्रति आसक्त रहता है तथा स्त्रियों से सम्बन्धित कार्यों में ही लाभ उठाता है। यदि मीन राशि का शुक्र छठे भाव में हो तो व्यक्ति धनी, विद्वान एवं सम्मान-लाभ करने वाला होता है।

शनि—यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में छठे भाव में शनि हो, तो वह वीर, साहसी एवं लड़ाकू प्रवृत्ति का होता है। भोजन का शौकीन होता है तथा सुस्वादु भोजन के लिए लालायित रहता है। साहस, वीरता, दृढ़ता एवं सूझबूझ इसमें प्रचुर मात्रा में होती है। इसके अधीनस्थ कर्मचारी इसके लिए लाभदायक नहीं रहते, मित्रों की ओर से इसे धोखा खाना पड़ता है। यदि मंगल शनि के साथ छठे भाव में हो, तो पेट का आपरेशन होता है और इस दौरान इसकी मृत्यु हो जाती है। राहु तथा शनि का संयोग (स्त्री की कुण्डली में) हिस्टीरिया रोग उत्पन्न कर देता है। तुला का शनि यदि छठे भाव में हो तो जातक की सम्मान वृद्धि करता है तथा कुल-विस्तार में सहायक होता है।

राहु—छठे भाव में राहु बैठकर जातक की कठिनाइयों को सुगम कर देता है। शत्रुओं में वह सम्मान लाभ करता है। ऐसा व्यक्ति प्रबल रूपेण शत्रु संहारक तथा बलवान होता है। जातक की बहुत उम्र होती है, तथा धन लाभ भी श्रेष्ठ रहता है। पूर्ण सुख-सुविधा इस जातक को प्राप्त होती है। शत्रु निरन्तर इसके विरुद्ध षड्यत्र करते ही रहते हैं। इसका मस्तिष्क अस्थिर रहता है तथा मानसिक परेशानियाँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती रहती हैं। यदि राहु उच्च राशि का होकर षष्ठ भाव में बैठा हो तो जातक निस्सन्देह परस्त्रीगामी होता है तथा गुप्तेन्द्रिय के रोग से पीड़ित रहता है। ये दो प्रकार का जीवन जीने वाले होते हैं।

केतु यदि छठे भाव में केतु हो तो जातक हठ का पक्का तथा निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने वाला होता है। मुँह पर स्पष्ट शब्दों में खरी-खरी कह देना इसका स्वभाव होता है। चरित्र सदिग्ध कहा जा सकता

है तथा ननिहाल से जातक को विशेष लाभ प्राप्त नहीं होता। यह शत्रुओं का नाश करने वाला, जीवन में सभी प्रकार के सुख भोगने वाला, स्वस्थ, सुन्दर तथा प्रसिद्धि प्राप्त जातक होता है। छठे भाव में पाप ग्रह ज्यादा शुभदायक एवं श्रेष्ठ माने गये हैं।

द्वादश भाव और मानव शरीर

छठे भाव की सूक्ष्मता को समझने के लिए यह आवश्यक है कि पाठक यह जानें कि कौन-कौन सी राशियाँ मानव के किन-किन अंगों से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार छठे भाव में जो राशि होती है, उससे सम्बन्धित मानव का अंग ही विशेष रूप से प्रभावित होता है। यदि छठे भाव की राशि शुभ है या शुभ ग्रहों से युक्त है, तो वह अंग ठीक रहेगा, परन्तु यदि वह राशि पाप ग्रहों से युक्त है तो वह अंग कमजोर एवं निर्बल बनेगा। इसी प्रकार अकारक षष्ठेश जब-जब जिन-जिन राशियों पर जायेगा, उन राशियों से सम्बन्धित अंग पीड़ित होंगे।

नीचे राशि एवं उससे सम्बन्धित अंग दिए जा रहे हैं—

क्रम संख्या	राशि	सम्बन्धित मानव अंग
१	मेष	सिर, चेहरा और मस्तिष्क।
२	वृष	गर्दन, गिल्टियाँ, गले का भीतरी भाग, कंठ।
३	मिथुन	कंधे और हाथ, फेफड़े, रक्त एवं मांस, भुजाओं की हड्डियाँ एवं रक्त
४	कर्क	सीना एवं छाती तथा पेट के भीतरी हिस्से, हंसली तथा छाती की हड्डियाँ
५	सिंह	पीठ एवं कमर, हृदय, रीढ़ की हड्डी
६	कन्या	लीवर, तिल्ली एवं गुर्दा, पीठ की छोटी-छोटी हड्डियाँ
७	तुला	चमड़ी
८	वृश्चिक	लिंग एवं भग, गुदा द्वार, जंघाएँ
९	धनु	कमर, नाड़ियाँ

१०	मकर	घुटने, हड्डियों के जोड़, घुटने की टोपी
११	कुम्भ	पाँव, टखने, पाचन संस्थान
१२	मीन	एड़ी, पंजा तथा पंजे के नीचे का भाग ।

ऊपर मैंने प्रत्येक राशि से सम्बन्धित मानव अंगों का मोटा-मोटा रूप स्पष्ट किया है। इसके अतिरिक्त शरीर के अन्य जो छोटे-छोटे भाग हैं, वे इनसे ही सम्बन्धित करके समझने चाहिएँ। जो भाग जिस राशि से सम्बन्धित हो उस राशि को ही शरीर के उस भाग का भी स्वामी समझना चाहिए। उदाहरणार्थ चेहरे का स्वामी मेष राशि है, तो कान, नाक, आँख होठ आदि अंगों को भी मेष राशि से ही सम्बन्धित समझना चाहिए।

अब मैं यह स्पष्ट करूंगा कि कौन-कौन से ग्रह शरीर के किन-किन अंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं—

क्रम संख्या	ग्रह	शरीर के भाग
१	सूर्य	हृदय रक्त, मस्तिष्क, स्त्रियों की बाँई तथा पुरुषों की दाहिनी आँख ।
२	चन्द्र	पुरुषों की बाँई तथा स्त्रियों की दाहिनी आँख। स्तन, आँतें, लसीका (Colour less liquid in the body)
३	मंगल	नाक, ललाट, पाचन संस्थान, स्नायु संस्थान ।
४	बुध	नाड़ियाँ, फेफड़े, जीभ, भुजायें, मुँह तथा केश ।
५	बृहस्पति	दाहिना कान, लीवर ।
६	शुक्र	हिचकी, ठोड़ी, वर्ण (रंग) बायाँ कान, गिल्टियाँ ।
७	शनि	हड्डियों के जोड़, हड्डियाँ, दाँत, घुटने, कफ ।

पाठकों को राशियों एवं ग्रहों से सम्बन्धित मानव-शरीर के अंगों का

ज्ञान हो गया होगा। जब षष्ठेश पापी या अकारक ग्रह हो और वह गोचर में भी पाप राशि पर स्थिर हो जाता है तो ऐसे समय में उस राशि से सम्बन्धित अंग को चोट पहुँचती है या एक्सीडेंट होता है। यह सम्भावना निम्न अवसरों पर घटित होती है—

१) षष्ठेश की दशा में
२) षष्ठेश की अन्तर्दशा में
३) सम्बन्धित राशि की दशा एवं अन्तर्दशा में ।

अब पाठकों की जानकारी के लिए प्रत्येक ग्रह(पापी या अकारक होने पर)से सम्बन्धित बीमारियों की जानकारी दे रहा हूँ। अर्थात् यदि निम्न ग्रह अकारक होकर षष्ठेष या षष्टस्थ हो जाते हैं तो उनकी दशा-अन्तर्दशा में निम्न बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं—

क्रम संख्या	ग्रह	बीमारियाँ
१	सूर्य	बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बीमारियाँ, आँखों की बीमारी, चर्मरोग, घाव, जलना, दौरे पड़ना, हिस्टीरिया आदि, आदि।
२	चन्द्र	अनिद्रा, कफ सम्बन्धी बीमारियाँ, पाचन-संस्थान का बिगड़ना, अजीर्ण, ठंडा बुखार, गठिया, मानसिक असंतुलन, पेट की बीमारियाँ, जलघात, जानवरों का हमला।
३	मंगल	गले की बीमारी, कण्ठ रोग, खून-विकार, गठिया, बुखार, आगजनी, जहर, आँखों की बीमारी, दौरा पड़ना, बेरी-बेरी रोग, सिर दुखना, रक्त संबंधी बीमारियाँ आदि।
४	बुध	दिमागी फितूर, नाक-कान की बीमारी बात संबंधी कठिनाई, पित्त-भेद, चमड़ी के रोग, कोढ़, जहर, ऊँचाई से, गिरना।

५	बृहस्पति	पेट में गैस रहना, बुखार, कान से मवाद गिरना, वायुयान दुर्घटना।
६	शुक्र	कोढ़, वात, पित्त, कफ संबंधी बीमारी वीर्य विकार, नेत्र-पीड़ा, मूत्र-पीड़ा, गुदा रोग, गर्भाशय संबंधी कठिनाइयाँ कमजोरी एवं पेडू का दर्द।
७	शनि	पेट एवं पैरों की बीमारियाँ, गैस, पेड़ से गिरना, पत्थर से चोट आना।
८	राहु	दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर देना व लेना, आत्महत्या, पाचन संस्थान संबंधी बीमारियाँ।
९	केतु	घाव पड़ना, घाव का सड़ जाना, जलना एवं राहु से संबंधित बीमारियाँ।

जब-जब भी षष्ठेश या अकारक ग्रह बलवान होंगे या षष्ठेश का इन ग्रहों में से किसी भी ग्रह के साथ संबंध होगा, तब-तब इन ग्रहों से संबंधित बीमारियाँ मनुष्य को पीड़ित करेंगी।

अब मैं राशियाँ एवं उनसे सम्बन्धित बीमारियों का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

क्रम संख्या	राशियाँ	सम्बन्धित बीमारियाँ
१	मेष और वृश्चिक	नेत्र संबंधी बीमारियाँ, बुखार, घाव, चमड़ी कट जाना एवं जल जाना।
२	वृष और तुला	स्वादहीनता, शर्करा की कमी, गुप्तेन्द्रिय संबंधी बीमारियाँ, ठंडा बुखार आदि।
३	मिथुन और कन्या	दाद, नाक एवं चमड़ी से सम्बन्धित बीमारियाँ।
४	कर्क	शर्करा का आधिक्य, मुँह में छाले पड़ना, जीभ सम्बन्धी बीमारी, दिल का दौरा पड़ना आदि।

५	सिंह	नेत्र-पीड़ा, आँखों का ऑपरेशन एव पेट सम्बन्धी बीमारियाँ ।
६	धनु और मीन	कर्ण पीड़ा, स्मरण शक्ति लुप्तता, चेतनाहीनता, मस्तिष्क में विकृति आना, पेट में गैस उत्पन्न होना एवं जोड़ दुखना तथा हाथ-पैर टूटना या हाथ-पैरों से पसीना निकलना ।
७	मकर और कुम्भ	पेशाब सम्बन्धी बीमारी, पेशाब बंद हो जाना, शरीर में गर्मी का बढ़ जाना, घाव पड़ना, पीव पड़ना, नाक में घाव होना, जोड़ों में दर्द होना आदि-आदि ।

पिछले पृष्ठों में हमने राशि एवं उनसे सम्बन्धित बीमारियाँ तथा ग्रह एवं उनसे सम्बन्धित बीमारियाँ स्पष्ट कीं, परन्तु ज्योतिष-प्रेमियों को कुछ अन्य बातों का भी ध्यान रखना चाहिए जो कि नीचे दी जा रही हैं।

इस छोटी-सी पुस्तक में यह तो सम्भव नहीं है कि छठे भाव का विस्तृत वर्णन किया जाय, परन्तु यह निश्चित है कि षष्ठ स्थान, षष्ठेश की दृष्टि, कारक-अकारक ग्रह और दशा का अध्ययन कर जातक की भूत काल में घटी बीमारियों आदि का स्पष्टीकरण किया जा सकता है, साथ ही भावी जीवन में कब-कब कैसी-कैसी बीमारियाँ होंगी, एक्सीडेंट होगा या नहीं, होगा तो किस तारीख और महीने में ? कहाँ और किससे एक्सीडेन्ट होगा, आदि बातों का स्पष्टीकरण किया जा सकता है। इसके लिए अभ्यास की ज़रूरत है। अपने अध्ययन एवं अनुभव के बल पर मैं यह कह सकता हूँ कि इस प्रकार से अध्ययन कर जो फलादेश किया जाता है, वह पूर्णतः सही और प्रामाणिक सिद्ध होता है।

षष्ठम भाव का अध्ययन करने के साथ-साथ ज्योतिषी बन्धुओं को चाहिए कि वे लग्न, सूर्य और चन्द्रमा का भी अध्ययन करें, क्योंकि लग्न जहाँ शरीराकृति स्पष्ट करता है, वहाँ चन्द्रमा मस्तिष्क से सम्बन्धित होने के कारण मस्तिष्क का संचालन करता है। इसी प्रकार सूर्य का सीधा सम्बन्ध आत्मा से है तथा आत्मा एवं हृदय को संचालित करने वाला प्रधान

ग्रह सूर्य ही है। यदि कुण्डली में चन्द्रमा और सूर्य बलवान होंगे तो यह स्वाभाविक ही है कि सम्बन्धित जातक का मस्तिष्क स्वस्थ और हृदय मजबूत है। ऐसा व्यक्ति आत्महत्या नहीं कर सकता, परन्तु यदि आत्महत्या से संबंधित ग्रह इनसे भी बलवान होकर अकारक बन जाता है तो आत्महत्या भी संभव है।

यह स्थिति षष्ठेश की दशा में सम्बन्धित ग्रह की भुक्ति अवस्था में होगी, परन्तु साथ ही साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक ग्रह की एक विशिष्ट ऋतु है और उस ऋतु में वह ग्रह निर्बल होते हुए भी बलवान हो जाता है। पाठकों की जानकारी हेतु प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित ऋतु का स्पष्टीकरण कर रहा हूँ।

क्रम संख्या	ग्रह	सम्बन्धित ऋतु
१	सूर्य	ग्रीष्म
२	चन्द्र	वर्षा
३	मंगल	ग्रीष्म
४	बुध	शरद्
५	बृहस्पति	हेमन्त
६	शुक्र	वसन्त
७	शनि	शिशिर

समय-संकेत

कष्ट, पीड़ा एवं बीमारी के अध्ययन के बाद यह जानना शेष रहता है कि यह कष्ट कब घटित हो सकता है? इसके लिए छात्रों को निम्न तथ्य ध्यान में रखने चाहिएँ—

१. षष्ठेश
२ षष्ठेश की राशि
३. षष्ठम स्थान
४. षष्ठम ग्रह
५. षष्ठ भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह
६. षष्ठेश जहाँ बैठा है, वह भाव और उसका स्वामी तथा उसका एवं षष्ठेश का सम्बन्ध।
७. सूर्य, चन्द्रमा एवं मंगल की स्थिति।
८. अष्टम एवं द्वादश स्थान।
९. कारक-अकारक ग्रह।

मुख्यतः षष्ठेश की दशा या भुक्ति में अथवा सम्बन्धित प्रत्येक ग्रह की दशा में बीमारी आदि घटित होती है।

षष्ठ भाव से सम्बन्धित विशेष योग

(१) षष्ठेश और बुध राहु के साथ होकर लग्नेश से संयोग करता हो तो जातक नपुंसक होता है।

(२) मंगल, लग्नेश के साथ छठे भाव में हो तो घाव से लिंग में रोग हो।

(३) गुरु छठे भाव में या केतु छठे भाव में कारक ग्रह बन कर शुभ फल प्रदान करता है।

(४) षष्ठेश बली होकर शुभग्रह हो तो जातक शत्रु हन्ता होता है।

(५) षष्ठेश और षष्ठस्थ ग्रह शुभ ग्रह हों और केन्द्र (१, ४, ७ १०) में हो तो साधारण रोगों का नाश करता है।

(६) षष्ठेश से युक्त अष्टम में पापग्रह हो तो जातक को बवासीर का रोग होता है।

(७) षष्ठेश से युक्त सूर्य ६,८ भावों में हो तो सिर के बाल झड़कर गंजापन हो जाता है।

(८) लग्नादि जिस राशि में राहु हो, शुक्र उसको देखता हो तो वह राशि शरीर के जिस भाग से सम्बन्धित होती है, उस भाग में व्रण होता है।

(९) शत्रु स्थान का मालिक बलहीन होकर पाप ग्रह से देखा जाता हो या पापग्रहों के बीच में हो तो शत्रुओं के साथ युद्ध करते जातक को मृत्यु होती है।

(१०) षष्ठेश द्वादश भाव में हो तो आँखों का आपरेशन होता है तथा नेत्रों की ज्योति कम होती है।

(११) षष्ठेश दुष्ट स्थान में हो तथा लग्नेश बली हो तो शत्रु का नाश करने में जातक समर्थ होता है।

(१२) षष्ठेश गोपुरांशादि में हो तथा उसको सूर्य देखता हो, साथ ही ही लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक निरोगी, वीर एवं शत्रु हन्ता होने के साथ-साथ सद्कार्यों के लिये विख्यात होता है।

सप्तम भाव

कुण्डली के बारहों भाव की रचना महर्षियों ने बहुत सोच-विचार कर की है, लेकिन संसार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—मानव के स्वयं का अस्तित्व। यदि वह स्वयं नहीं है तो फिर संसार के सभी पदार्थ उसके लिए शून्य के बराबर हैं, इसलिए लग्न का आधार जातक को स्वयं ही माना है।

कुण्डली में चार केन्द्रस्थान हैं, जिन्हें सर्वाधिक महत्व दिया गया है। ये भाव हैं लग्न, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव और दशम भाव। जहाँ लग्न, मानव के स्वयं के व्यक्तित्व को स्पष्ट करता है, वहाँ, यदि उसके बराबर का सामने बैठने वाला व्यक्ति है—तो वह है पत्नी, सहचरी। जीवन में सुख-दुःख में, हर्ष-विषाद में समभागी अर्धांगिनी। इसलिए सप्तम भाव से पत्नी (स्त्री की कुण्डली हो तो पति) उसका स्वरूप, उसका व्यवहार, पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्ध, प्रेम आदि का अध्ययन किया जाता है। महर्षियों ने पिता की अपेक्षा माता को ऊँचा पद दिया है। जीवन में स्वयं तथा सहचरी के अतिरिक्त दो मुख्य बिन्दु और हैं। वे हैं— माता और पिता। माता-पिता का ऋण जातक पर सदा रहता है, क्योंकि उन्होंने ही जातक को संसार में साँस लेने के योग्य बनाया। इसमें भी माता का स्थान सर्वोच्च है। इसलिए माता का स्थान—चतुर्थ भाव रखा, जो जातक के बाद का स्थान है तथा दशम् भाव पिता को दिया गया।

वस्तुतः देखा जाय तो सप्तम भाव काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि कुण्डली में यदि सप्तम भाव न हो अथवा क्षीण हो तो जातक का जीवन अपूर्ण एवं एकांगी ही रह जायगा। इसलिए ज्योतिष के विद्यार्थियों को चाहिए कि वे सप्तम भाव का सूक्ष्मतम विवेचन करें और सावधानीपूर्वक निरीक्षण-परीक्षण करके ही फलादेश निर्देश करे।

सप्तम भाव का विवेचन करने के लिए निम्न तथ्यों का अवलोकन सावधानीपूर्वक करें—

१. सप्तम भाव
२. सप्तम भाव में बैठे ग्रह
३. सप्तम भाव का स्वामी

४. सप्तम भाव पर ग्रहों की दृष्टियाँ
५. सप्तमेश जहाँ बैठा हो, वह भाव
६. सप्तमेश पर ग्रहों का दृष्टियाँ
७. सप्तमेश एवं अन्य ग्रहों का दृष्टि सम्बन्ध
८. भाव दशा (विशेषतः सप्तम भाव दशा)
९. महादशा अन्तर्दशा आदि ।

सप्तम भाव से विचारणीय विषय

सप्तम भाव से मुख्यतः पत्नी, उसका स्वभाव, उसकी सच्चरित्रता, पातिव्रत्य, पत्नी जीवित रहेगी या नहीं, एक विवाह या बहु विवाह योग, पति-पत्नी का पारस्परिक सम्बन्ध, ससुराल, ससुराल से धन-प्राप्ति, यात्रा, विदेश यात्रा, बाँझपन, पुत्रों का माता से सम्बन्ध, मारकेश आदि का विचार किया जाता है ।

अब मैं सप्तम भाव में स्थित राशियों का फलाफल स्पष्ट कर रहा हूं ।

मेष—यदि सप्तम भाव में मेष राशि हो तो जातक की पत्नी क्रूर स्वभाव की एवं क्रोधी होती है । बात-बात पर हठ करना, बात-बात पर रूठना, घर में अशान्ति बनाये रखना उसका स्वभाव होता है । यद्यपि ऐसी स्त्री गहराई से सोचने एवं तदनुरूप कार्य करने का हौंसला रखती है, परंतु फिर भी उसका दृष्टिकोण स्व के स्वार्थ से ऊपर नहीं उठ पाता । धन एवं आभूषण से ऐसी स्त्री का लगाव अत्यन्त ज्यादा होता है, इसकी यह स्वाभाविक इच्छा रहती है कि अधिक से अधिक आभूषण एवं आडम्बर का प्रदर्शन किया जाय । वैवाहिक जीवन मधुर होता है ।

वृष—जिस व्यक्ति के सप्तम भाव में वृष राशि होती है, उसे सुन्दर एवं गुणवान पत्नी प्राप्त होती है । नाक-नक्श तीखे और रूप पर गुमान करने वाली होती है । वार्तालाप करने में पटु एवं मधुर भाषी होती है, कलादि में वह निपुण होती है । सिलाई, कसीदा, चित्रकला, नृत्य, संगीतादि में उसकी सहज ही रुचि होती है, साथ ही उसे नित नये-नये व्यंजन बनाने का भी शौक होता है । ऐसी स्त्री भावुक, कामकला में प्रवीण एवं पतिवल्लभा होती है ।

मिथुन—यदि जन्मकुण्डली के सप्तम भाव में मिथुन राशि हो तो उसे सुशील एवं समझदार पत्नी प्राप्त होती है, यद्यपि वह अधिक सुन्दर

कही जा सकती, फिर भी नाक-नक्श उभरे और स्वच्छ होने के कारण आकर्षक अवश्य कहा जा सकता है। ससुराल मध्यवर्ग का होता है, पि श्वसुर से बहुत अधिक लाभ तो नहीं कहा जा सकता, फिर भी जातक के पक्ष में अवश्य होते हैं। उच्च विचारों वाली ऐसी स्त्री के लिए सौभाग्यशालिनी सिद्ध होती है। इसे सुन्दर कपड़े पहनने शौक होता है। अपने आप को सुन्दरतम रूप में उपस्थित करने की भाविक इच्छा इसके हृदय में होती है। सभी गुणों से युक्त ऐसी त्री जीवन में सफल कही जा सकती है, परन्तु कामकला में यह कठोर ती है। अतृप्त इच्छा रखती हुई यह स्त्री जीवन में सफल उतरती है।

कर्क—जिस जातक की कुण्डली के सप्तम भाव में कर्क राशि होती , उसकी स्त्री अत्यन्त सुन्दर होती है। लम्बी, छरहरी, तीखे नाक-नक्श ाली तथा सुन्दर मधुर स्वभाव वाली ऐसी स्त्री सहज ही सबका मन ोह लेती है। यह स्त्री अत्यन्त भावुक होती है। कठोरता अथवा रूखे न से इसे वश में नहीं किया जा सकता, इसके विपरीत भावनाओं के द्वारा इसे नियंत्रण में लाया जा सकता है। सरल चित्त की ऐसी स्त्री ल्पनाप्रिय होती है तथा हवा में महल बनाना, व्यर्थ का प्रदर्शन करना आदि इसका स्वभाव होता है। जीवन की कठोर वास्तविकताओं को यह झेल नहीं पाती। आभूषणों से अत्यन्त प्रेम करने वाली, सुन्दर वस्त्रों की इच्छुक यह स्त्री सौभाग्यशालिनी होती है।

सिंह—जिस जातक की कुण्डली के सप्तम भाव में सिंह राशि हो, उसे क्रोधी स्वभाव की पत्नी मिलती है, साथ ही वह तुनक मिजाज भी होती है। जरा-सा भी कार्य यदि उसकी इच्छा के अनुरूप नहीं होता है, तो वह रूठ जाती है, क्रोधित हो जाती है अथवा कलह से घर के वाता-वरण को विषाक्त बना देती है। शृंगार करने का न तो इसे अधिक चाव होता है और न व्यवस्थित रूप से अपने आप को सजा ही सकती है। मित्रों की पार्टियों में वह एक रस-सी न होकर, अलग-अलग-सी दिखाई देती है। ऐसी औरत साहसी होती है तथा विपत्ति के समय भी धैर्य को अक्षुण्ण बनाये रखती है। धन का इसे विशेष मोह होता है, तथा आभूषणप्रियता इसका स्वभाव कहा जा सकता है। मानव मन को को परखने में यह प्रवीण होती है तथा समय के अनुरूप अपने आपको ढालने में यह चतुर होती है। मस्तिष्क से यह स्वस्थ एवं बुद्धिमान कही

जा सकती है।

कन्या—जिस कुण्डली के सप्तम भाव में कन्या राशि हो, उसे सुन्दर एवं सुशील पत्नी मिलती है। कोमलांगी, लज्जाशील, मधुरभाषी एवं सौभाग्ययुक्त ऐसी स्त्री घर में सम्पदा बढ़ाती है। इस स्त्री के संतान देरी से होती है, फलस्वरूप संतान की चिन्ता से पीड़ित रहती है। हँसमुख स्वभाव की ऐसी स्त्री सत्य बोलने वाली, पति को सत्पथ पर ले जाने वाली तथा नीति एवं मर्यादायुक्त बात कहने वाली होती है। शृंगार इसे प्रिय होता है तथा साधारण शृंगार से ही उसका रूप खिल उठता है। यद्यपि इसे धन की लालसा रहती है, तथापि यह लालसा उसके अन्य सद्‌गुणों पर हावी नहीं होती। दृढ़ चित्त वाली ऐसी स्त्री संकटों एवं बाधाओं में पति का साथ देने वाली होती है।

तुला—जिस पुरुष के सप्तम भाव में तुला राशि हो, उसे सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित पत्नी मिलती है। तीखे नाक-नक्श, गौर वर्ण एवं चुम्बकीय मुस्कुराहट से युक्त ऐसी स्त्री सहज ही लोगों का ध्यान आकर्षित करती है। धार्मिक कार्यों में इसको रुचि होती है तथा व्रतादि करने एवं दान-पुण्य करने में तत्पर रहती है। ऐसी स्त्री उदार स्वभाव की होती है। उसके सम्पर्क में जो भी आता है, नियमानुकूल वह प्रत्येक की सहायता करने को तत्पर रहती है। जीवन में संघर्ष यह देख सकती है तथा पति के लिए सच्ची सहायिका सिद्ध होती है। ऐसी स्त्री आभूषण-प्रिय एवं विलासी स्वभाव की होती है। इत्र, सेंट आदि सुगन्धित पदार्थों की प्रशंसिका होती है। अपने मकान की सजावट पर विशेष ध्यान देती है तथा कठोर परिश्रम करने वाली होती है। इसे संतान सुख भी श्रेष्ठ कहा जा सकता है।

वृश्चिक—जिस जातक की जन्मकुण्डली में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि होती है, उसकी स्त्री अल्प शिक्षिता या निरक्षर होती है। न तो इसे कलाओं में रुचि होती है और न कलादि का ज्ञान ही होता है। भाग्य भी इसका साथ नहीं देता। बाल्यावस्था से ही इसे जीवन की कठोर वास्तविकताओं का सामना करना पड़ता है तथा जो भी कार्य करना चाहती है, उसमें कुछ न कुछ बाधा उपस्थित हो ही जाती है। सिर-पीड़ा एवं उदर पीड़ा के रोग कहे जा सकते हैं।

धनु—जिस जातक की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में धनु राशि

होती है, उसकी स्त्री अहंकारी एवं गर्वीली होती है। उसके सम्मान को जरा-सी भी ठेस लगती है तो वह साँपिन-सी फुफकार उठती है। ऐसी स्त्री सुन्दर, अल्पशिक्षित तथा कलादि में रुचि लेने वाली होती है। यद्यपि जातक को धनी ससुराल नहीं मिलती, फिर भी श्वसुर जीवन के आर्थिक पक्ष में कमोबेश सहायक ही होता है। अच्छी एवं सद्‌गुणी पुत्रों को उत्पन्न करने वाली ऐसी स्त्री सौभाग्यसूचक मानी जा सकती है।

मकर—जिस जातक की कुण्डली में सप्तम भाव में मकर राशि हो, उसकी स्त्री अल्पशिक्षिता होती है। शृंगार पर विशेष ध्यान देती है तथा आभूषण उसके सर्वाधिक प्रिय पदार्थ होते हैं। आभूषणों की तीव्र इच्छा उसके हृदय से समाप्त ही नहीं होती। क्रोधी स्वभाव की ऐसीस त्री टोने-टोटकों पर भी जरूरत से ज्यादा विश्वास करती है लेकिन अपने सम्मान की सुरक्षा यह प्राण देकर भी करती है। व्यंग इसे सहन नहीं होता तथा जो भी इसके अहं को ठेस पहुँचता है, उसके प्रति यह भयंकर बन जाती है। वैर यह भूलती नहीं और समय पड़ने पर वैर निकाल लेती है।

कुम्भ—जिस जातक की जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में कुम्भ राशि हो, उसकी स्त्री संघर्षशील एवं विपत्तियों का दृढ़ता से सामना करने वाली होती है। ईश्वर से डरने वाली यह स्त्री अपने से बड़ों पर श्रद्धा रखने वाली होती है। पुण्य कार्य में इसकी सहज रुचि होती है तथा प्रत्येक की यथाशक्ति सहायता करना इसका स्वभाव होता है। इस स्त्री में अहंकार की भावना भी प्रबल होती है। यह जाहती है कि यह जो कुछ भी कहे, लोग उसे मानें, इसके विचारों को प्राथमिकता दें। सुन्दर, सुशील एवं गुणवान यह स्त्री श्रेष्ठ संतान को जन्म देने वाली होती है।

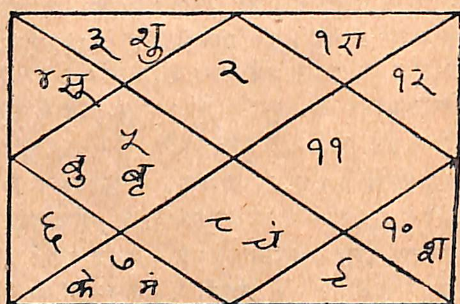
मीन—जिस जातक की कुण्डली के सप्तम भाव में मीन राशि होती है, उसकी स्त्री अपने धर्म में कट्टर होती है। दान-पुण्य में भी इसकी सहज ही आस्था होती है। यद्यपि इसका बर्ण उज्जवल तो नहीं कहा जा सकता, फिर मी यह सुन्दरी कही जा सकती है। यह स्त्री अत्यन्त चंचल होती है। चपलता इसका प्रधान गुण है। समय एवं स्थिति के अनुसार उत्तर देने में यह पटु होती है। तैराकी में यह सफल हो सकती है अथवा स्नान का इसे विशेष शौक होता है। गुणवान पुत्रों को उत्पन करने में समर्थ ऐसी स्त्री भाग्यवर्धक कही जा सकती है।

सप्तम भाव स्थित राशि-विवेचन के उपरान्त, अब मैं सप्तम भाव

स्थित ग्रहों से निष्पन्न शुभाशुभ फल स्पष्ट कर रहा हूँ।

सूर्य—जिस जातक की कुण्डली के सप्तम भाव में सूर्य होता है, उसे सुन्दर, शिक्षित एवं सुशील पत्नी प्राप्त होती है। स्त्रियों के साथ आनंद भोग करने की उसकी जन्मजात प्रवृत्ति होती है। वैवाहिक सुख क्षीण होता है। यदि सप्तम भाव पर अन्य शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक का विवाह दूसरी बार होता है। यह जातक चंचल होता है तथा विलासी स्वभाव का होता है। सुन्दर स्त्रियों के लिए वह असफल प्रयत्न करता ही रहता है, स्वभाव इसका क्रोधी होता है तथा शरीर कृश होता है। संतान सुख मध्यम स्तर का कहा जा सकता है तथा संतान बिलम्ब से होती है। एक, दो बार गर्भपात भी संभव है। प्रथम संतान के शरीर में विकार या न्यूनता भी संभव है। ऐसा जातक शीघ्र निर्णय लेने वाला नहीं होता। क्रोधावेश या उतावलेपन में पहले तो काम बिगड़ लेता है, पर बाद में वह पछताता रहता है। स्त्री के साथ उसके सम्बन्ध मधुर नहीं रहते। विचारों में भी मतभेद रहता है तथा स्त्री भी क्रोधी स्वभाव की होती है।

चन्द्र—जिस जातक के जन्म समय में सप्तम भाव में चन्द्र हो, उसे स्त्री (स्त्री की कुण्डली हो तो पति) का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता है। यद्यपि जातक सुन्दर, सुशिक्षित एवं सुशील होता है, भाग्य भी उसके साथ होता है तथा लग्न पर दृष्टि पड़ने के कारण रूप भी सुन्दर होता



एक स्त्री की कुण्डली, जो विवाहोपरान्त एक सप्ताह में ही विधवा हो गई।

परन्तु जहाँ तक सप्तम भाव का सम्बन्ध है, यह योग अच्छा नहीं जा सकता ।

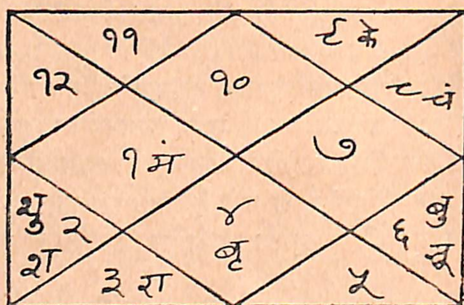
पाठक पृष्ठ ११० पर कुण्डली को ध्यानपूर्वक देखें । दाम्पत्य-सुख म भाव एवं शुक्र से देखा जाता है। सम्बन्धित कुण्डली में चंद्रमा सप्तम में शत्रु क्षेत्री होकर पड़ा है,साथ ही सप्तमेश मंगल ने षष्ठ भाव में कर केतु के साथ गठबंधन कर लिया है, फलस्वरूप मारक-सा हो गया । चन्द्र भी नीच राशि का होने से अकारक है, साथ ही सप्तम भाव पर सी भी शुभ ग्रह की दृष्टि भी नहीं है, अतः यह स्पष्ट है कि कुण्डली सप्तम भाव सर्वाधिक हल्का है तथा कुण्डली में दाम्पत्य-जीवन न है ।

मंगल—जिस मनुष्य की कुण्डली में सप्तम भाव में मंगल हो, उसे स्त्री मिलती है, वह दुर्बुद्धि एवं कलहप्रिय होती है। यदि मंगल सप्तम व में नीच राशि या शत्रु क्षेत्री अथवा अष्टमेश होकर बैठा हो तो तक की एक से अधिक शादियाँ होती हैं, परन्तु यदि सप्तम भाव में ल स्वराशि का होकर पड़ा हो जातक स्त्री के कारण दुःखी रहता है या उसका दाम्पत्य जीवन भी साधारण स्तर का होकर रह जाता है ।

बुध—जिस जातक के सप्तम भाव में बुध होता है, वह जातक भाग्यशाली होता है, उसे सुन्दर एवं सुशिक्षित पत्नी मिलती है तथा दि में निपुण ऐसी स्त्री दूरदर्शी होती है। पति के प्रत्येक कार्य में का सहयोग रहता है । यह स्त्री धन संचय करने की इच्छुक होती है, था आभूषणप्रियता इसका स्वभाव होता है। शृंगार एवं सजावट पर यह व्यय करती है । राजनीतिक क्षेत्र में भी यह स्त्री सफल कही जा ती है। कुल मिलाकर जातक पत्नी की ओर से सन्तुष्ट ही रहता है ।

बृहस्पति—जिस कुण्डली के सप्तम भाव में गुरु होता है, वह व्यक्ति ल एवं समझदार स्त्री पाता है। मानवीय गुणों से विभूषित ऐसी बहु सन्तानवती होती है । व्यक्ति का स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा राजा के तुल्य सुख प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति गजेटेड आफिसर होता । विद्वान, कलाप्रिय एवं गुणज्ञ ह ता है। पृष्ठ ११२ पर कुण्डली एक शासकीय महिला अधिकारी की है, पति भी उच्च पद पर स्थित है ।

पाठक देखें कि सप्तम भाव में गुरु उच्च राशि का होकर स्थित है, फलस्वरूप सुन्दर एवं कुलीन पति मिला, परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह



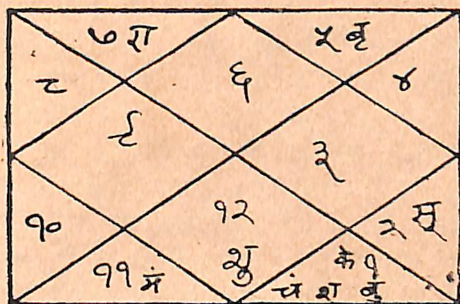
एक प्रशासकीय महिला अधिकारी की कुण्डली

भी है कि इससे अठारह सन्तान हुईं, जिसमें से नौ अभी तक जिन्दा हैं। इस वहपुत्रीवती होने का कारण यह है कि जहाँ सप्तम भाव मजबूत है जिसके कारण वलवान स्वस्थ एवं सुन्दर पति मिला, वहाँ पंचम स्थान का स्वामी शुक्र भी अपनी राशि में ही है तथा चन्द्रमा की उच्च दृष्टि शुक्र योग प्रधान ग्रह है, फलस्वरूप शुक्र ने मजबूत होकर बहुपुत्र योग निर्मित किया, परन्तु शनि भी शुक्र के साथ पड़ा है तथा लग्नेश होकर सप्तम भाव पर दृष्टि रखता है। इसके अतिरिक्तत शनि द्वितीयेश होकर मारक बना भी जिसके कारण इस स्त्री की आँखों के सामने नौ संतान मर गईं। फिर भी गुरु, शुक्र बलवान हैं, जिनके कारण सन्तानाभाव नहीं रहा।

शुक्र—जिस जातक की जन्मकुण्डली में सप्तम भाव में शुक्र होता है, वह जातक भावुक, कल्पनाशील, सरल हृदय, सुन्दर, गौरवर्ण एवं धन-वान स्त्री प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति प्रसन्नचित रहता है एवं गुणवान पुत्रों को जन्म देने में समर्थ होता है।

अब मैं पाठकों का ध्यान एक ऐसी कुण्डली की ओर आकर्षित कर रहा हूँ जिसका जातक गरीब है और अभी तक, उम्र भर गरीबी का ही जीवन व्यतीत करता जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में शून्य है। निर्धन कुल में जन्म लिया और ऊँट पर पानी लाद-लाद कर लोगों के घर पहुँचाता

ग्रौर कठिनता से जीवन निर्वाह करता रहा, परन्तु भाग्यवश इसका विवाह लखपति पिता की सुन्दरतम सुशील कन्या से हुग्रा तथा कई सन्तानें हुई। जातक विवाहोपरान्त भी पानी भरकर ही निर्वाह कर रहा है।



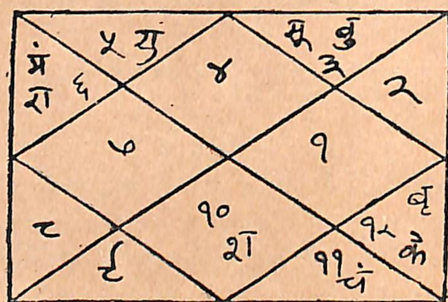
एक ऐसे व्यक्ति की कुण्डली, जो पूर्णतः दरिद्र रहा, पर
उसका विवाह लखपति पिता की सुन्दर लडकी से हुग्रा

पाठक स्वयं उपरोक्त कुण्डली देखें तो उन्हें ग्राश्चर्य नहीं होगा। पाठक देखेंगे कि लग्नेश बुध, ग्रायेश चन्द्र तथा शिक्षा का स्वामी (पंचमेश) शनि तीनों ग्रष्टम भाव में हैं। ग्रतः यह स्पष्ट है कि जातक का न तो व्यक्तित्व है, न उच्चकुलीन परिवार, न उसके ग्राय के मजबूत स्त्रोत हैं ग्रौर न शिक्षा का कोई हेतु। फलस्वरूप यह स्वाभाविक ही है कि जातक एक ग्रत्यन्त साधारण स्तर का पुरुष हुग्रा, जो सर्वथा निरक्षर रहा, परन्तु पाठक देखेंगे कि सप्तम भाव में मीन राशि का शुक्र है, जो कि उच्च का होकर केन्द्रस्थ है, जिसने जातक का दाम्पत्य जीवन उच्च-स्तर का बनाया, साथ ही शुक्र भाग्यस्थान का भी स्वामी है एवं धन भाव का भी स्वामी है। चूँकि भाग्येश एवं धनेश उच्च का होकर सप्तम में पड़ा तो सिद्ध हो गया कि इसका भाग्य ससुराल से वनेगा तथा वहीं से धन प्राप्ति होगी।

सप्तम भाव में शुक्र होने से जातक को ग्रत्यन्त सुन्दर ग्रनिंद्य पत्नी मिली ग्रौर साथ में गहरा दहेज भी प्राप्त हुग्रा, मुफ्त में उच्च स्तर का भवन प्राप्त हुग्रा तथा सारी सुख-सुविधाएँ शुक्र के कारण ही उपलब्ध हुई। पाठकों को चाहिए कि वे इसी प्रकार सूक्ष्म विवेचन से कुण्डली ग्रध्ययन

करें। उपर्युक्त जातक का विवाह शुक्र की महादशा में बुध के अन्तर में सम्पन्न हुआ।

शनि—जिस व्यक्ति के सप्तम भाव में शनि होता है, वह विशेषतः स्त्री सुख से वंचित रहता है। यदि शनि निर्बल हो या सप्तम भाव पर अन्य स्थानों पर बैठे शुभग्रहों की दृष्टि हो तो स्वल्प पत्नी-सुख प्राप्त होता है, परन्तु फिर भी पत्नी के कारण कलह अवश्य बनी रहेगी तथा वह दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनन्द न उठा सकेगा। यद्यपि जातक कठोर हृदय, उन्नति के कार्यों में तत्पर एवं राजनीति में पटु होता है, परन्तु यह सुख एकांगी ही कहा जा सकता है। पाठक नीचे श्री कामराज की कुण्डली का अध्ययन करें, वे देखेंगे कि सप्तम भाव में जो शनि बैठा है, वह स्वगृही है एवं अष्टमेश होकर मारक भी हो गया है। इस प्रकार वह पूर्ण बलवान मारक ग्रह बना और फिर सप्तम भाव में बैठा, जिसके फलस्वरूप शनि ने गृहस्थ जीवन पूर्णतः नष्ट कर दिया। इधर जाया कारक शुक्र भी दूसरे भाव में बैठकर मारक ही बना, अतः जाया कारक ग्रह भी निर्बल रहा। इसके साथ ही साथ सप्तम भाव पर किसी भी शुभग्रह की दृष्टि नहीं है।



श्री कामराज

राहु—यदि सप्तम भाव में राहु हो तो जातक को रोगिणी पत्नी मिलती है तथा धन-हानि कराती रहती है। यह स्त्री दुर्बुद्धि एवं संकीर्ण मनोवृत्ति की भी हो सकती है। यदि कोई सौम्य ग्रह उसको नहीं देखे रहा हो तो यह स्त्री विलासी प्रकृति की होती है, शृंगार में रुचि विशेष होती है तथा आभूषणप्रियता इसका स्वभाव होता है। ऐसा जातक भी

ग्यहीन ही कहा जायगा । बाल्यावस्था में इसे कठोर श्रम करना पड़ता है। साथ ही यह सदगुणों को लेकर चलने पर भी कदम-कदम पर बाधाओं का सामना करता है ।" जातक स्वस्थ, सुन्दर, साहसी एवं ईश्वर-भीरु होता है ।

केतु—जिस जातक के सप्तम भाव में केतु होता है, उसे निर्धन ससुराल मिलती है तथा स्त्री की ओर से चिन्ता बनी रहती है । यदि वृश्चिक राशि का केतु सप्तम भाव में हो तो जातक को ससुराल से सहायता मिलती है । यह व्यक्ति सफल सेल्समेन होता है, जीवन में इसे बहुत घूमना पड़ता है तथा आजीविका के लिए कठोर श्रम करना पड़ता है । ऐसे व्यक्ति के लिये जलघात या वृक्षपात् की आशंका रहती है । पैर में लंगड़ापन भी आता है या पैरों में कमजोरी रहती है । आय की अपेक्षा व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है तथा जातक परिश्रमी होता है । हिम्मत, साहस, प्रतिभा एवं परिश्रम के बल पर वह वर्तमान को अपने अनुकूल बनाने में समर्थ होता है ।

विवाह काल

अधिकांश लोगों का प्रश्न यह होता है कि अमुक कुण्डली वाले जातक का विवाह किस उम्र में होगा ? महर्षियों ने इसके बारे में कई मत प्रस्तुत किये हैं, जिनमें से अनुभूत मत इस प्रकार हैं ।

(१) लग्नेश और सप्तमेश की स्पष्ट राश्यादि के योग तुल्य राशि में जब गोचरीय बृहस्पति आता हो, तब उस जातक का विवाह-काल समझना चाहिए ।

(२) शुक्र और चन्द्रमा में से जो बली हो तथा जो दशा पहले आती हो उसकी महादशा और गुरु के अन्तर में विवाह-वेला समझनी चाहिए ।

(३) दशमेश की महादशा और अष्टमेश के अन्तर में विवाह समझना चाहिए ।

(४) सप्तमेश की महदशा में सप्तमभाव स्थित ग्रह की भुक्ति में भी विवाह होता है ।

(५) शुक्रयुक्त सप्तमेश की दशा भुक्ति विवाह कराने वाली है ।

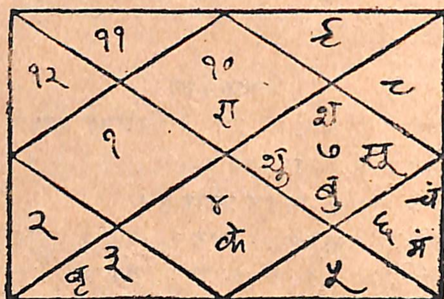
(६) सप्तममेश और शुक्र के ग्रह में जब चन्द्र तथा बृहस्पति हों,

तथा उससे केन्द्र में जब गोचर का गुरु आ जाय, तब निस्सन्देह विवाह काल समझना चाहिए।

ससुराल की दिशा

जातक का विवाह किस नगर में होगा या जहाँ जातक रहता है उससे किस दिशा में जातक की ससुराल होगी, इसके लिये शुक्र के स्थान से सप्तम भाव के स्वामी की जो दिशा होती है, उसी दिशा में जातक की ससुराल होगी, ऐसा मानना चाहिए।

उदाहरणार्थ प्रस्तुत कुण्डली में शुक्र तुला राशि में है, इससे आगे सात भाव गिनें तो मेष राशि आई, जिसका स्वामी मंगल है, चूँकि मंगल की दिशा दक्षिण है, अतः यह सिद्ध हुआ कि जातक का जन्म जिस नगर या गाँव में हुआ है, उससे दक्षिण दिशा में जातक की ससुराल होगी।



श्री पन्नालाल

परीक्षण के तौर पर उपर्युक्त विवाह समय एवं विवाह स्थान सही-सही उतरता है। अनुभव के पश्चात् ऊपर बताये नियमों को ध्यान में रक्खें तो जातक का विवाह समय सही-सही (तारीख तक) निकाला जा सकता है।

सप्तम भाव से सम्बन्धित विशेष योग

(१) सप्तम भाव में शुक्र, चन्द्र, बुध, गुरु ये सब या इनमें से जो भी ग्रह होता है, उस ग्रह के स्वभाव की स्त्री होती है।

(२) सप्तम भाव में मंगल हो और उस पर शनि की दृष्टि हो तो जातक का दूसरा विवाह अवश्य ही होता है।

(३) यदि सप्तमेश छठे भाव में पड़ा हो तो जातक की पत्नी चिर काल तक रोगिणी रहती है।

(४) मंगल और सप्तमेश दोनों सप्तम भाव में हों तो भी जातक की स्त्री रोगिणी रहती है।

(५) सप्तम भाव में बुध, शुक्र हो तो जातक को सन्तान का अभाव खटकता रहता है।

(६) सप्तमेश अष्टम भाव में हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु अवश्य समझनी चाहिए।

(७) लग्नेश और षष्ठेश पापग्रह से युक्त हों तो जातक कामी होता है।

(८) यदि पापग्रह षष्ठेश, धनेश और लग्नेश से युक्त होकर सप्तम भाव में हो तो जातक परस्त्रीगामी होता है।

(९) गुरु, बुध सप्तम में हों तो जातक का सम्बन्ध एक से ज्यादा स्त्रियों से होता है।

(१०) लग्न, सप्तम और द्वादश में पापग्रह हों तथा निर्बल चन्द्रमा पंचम भाव में हो तो जातक बाँझ स्त्री का पति होता है।

(११) शुक्र और सूर्य सप्तम भाव या लग्न में हों तो जातक की पत्नी वन्ध्या होती है।

(१२) सप्तम भाव में पापग्रह हो तो जातक की स्त्री दुराचारिणी हो, ऐसा समझना चाहिए।

(१३) सातवें भाव में मकर का गुरु हो तो उसे स्त्री का सुख अल्प ही मिलता है।

(१४) सप्तमेश उच्च राशि में होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो या कर्मेश उसे देखता हो तो जातक एकाधिक स्त्रियों का स्वामी होता है।

(१५) सप्तमेश केन्द्र में हो, शुभग्रह उसको देखता हो तो जातक की पत्नी सुशील एवं पतिभक्त होती है।

अष्टम भाव

लग्न से आठवाँ स्थान अष्टम भाव कहलाता है। इस भाव से उम्र, पुरस्कार, बिना कमाया हुआ धन, लाटरी, मृत्यु का कारण, मृत्यु का समय, अवनति, राज्यभंग तथा मृत्यु के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी मिलती है।

अष्टम भाव का विवेचन करते ससय निम्नलिखित तथ्यों का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए।

१. अष्टम भाव
२. अष्टम भाव का स्वामी
३. अष्टम भाव में बैठे ग्रह
४. अष्टम भाव पर बैठे ग्रहों की दृष्टि
५. अष्टमेश जहाँ पर बैठा है, वह राशि
६. अष्टमेश पर अन्य ग्रहों की दृष्टि
७. अष्टमेश का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध
८. भाव दशा
९. महादशा-अन्तर्दशा आदि

अष्टम भाव का विचार करने से पूर्व जहाँ अष्टम भाव पर ध्यान दिया जाय, वहाँ दूसरे भाव पर भी ध्यान दिया जाय, क्योंकि अष्टम स्थान मृत्यु का प्रथम श्रेणी का स्थान है तो अष्टम भाव से सप्तम यानी द्वितीय भाव भी मारक स्थान है, अतः वह भी मृत्यु ग्रह (द्वितीय श्रेणी का) माना जाता है।

इस प्रकार जहाँ अष्टम भाव मारक स्थान है, वहाँ द्वितीय स्थान भी। इसके अतिरिक्त शनि भी कुण्डली में मारकेश माना जाता है। अतः पाठकों को चाहिए कि वे अष्टमेश, द्वितीयेश और शनि-मारक प्रसंग में इन तीनों का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करें और इन तीनों में से जो सर्वाधिक बली हो, उसी की दशा में मृत्यु समझें।

अब मैं अष्टम भाव स्थित राशि के अनुसार शुभाशुभ फल विवेचन कर रहा हूँ।

मेष—जिसके अष्टम भाव में मेष राशि हो, वह व्यक्ति अधिकतर घर से दूर विदेश में रहने वाला तथा नींद में चलने या बकने की बीमारी

रखने वाला होता है। कई बार वह पिछली घटनाओं को स्मरण कर दुःखी भी होता है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न ऐसा जातक विदेश में मरता है।

वृष—अष्टम भाव में वृष राशि हो तो जातक को अंतिम दिनों में कफ की भयंकर वीमारी हो जाती है तथा बलगम के रुकने या सड़ जाने से मृत्यु हो जाती है। रात्रि में दुष्टों से संघर्ष करता या चतुष्पदों के सींगों से घायल होकर भी मृत्यु संभव है।

मिथुन—जिसके अष्टम भाव में मिथुन राशि हो, वह शत्रुओं से संघर्ष करता हुआ मारा जाता है। मृत्यु के समय ऐसे व्यक्ति को प्रमेह रोग या गुर्दारोग भी संभव है।

कर्क—जिस मनुष्य की कुण्डली के अष्टम भाव में कर्क राशि हो वह जल में डूबने से मरता है अथवा स्वगृह में शान्ति से मृत्यु लाभ करता है।

सिंह—जिस व्यक्ति के अष्टम भाव में सिंह राशि हो उसे जीवन में सर्प भय रहता है। सर्प के काटने से मृत्यु संभव है। चोरों से संघर्ष करते या हिंसक पशु के शिकार में भी मृत्यु संभव है।

कन्या—यदि अष्टम भाव में कन्या राशि हो तथा अष्टमेश षष्ठस्थान गत हो तो जातक सुजाक रोग से ग्रस्त होता है तथा व्याधि पीड़ा से मरता है। स्त्री की हत्या तथा बिषपान से भी आशंका रहती है। मृत्यु स्वगृह में ही होती है।

तुला—जिस व्यक्ति की कुण्डली में अष्टम भाव में तुला राशि हो, उसकी मृत्यु उपवास से होती है। क्रोधातिरेक में नुकसान होने से या युद्ध भूमि में भी मृत्यु संभव है।

वृश्चिक—यदि अष्टम भाव में वृश्चिक राशि हो तो जातक को अंतिम दिनों में रुधिर-विकार का सामना करना पड़ता है तथा चर्म रोग या विष के गलत प्रयोग से मृत्यु हो जाती है।

धनु—अष्टम भाव में धनु राशि हो तो उसकी मृत्यु घर में परिवार के बीच होती है। गुदा रोग या हृदय रोग भी संभव है। जलघात भी जीवन में देखने को मिलता है। ऐसा व्यक्ति शान्ति से मृत्यु का वरण करता है।

मकर—यदि अष्टम भाव में मकर राशि हो तो उसकी मृत्यु ईश्वर

का नाम लेते-लेते घर में पूर्ण परिवार के बीच होती है। मृत्यु के समय पुत्र उपस्थित होते हैं तथा बिना व्याधि के देहावसान होता है।

कुम्भ—यदि अष्टम भाव में कुम्भ राशि हो तो जातक को अग्निभय रहता है। वृद्धावस्था में उसे वायु-विकार भी हो जाता है तथा घावों के सड़ने से भी मृत्यु सम्भव है।

मीन—जिस जातक की कुण्डली में अष्टम भाव में मीन राशि हो, उसे निश्चय ही वृद्धावस्था में अतिसार रोग होता है। पित्त ज्वर की अधिकता से भी मृत्यु संभव है। रक्त सम्बन्धी बीमारियाँ जीवन में कई बार होती हैं, जलघात भी सम्भव है। ऐसा व्यक्ति शान्ति से शरीर छोड़ता है।

ऊपर अष्टम भाव में प्रत्येक राशि का संक्षिप्त विवेचन किया। अब क्रम से अष्टम भाव में सूर्यादि ग्रह होने से जो फल निष्पन्न होता है, उसका संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

अष्टम भाव में ग्रहों का फल

सूर्य—जिस जातक की कुण्डली के आठवें भाव में सूर्य हो वह व्यक्ति क्रोधी एवं चंचल स्वभाव का होता है। ऐसे व्यक्ति के हृदय में गुरुजनों एवं अपने से बड़ों के प्रति श्रद्धा होती है, परन्तु इसे निरन्तर रोगों से संघर्ष करते रहना पड़ता है। साथ ही जीवन में इसकी संगति कुछ ऐसे लोगों से हो जाती है, जिससे इसे धन एवं स्वास्थ्य से हाथ धोना पड़ता है। भाग्य निरन्तर इसे बाधा देता रहता है। ऐसा व्यक्ति छल करने वाला, दूर की सोचने वाला एवं आजीविका के लिए घर से दूर रहने वाला होता है।

चन्द्र—जिस जातक की कुण्डली के अष्टम भाव में चन्द्र होता है और यदि वह क्षीण बली हो तो शीघ्र मृत्यु कर देता है, परन्तु यदि पूर्ण बली चन्द्र शुक्र की राशि, स्वयं की राशि या बुध की राशि में होता है तो जातक को साँस की बीमारी होती है एवं दिल के दौरे की वजह से जातक की मृत्यु होती है।

मंगल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में अष्टम स्थान में क्षीण बली मंगल हो तो जातक की जलने से मृत्यु होती है या अष्टम में कर्क राशि हो तथा उसमें मंगल बैठा हो तो जातक की मृत्यु जल में डूबने से होती है। यदि धनु और मीन राशि का मंगल अष्टम भाव में

कारण इसे बुरा समझ लिया जाता है, जब कि वास्तव में यह ऐसा होता नहीं है।

राहु--जिस व्यक्ति के अष्टम भाव में राहु होता है, वह दीर्घजीवी होता है। ऐसा व्यक्ति कवि, लेखक, पत्रकार, प्रकाशक या फिल्म-डिस्ट्रीब्यूटर होता है। धर्म-कर्म को समझते हुए भी, यह उसमें आंशिक अरुचि रखता हुआ विद्रोही स्वभाव का होता है। जातक का बचपन परेशानियों में बीतता है। जलघात एवं वृक्षपात दोनों ही संभव हैं। गार्हस्थ्य जीवन सुखद कहा जा सकता है। २८वें वर्ष के बाद भाग्य साथ देता है। जातक की उम्र सत्तर वर्ष से ज्यादा ही होती है।

केतु - जिसकी कुण्डली के अष्टम भाव में केतु पड़ा हो, वह मनुष्य यौवनावस्था में बवासीर का रोगी होता है तथा जीवन में सवारी से गिर कर चोट खाता है। आर्थिक दृष्टि से ऐसा व्यक्ति सामान्य कहा जा सकता है। जीवन में कई बार लॉटरी से आकस्मिक धन भी प्राप्त होता है।

अब मैं संक्षेप में आगे के पृष्ठों में मारकेश को स्पष्ट करता हूँ।

क्रम संख्या	जन्म लग्न	प्रथम श्रेणी का मारकेश	द्वितीय श्रेणी का मारकेश
१	मेष	मंगल	बुध
२	वृष	बृहस्पति	मंगल
३	मिथुन	बृहस्पति	चन्द्र
४	कर्क	शनि	सूर्य
५	सिंह	बुध	बृहस्पति
६	कन्या	बृहस्पति	मंगल
७	तुला	शुक्र	मंगल
८	वृश्चिक	शुक्र	बृहस्पतिं
९	धनु	बुध	शनि
१०	मकर	चन्द्र	सूर्य
११	कुम्भ	बृहस्पति	बुध
१२	मीन	बुध	मंगल

आयु साधन

महर्षियों ने आयु ज्ञात करने के कई सिद्धान्त स्थिर किये हैं, जिसमें

ंशायु, नैसर्गिकायु, लग्नायु आदि हैं, परन्तु इन सब में मेरे मत से पिण्डायु ज्यादा प्रामाणिक है। यद्यपि कठिन है, फिर भी पाठकों के लाभार्थ मैं इसे यहाँ स्पष्ट कर रहा हूँ।

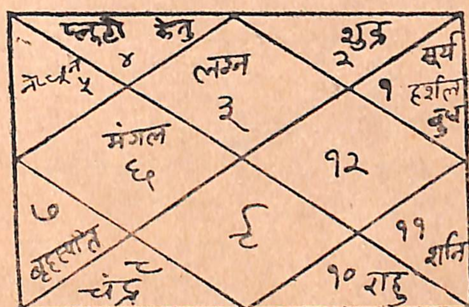
पिण्डायु साधन

पिण्डायु हेतु प्रत्येक ग्रह के निश्चित ध्रुवांक हैं, जो पिण्डायु ध्रुवांक कहलाते हैं। इसमें सूर्यादि सात ग्रहों एवं लग्न इस प्रकार आठों की पिण्डायु निकाल लेनी चाहिए।

जिस ग्रह की आयु निकालनी हो, उसको स्पष्ट बनाकर राश्यादि स्पष्ट ग्रहों में उसका उच्च राश्यादि घटा दें। यदि ६ राशि से कम हो तो उसे फिर १२ राशि में से घटा दें। यदि ६ राशि से अधिक हो तो उसे यथावत् रहने दें। बाद में उसकी कलाएँ बनाकर ग्रह के ध्रुवांक से गुणा कर २१६०० से भाग देने पर लब्धि वर्षादि होगी।

एक जातक की जन्म कुण्डली एवं उसके ग्रह स्पष्ट देकर पिण्डायु साधन कर रहा हूँ, जिससे पाठकों को भली-भाँति समझ में आ जाय।

श्री जन्मकुण्डली चक्रम्



२१-४-१९३५ को दिन के दस बज कर सत्ताईस मिनट पर उपर्युक्त बालक २६।१८ अक्षांश के ७३।४ देशान्तर पर पैदा हुआ। इसका सूर्य ०।७।१६।१२ इष्ट १०।३६।१० तथा स्पष्ट लग्न २।१३।२१।५३।४० था। इसके स्पष्ट ग्रह निम्न प्रकारेण हैं—

श्री ग्रहा स्पष्टः

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
०	७	५	०	६	१	१०	९	३	राशि
७	५	१०	६	२९	१३	८	३	३	अंश
२६	३८	५९	५५	५२	४९	३०	१०	१०	कला
४७	०	११	५७	२६	३१	२	५	५१	विकला
५८	७८८	२४	११३	२	७०	४	३	३	
३५	३६	२६	८	४६	२७	४५	११	११	गति
मार्गी	मार्गी	वक्री		वक्री					

ऊपर जो ग्रह स्पष्ट हैं, वे प्रत्येक जन्म पत्रिका में स्पष्ट किये रहते हैं। अब मैं प्रत्येक ग्रह के पिण्डायु ध्रुवांक स्पष्ट कर रहा हूँ—

क्रम संख्या	ग्रह	उच्चराशि अंश	ध्रुवांक वर्ष
१	सूर्य	०।१०	१९
२	चंद्र	१।३	२५
३	मंगल	९।२८	१५
४	बुध	५।१५	१२
५	गुरु	३।५	१५
६	शुक्र	११।२७	२१
७	शनि	६।२०	२०

पिण्डायु साधन

सूर्य—स्पष्ट ग्रह में सूर्य ०।७।२६।४७ है, इसमें से इसके उच्च राशि अंश घटायें।

राशि	अंश	कला	विकला
०	७	२६	४७
०	१०	०	०
११	२७	२६	४७ शेष रहे।

यदि ऊपर की संख्या में से नीचे की संख्या घटित नहीं होती तो राशि में १२ जोड़ कर घटित कर देने चाहिएँ। एक राशि में ३० अंश तथा एक अंश में ६० कला होती है।

ऊपर घटित करने से राशि ११ है जो कि ६ राशि से अधिक है, अतः
से १२ राशि में से घटाने की जरूरत नहीं है।

तत्पश्चात जो शेष रहे, उसकी कलाएँ बनाईं—

११—२७—२६—४७
×३०
———
३३०
+२७
———
३५७
×६०
————
२१४२०
२६
————
२१४४६—४७ कलाएँ हुईं। अर्थात् २१४४६
कलाएँ तथा ४७ विकलाएँ बनी
×१९ सूर्य ध्रुवांश से गुणा
————
४०७४७४
१७ जोड़े (४७×१९÷६०)

२१६००)४०७४९१(१८ वर्ष
२१६००
———
१९१४९०
१७२८००
————
१८६९०
×१२

२१६००)२२४२८०(१० मास
२१६००

————

८२८०
×३०

२१६००)२४८४००(११ दिन
२१६००

————

३२४००
२१६००

———

१०८००
×६०

२१६००)६४८०००(३० घटी
६४८००

————

×

सूर्य की पिण्डायु १८ वर्ष १० मास ११ दिन ३० घटी हुई ।

चन्द्र

७।५।३८।० स्पष्ट चन्द्र में से
१।३। ०।० उच्च चन्द्र घटाया तो

————

६।२।३८।० शेष रहे
३०

——

१८०
२

—

१८२
×६०
=——
१०६२० कलाएँ
×२५ चन्द्र का ध्रुवांश
———
२१६००
२१८४०×
———
२१६००)२४०३००(११ वर्ष
२१६००
———
२४३००
२१६००
———
२७००
×१२
———
२१६००)३२४००(१ मास
२१६००
———
१०८००
×३०
———
२१६००)३२४०००(१५ दिन
२१६००
———
१०८०००
१०८०००
———
×

चन्द्र की पिण्डायु ११ वर्ष १ मास १५ दिन हुई।

५।१०।५६।११
६।२८।०।०
———
७।१२।५६।११ की कलाएँ बनाई
×३०
———
२१०
+१२
———
२२२
×६०
———
१३३२०
५६
———
१३३७६।११ कलाएँ
×१५ मंगल के ध्रुवांश से गुणा
———
२००६८५
+२ (१५×११÷६०
———
२१६००)२००६८७(९ वर्ष
१९४४००
———
६२८७
१२
———
२१६००)७५४४४(३ मास
६४८००
———

१०६४४

× ३०

२१६००) ३१९३२०(१४ दिन

२१६००

————

१०३३२०

८६४००

————

१६९२०

× ६०

———

२१६००)१०१५२००(४७ घटी

८६४००

————

१५१२००

१५१२००

————

×

मंगल की आयु ९ वर्ष ३ मास १४ दिन ४७ घटी।

०।६।५५।५७

५।१५।०।०

————

६।२१।५५।५७ कलाएँ

३०

——

१८०

२१

——

२०१

× ६०

———

१२०६०
५५
———
१२११५।५७
×१२ बुध के ध्रुवांक
———
१४५३८०
+११ (५७×१२÷६०)
———
२१६००)१४५३९१(६ वर्ष
१२९६००
———
१५७९१
१२
———
२१६००)१८९४९२(८ मास
१७२८००
———
१६६९२
३०
———
२१६००)५००७६०(२३ दिन
४३२००
———
६८७६०
६४८००
———
३९६०
६०
———

२१६००)२३७६००(११ घटी
२१६००
———
२१६००
२१६००
———
×

बुध की आयु ६ वर्ष ८ मास २३ दिन ११ घटी ।

६।२६।५२।२६
३।५।०।०
————
३।२४।५२।२६

चूँकि ३ राशि ६ से कम है अतः इसे पुनः १२ राशि में से घटाया

१२।०।०।०
३।२४।५२।२६
————
८।५।७।३४ कलाएँ बनाईं
३०
——
२४०
५
——
२४५
×६०
————
१४७००
+७
——

१४७०७।३४
×१५ गुरु के ध्रुवांक
———
२२०६०५
+८ (१५×३४÷६०)
२१६००)२२०६१३(१० वर्ष
२१६००
४६१३
१२
२१६००)५५३५६(२ मास
४३२००
२१५६
३०
२१६००)६४६८०(२ दिन
४३२००
२१०८०
६०
२१६००)१२८८८००(५९ घटी
१०८०००
२०८८००
१९४४००
×

गुरु की आयु १०।२।२।५९।१

इसी विधि से शुक्र की आयु १८ वर्ष ३ माह ६ दिन और ४० घटी तथा शनि की आयु १३ वर्ष ११ मास १९ दिन और ५९ घटी सिद्ध हुई।

लग्नायु

लग्नायु साधन का प्रकार यह है कि लग्न के जितने नवांश खण्ड बीत चुके हैं, उतने वर्ष तथा जितनी कला हो, वहाँ प्रति कला पर १ दिन ४८ घटी एवं प्रति विकला पर १ घटी ४८ पल आयु होती है।

उपर्युक्त उदाहरण में स्पष्ट लग्न २।१३।२१।५३ है अर्थात् मिथुन राशि के १३ अंश २१ कला ५३ विकला।

३ अंश तथा २० कला का एक खण्ड होता है।

३।२०
×४
१३।२०

१३।२१।५३
१३।२०।५३

कला = १ दिन ४८ घटी।

५३ विकला = ५३ × १ घटी ४८ पल = १ दिन ३५ घटी २४ पल

लग्नायु = कुल = ४ वर्ष ३ दिन २३ घटी २४ पल।

अब हम प्रत्येक ग्रह की आयु को एक जगह एकत्र कर उसका योग करें।

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
सूर्य	१८	१०	११	३०	१
चन्द्रमा	११	१	१५	०	०
मंगल	६	३	१४	४७	०
बुध	६	८	२३	११	०
गुरु	१०	२	२	५६	१
शुक्र	१८	३	६	४०	०
शनि	१३	११	१६	५६	०
लग्न	४	०	३	२३	२४

आयु संस्कार

आयु संस्कार हेतु निम्न नियम ध्यान में रखने चाहिएँ।

(१) शुक्र और शनि को छोड़ कर कोई ग्रह अस्तगत हो तो प्राप्त आयु का आधा करे। शुक्र या शनि अस्त हो तो भी वही आ रहती है।

(२) जो ग्रह शत्रु के घर में हो और वक्री न हो तो प्राप्त आयु का तीसरा भाग कम हो जायेगा। यदि वक्री हो तो आयु कम न होगी।

(३) पापग्रह यदि लग्न से द्वादश भाव में हो तो उसकी सम्पूर्ण आयु कम होगी।

(४) ग्यारहवें पापग्रह हो तो आयु का आधा करना चाहिए।
(५) दशम भाव में पापग्रह हो तो एक तिहाई आयु कम करे।
(६) नवम भाव में पापग्रह हो तो एक चौथाई आयु कम हो।
(७) अष्टम भाव में पापग्रह हो तो आयु का पाचवाँ भाग कम हो।
(८) सप्तम भाव में पापग्रह हो तो आयु का छठा भाग कम हो।
(९) द्वादश भाव में शुभ ग्रह हो तो प्राप्त आयु का आधा मानना चाहिए।
(१०) ग्यारहवें शुभग्रह हो तो आयु की चौथाई आयु कम हो।
(११) दशम में शुभ ग्रह हो तो आयु का छठा हिस्सा कम हो।
(१२) नवम भाव में शुभग्रह हो तो आठवाँ भाग कम हो।
(१६) आठवें शुभग्रह हो तो दसवाँ हिस्सा कम हो।
(१४) सातवें शुभ ग्रह हो तो बारहवाँ भाग कम हो।

इन नियमों को पूर्व उदाहरण पर घटित करने पर स्पष्ट आयु इस प्रकार होती है।

स्पष्ट पिण्डायु साधन

क्र०सं०	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
१	सूर्य	९	५	५	४५	०
२	चन्द्र	७	५	०	०	०
३	मंगल	९	३	१४	४७	०
४	बुध	४	५	५५	२८	०
५	बृहस्पति	१०	२	२	५९	[illegible]
६	शुक्र	९	१	१८	२०	०
७	शनि	१०	५	२२	३०	[illegible]
८	लग्न	४	०	३	२३	[illegible]
	योगफल	६४	६	३	१२	२५

अतः यह सिद्ध हुआ कि जातक की आयु ६४ वर्ष ६ मास ३ दिन १२ घटी और २५ पल है।

ज्योतिष के प्रेमी बन्धु, जिज्ञासु एवं विद्यार्थियों को चाहिए कि वे

ध्यानीपूर्वक जन्म पत्रिका का निरीक्षण कर अनुभव प्राप्त करें तो उनके द्वारा जो फलादेश होगा वह पूर्णतः सही और प्रामाणिक होगा।

नवम भाव

वस्तुतः नवम भाव कुण्डली का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाव है, क्योंकि मानव का आधार उसका भाग्य है। यद्यपि शास्त्रों में पुरुषार्थ को महत्ता प्रदान की है, परन्तु भाग्य के विना पुरुषार्थ भी श्री-हीन हो जाता है। नवम भाव मुख्यतः मानव के भाग्य से ही सम्बन्धित है।

नवम भाव से विचारणीय विषय

नवम भाव से निम्न तथ्यों का ज्ञान किया जाता है।

१. भाग्य
२. अधिकार
३. आदेश, हुकूमत
४. पोते-पोतियाँ
५. प्रसिद्धि, व्यक्तित्व, सम्मान
६. धर्म, धर्म-परिवर्तन, तीर्थयात्रा
७. सहानुभूति
८. नेता पद, नेतृत्व, उच्चपद प्राप्ति
९. विदेश यात्रा-यात्राएँ
१०. जोश, साहस, सूझबूझ, विवेक आदि
११. भाग्योदय काल, भाग्योदय स्थान।
१२. उच्च विचार, सद्गुण आदि।

देखा जाय तो वे सभी विषय जिनसे मानव-जीवन उच्च एवं दिव्य बनता है—नवम भाव के अन्तर्गत ही आते हैं, अतः नवम भाव का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करना अत्यावश्यक है।

नवम भाव का अध्ययन करते समय निम्न तथ्यों को दृष्टि में रखना चाहिए।

१. नवम भाव व राशि
२. नवम भाव का स्वामी
३. नवम भाव में बैठे ग्रह
४. नवम भाव पर ग्रहों की दृष्टि

५. नवमेश के बैठने की राशि

६. नवमेश पर ग्रहों की दृष्टि

७. कारक, अकारक एवं तटस्थ ग्रह

८. भाव दशा

९. महादशा - अन्तर्दशा आदि ।

अब मैं नवम भाव की राशि पर संक्षेप में विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

मेष—जिस जातक के नवम भाव में मेष राशि होती है वह व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है । उसका विवेक हर समय जागृत रहता है तथा जो भी कार्य करता है, वह सोच-विचार कर करता है । इसके साथ ही ऐसा मनुष्य अर्थ के सम्बन्ध में चिंतित भी रहता है, क्योंकि उस पर अप्रत्याशित व्यय आते रहते हैं तथा हर समय आय की अपेक्षा व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है । चौपायों के खरीदने एवं बेचने से अथवा कृषि से या मकान बनाने, खरीदने या बेचने से जातक का विशेष लाभ होता है। धार्मिक कृत्यों से भी जातक लाभ उठाता है ।

वृष—यदि नवम भाव में वृष राशि हो तो वह मनुष्य सच्चरित्र एवं विद्वान होता है । समय की गम्भीरता को वह पहचानता है एवं विवेकयुक्त बात कहता है । जीवन में २८ वर्ष के बाद से भाग्योदय होता है तथा पूर्ण भाग्योदय ३६वें वर्ष से समझना चाहिए । बाल्यावस्था कष्टकर होती है तथा शिक्षा प्राप्ति के लिए जातक को भटकना पड़ता है एवं परिश्रम उठाना पड़ता है, फिर भी ऐसा जातक पूर्ण शिक्षा प्राप्ति की दिशा में निरन्तर अग्रसर रहता है । जीवन के उत्तरार्द्ध में इसके पास खूब धन होता है तथा धन के द्वारा यह ख्याति अर्जित करता है । इसे सजावट एवं भोग विलासमय पदार्थों की ओर विशेष रुचि होती है एवं सजावट में जरूरत से ज्यादा व्यय कर डालता है । कपड़ों पर, सुगन्धित पदार्थों पर एवं फैशन पर इसकी रुचि होती है । फैन्सी स्टोर के व्यापार से जातक लाभ उठा सकता है । नौकरी में जातक शनैः-शनैः प्रगति करता है ।

मिथुन—यदि नवम भाव में मिथुन राशि हो तो वह व्यक्ति सौम्य सात्विक एवं सरल स्वभाव का होता है । धार्मिक कार्यों में रुचि रखता है तथा ऐसे प्रत्येक कार्य में आगे बढ़कर भाग लेता है, फिर भी धर्म के

मामले में यह कट्टर न होकर सहिष्णु होता है। सड़ी-गली रूढ़ियों एवं पाखंड का यह प्रबल विरोधी होता है। गरीबों के प्रति इसके दिल में दया होती है। जीवन के २७ वें वर्ष के बाद से इसका भाग्योदय होता है। कार्यव्यस्तता इसका स्वभाव है तथा जीवन के प्रत्येक क्षण को व्यापारिक दृष्टिकोण से देखता है। धन संचय कला में यह निपुण होता है तथा जीवन के मध्यकाल के बाद से इसकी आर्थिक स्थिति विशेष ठीक हो जाती है। नौकरों पर इसकी आज्ञा चलती है तथा यह अपने सम्मान को बनाए रखता है। उच्च विचार, सद्‌गुणी, शिक्षित एवं कला-निपुण ऐसा व्यक्ति जीवन में लक्ष्य प्राप्त कर लेता है।

कर्क—यदि नवम भाव में कर्क राशि हो तो ऐसा व्यक्ति भावुक एवं कल्पनाप्रिय होता है। यह जातक एक सफल शिक्षक, पत्रकार, प्रकाशक या लेखक हो सकता है। व्रतोत्सवादि में जातक गहरी रुचि लेता है तथा चाहते हुए भी सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ नहीं सकता। बचपन में इसे पेट सम्बन्धी बीमारियाँ सम्भव हैं। वायु प्रकोप जीवन भर बना रहता है एवं अस्थिरता, चंचलता एवं त्वरित निर्णय न ले सकने के कारण कई बार हानि भी उठाता है। सूझबूझ का धनी यह जातक जो भी कार्य करना चाहता है, उसके सोचने में जरूरत से ज्यादा समय लगा देता है। जीवन के मध्यकाल में कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं तथा धन-हानि सहनी पडती है। जातक अपने जीवन को सफल बनाने की भरसक कोशिश करता है।

सिंह—जिस जातक की जन्मकुण्डली के नवम भाव में सिंह राशि स्थित होती है वह धर्म का विरोधी होता है। धार्मिक कट्टरता का विपक्षी यह जातक मानव-धर्म में ही श्रद्धा रखता है तथा धर्म के दुर्बल पक्ष पर बहस करना इसका स्वभाव होता है। भाग्य इसका साथ देता है, परन्तु इसके प्रत्येक कार्य सिद्धि के बीच में व्यवधान तो आता ही है। ऐसा व्यक्ति चाहते हुए भी अपने अधिकारियों को सन्तुष्ट नहीं कर सकता। जातक का समाज में सम्मान होता है। यह व्यक्ति कठोर परिश्रमी होता है तथा परिश्रम को ही जीवन का ध्येय समझता है। जीवन के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध ज्यादा सफल एवं श्रेष्ठ माना जा सकता है। यात्रा करना इसका प्रिय विषय होता है।

कन्या—जिस जातक के नवम भाव में कन्या राशि हो, वह विलासी

प्रकृति का युवक होता है। अपने परिवार, पुत्र एवं पत्नी से विशेष प्रेम करने वाला ऐसा युवक जीवन में सफलता प्राप्त करता है। भाग्य निरंतर इससे छल करता रहता है तथा जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखता है। अन्याय एवं पक्षपात का यह प्रबल विरोधी होता है। लोगों से वाहवाही लूटना इसका ध्येय होता है तथा जरूरत से ज्यादा प्रदर्शन कर अपने आप को उच्च एवं धनी बताने का प्रयत्न करता रहता है, जबकि वास्तविकता इसके विपरीत होती है। वृद्धावस्था में पोते-पोतियों का पूर्ण सुख भोगता है तथा २३वें वर्ष के बाद इसका भाग्योदय होता है।

तुला—यह व्यक्ति धर्मभीरु होता है तथा ऐसा प्रत्येक कार्य करने से हिचकिचाता है, जो अन्याय हो या जिस कार्य को समाज से मान्यता न मिली हो। बाल्यावस्था में इसे काफी परेशानियाँ देखनी पडती हैं तथा इसकी प्रगति धीरे-धीरे होती है। शिक्षण काल में भी कई व्यवधान आते हैं। या तो इसे सभी प्रकार के डिवीजन मिलते हैं या फिर रुक-रुककर पढ़ाई होती है। भोग विलास का यह इच्छुक होता है। नौकरी की अपेक्षा इसे व्यापार में विशेष लाभ होता है तथा व्यापार में भाग्योदय भी शीघ्र ही हो जाता है। नेतृत्व कार्य में यह जातक अग्रणी होता है तथा इसके जिम्मे जो कार्य होता है, उसे तत्परता से सम्पन्न करता है। यात्राएँ इसके भाग्य में होती हैं तथा घुमक्कड़ जीवन बिताने का इच्छुक भी होता है। सुसराल से भी धन-प्राप्ति संभव है। २४वें वर्ष के बाद से भाग्योदय होता है।

वृश्चिक—जिस जातक के नवम भाव में वृश्चिक राशि होती है वह पाखंड प्रिय होता है। प्रदर्शन की प्रवृत्ति इसमें खूब होती है तथा इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप व्यर्थ का व्यय भी हो जाता है। सजावट एवं फैशन में इसकी रुचि रहती है। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष कष्ट तथा उथल-पुथल के होते हैं। इन दिनों में जातक को आजीविका के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है। परिवार एवं जाति की ओर से इसे बिल्कुल सहायता नहीं मिलती, एक प्रकार से यह 'सैल्फ मेड मैन' होता है। २८ वर्ष तक स्थिति साधारण रहती है यथा इसके बाद ही भाग्योदय संभव है एवं आर्थिक स्थिति सुधरती है। जीवन में यह निरन्तर प्रगति पथ पर गतिशील रहता है एवं अपने ध्येय तक पहुँचने में सफल हो जाता है। जीवन में यह कई यात्राएँ करता है तथा यह व्यक्ति समय को

पहचान कर तदनुकूल कार्य करने वाला होता है।

धनु—जिस जातक के नवम भाव में धनु राशि हो वह व्यक्ति चपल एवं शान्त, सौम्य, सरल स्वभाव का होता है। बचपन ठीक गुजरता है, परन्तु जीवन के मध्यकाल में इसे कठोर परिश्रम करना पड़ता है। भाग्य पूर्णतः इसके पक्ष में नहीं होता, यह जो भी अपने पक्ष में कार्य करना चाहता है, उसमें कुछ न कुछ बाधा उपस्थित हो ही जाती है। ऐसा व्यक्ति नाविक, जलयान संचालक या जलपोत पर कैप्टेन होता है, अथवा 'वाटर बोर्ड' या सिंचाई योजनाओं के अन्तर्गत नौकरी करता है। इस प्रकार की नौकरी में जातक का भाग्योदय प्रबल एवं शीघ्र होता है। परिवार एवं समाज में यह सब का प्रिय होता है। जीवन में इसे विशेष ख्याति प्राप्त होती है तथा ४५ वर्षों के उपरान्त यह व्यक्ति धनी एव उच्च पद प्राप्त करता है। यात्राओं का इस जातक को विशेष योग होता है।

मकर—यदि नवम भाव में मकर राशि हो तो वह व्यक्ति राजनीति पटु होता है, ऐसा प्रत्येक कार्य जो लोगों को असंभव लगता है, यह युक्ति से कर डालता है, परन्तु इतना होते हुए भी यह अपने आपका भला नहीं कर सकता, दूसरों के कार्य यह आसानी से सम्पन्न कर सकता है या करा सकता है, पर इसके स्वयं के काय आलस्यवश अधूरे पड़े रहते हैं। भाग्य भी इससे निरन्तर छल करता रहता है तथा भाग्यवृद्धि में शिथिलता लाता है। शत्रु पक्ष प्रबल होता है तथा इसके प्रत्येक कार्य में रुकावटें डालता है। नौकरी में यह जातक धीरे-धीरे प्रगति करता है। प्रसिद्धि के लिए यह व्यक्ति लालायित रहता है तथा निरन्तर ऊपर उठने का प्रयत्न करता रहता है, नेतृत्व की इसमें क्षमता होती है तथा कार्य को व्यवस्थित कर निबटाने में यह रुचि लेता है। जीवन का उत्तरार्द्ध ही सफल कहा जा सकता है।

कुम्भ—जिस जातक की जन्म कुण्डली के नवम भाव में कुम्भ राशि हो, वह व्यक्ति बाल्यावस्था में घोर कष्ट पाता है। इधर से उधर भटकना, शिक्षा के लिए जगह-जगह ठोकरें खाना तथा आजीविका प्राप्ति के लिए कठोर संघर्ष करना इसके प्रारब्ध में लिखा होता है। जीवन के २८वें वर्ष से समय इसके अनुकूल बनाता है तथा ३०वें वर्ष के बाद से भाग्य साथ देने लगता है। उम्र का ३६वाँ साल तथा इसके आगे भाग्य

की दृष्टि से सफल वर्ष कहे जा सकते हैं।

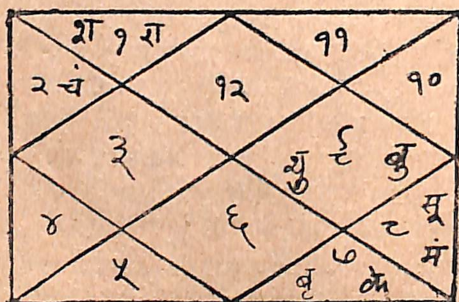
यात्राओं का यह शौकीन भी होता है तथा यात्राओं का योग भी रहता है अथवा इसकी आजीविका ही ऐसी होती है, जिसमें यात्रा, भ्रमण आवश्यक हेतु होता है।

जीवन के मध्यकाल के बाद से यह प्रसिद्धि प्राप्त करने लगता है। ४५वें वर्ष के बाद से जातक देश में ख्याति लाभ करता है। नेतृत्व, योग्यता, कूटनीतिज्ञता, मानव का परखने की शक्ति तथा बातचीत में यह जातक पटु होता है। वृद्धावस्था में यह जातक लखपति बनता है।

मीन—यदि नवम भाव में मीन राशि हो तो वह व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करता है। धार्मिक कार्यों में जातक रुचि लेता है तथा नौकरी में उन्नति करता है। व्यापार में इसे पीली धातु का व्यापार करने से लाभ होता है। सुन्दर कपड़ों को पहनने का शौकीन होता है तथा २७वें वर्ष से भाग्योदय होता है। ऐसा जातक नम्र, कुलीन, ऊँचे विचार रखने वाला एवं सहिष्णु होता है।

ऊपर हमने नवम भाव राशि का विवेचन किया, अब नवम भाव गत ग्रहों का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

सूर्य—जिस जातक के नवम भाव में सूर्य होता है, वह मध्यम कद का, उभरा वक्षस्थल, उन्नत ललाट एवं सुन्दर नेत्रों वाला होता है। ऐसा



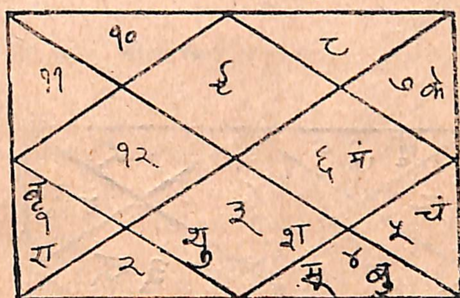
श्री उपेन्द्रनाथ अश्क
सुप्रसिद्ध हिन्दी नाटककार

व्यक्ति परिवार से स्नेह रखने वाला एवं नवीन विचारों का अन्वेषी होता है। सूर्य की दृष्टि पराक्रम स्थान पर रहती है, अतः जातक साहसी

ं परिश्रमी होता है। श्रम की महत्ता वह समझता है एवं विपरीत रिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ वह उन्नति की ओर अग्रसर होता हता है। बाल्यावस्था सुखद नहीं कही जा सकती। शिक्षा एवं आजीविका के लिए उसे निरन्तर संघर्षरत रहना पड़ता है। मध्य काल एवं द्धावस्था सफल रहती है। यात्राओं का योग प्रबल रहता है तथा जीवन के २४वें वर्ष के बाद से भाग्योदय होता है। नेतृत्व-क्षमता इसमें अपूर्व होती है।

चन्द्र—नवम भाव में चन्द्र की स्थिति अनुकूल मानी गई है। जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली के नवम भाव में चन्द्रमा होता है, वह एक प्रकार से 'सैल्फ मेड मैन' होता है। भाग्य निरन्तर उसका साथ देता रहता है, तथा ऐसे जातक संघर्ष के क्षणों में ही अपने व्यक्तित्व को निखार सकते हैं।

नेतृत्व करने की इनमें गजब की शक्ति होती है। विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी ये अपना मस्तिष्क-संतुलन बनाये रखते हैं तथा



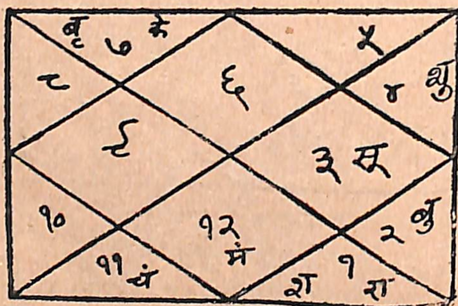
श्री मोहनलाल सुखाड़िया
(राजस्थान के मुख्य मंत्री)

परिस्थिति को भाँप, वैसा ही कदम उठाकर सफलता प्राप्त कर लेते हैं। जीवन का मध्य काल उन्नत काल होता है। ऐसा चन्द्र शत्रुहन्ता भी माना गया है। विपक्षी इसके सामने कमजोर पड़ते हैं। यात्रा योग भी उत्तम कहा जा सकता है। धर्म के क्षेत्र में ये सहिष्णु होते हैं तथा धार्मिक कार्यों में आगे बढ़कर भाग लेते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे जातक विशेष रूप से सफल रहते हैं। गुलजारीलाल नन्दा, जार्ज

वाशिंगटन, लोकमान्य तिलक, डोरिस ड्यूक, चह्वाण, अकबर आदि की कुण्डलियों के नवम भाव में चन्द्र की स्थिति से ही वे राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण सफल रहे। ऐसे जातक धनवान, विनम्र, विपक्षी का भी हित चाहने वाले एवं अवसरानुकूल कार्य करने वाले सफल होते हैं।

मंगल—जिस जातक के नवम भाव में होता है, वह वीर, साहसी, कर्मठ, परिश्रम में विश्वास रखने वाला तथा निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होने वाला होता है। यदि मंगल शत्रु क्षेत्री हो तो विविध रोगों से भी ग्रस्त रहता है। भाग्य निरन्तर इससे छल करता रहता है तथा प्रारम्भिक वर्षों में दुःख प्रदान करता है। आजीविका के लिए भी ऐसे जातक कठोर श्रम करते देखे गये हैं। यदि मंगल मकर का या स्वगृही हो तो जातक की भाग्य वृद्धि में सहायक होता है। विद्या में रुचि रखने वाला ऐसा व्यक्ति सफल लेखक पत्रकार, प्रकाशक या गद्यकार बन जाता है। सच्चरित्र, सरल जीवन व्यतीत करने वाला ऐसा व्यक्ति नम्र स्वभाव का होता है।

बुध—नवम भाव में बुध की स्थिति जातक को चतुर एवं विनम्र बना देती है। परिश्रम करने में तत्पर ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही लोकप्रिय हो जाता है।



डडले सेनानायके (श्री लंका)

जीवन में यह अत्यन्त तेजी से प्रकाश में आता है व उन्नति पथ पर द्रुतगति से अग्रसर होता है। जीवन में इसे निरन्तर घात-प्रतिघातों का सामना करते रहना पड़ता है। जीवट वाला ऐसा व्यक्ति संकटों के समय भी मुस्कुराता रहता है।

१७ वर्ष के बाद जातक का भाग्योदय होता है। जीवन में पूर्ण मुखोपभोग करता है तथा उत्तम कोटि का वाहन सुख प्राप्त होता है। पारिवारिक जीवन सुखद एवं सफल कहा जा सकता है।

बृहस्पति—नवम भाव में बृहस्पति की उपस्थिति अत्यन्त शुभ मानी गई हैं। जिसके नवम भाव में गुरु होता है, वह साधारण कुल में भी जन्म लेकर उन्नति करता है, तथा लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। जातक का व्यक्तित्व अत्यन्त भव्य होता है तथा वह सहज ही लोगों की सहानुभूति अर्जित करने में समर्थ होता है। ऐसा जातक राजनीतिक क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। नेतृत्व करता है।

नेतृत्व, संगठन एवं सही संचालन के क्षेत्र में जातक प्रवीण होता है तथा विपक्षियों से भी नम्रता से पेश आना एवं विरोधियों की भी धैर्य से बात सुनना जातक का स्वभाव होता हैं। ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही उफनता नहीं, अपितु गम्भीर स्वभाव का होता है। पारिवारिक जीवन मध्यम स्तर का ही कहा जा सकता है।



श्रीमती भंडारनायके (श्री लंका)

शुक्र—जिस जातक के नवें भाव में शुक्र होता है, वह ऐश आराम से जीवन व्यतीत करने वाला तथा संयत रूप से जीवन बिताने वाला होता है भाग्योदय जीवन के २२वें वर्ष में ही हो जाता है। बाल्यावस्था आनन्द से व्यतीत होती है, परन्तु जीवन के मध्यकाल में इसे कठोर परिश्रम करना पड़ता है। परिश्रम के बल पर यह दुर्भाग्य को भी कुछ न कुछ अपने अनुकूल ही बना लेता है। यात्राओं का इसे शौक होता है तथा जीवन में खूब यात्राएँ करता है। धार्मिक क्षेत्र में यह सामाजिक रूढ़ियों को पालन करने वाला होता है। परिवारिक जीवन सफल एवं श्रेष्ठ होता

है तथा मानव-जीवन के उच्च गुणों से सम्पन्न ऐसा जातक मध्यावस्था में प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

शनि—जिस मनुष्य के नवम भाव में शनि होता है, वह व्यक्ति वाचाल एवं राजनीति निपुण होता है। जीवन का प्रारम्भ उसका सामान्य ही होता है, परन्तु समर्थ होने पर वह परिस्थियों को अपने अनुकूल बनाकर उन्नति पथ पर अग्रसर हो जाता है। जीवन का लक्ष्य सदैव इसकी दृष्टि में रहता है तथा जो भी कार्य करता है वह अत्यन्त धैर्यता से सोच-समझ कर करता है। शिक्षण काल में तथा अजीविका के लिए इसे कठोर श्रम करते रहना पड़ता है। यों भी यह व्यक्ति श्रमशील होता है। श्रम का मूल्य एवं महत्ता यह समझता है तथा श्रम के बल पर ही उन्नति करता है। भाग्य इसके अनुकूल रहता है तथा इसके जीवन में यात्राओं के कई अवसर आते रहते हैं।

राहु—नवम भाव में राहु की स्थिति प्रायः भाग्यवर्धक ही मानी जाती है। अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए यह सचेष्ट रहता है तथा अधिकारियों से जो भी आदेश मिलता है उसका कठोरता से पालन करता है। गार्हस्थ्य जीवन सफल होता है।

केतु—नवमस्थ केतु इस बात का सूचक है कि जातक निश्चय ही राजनीतिक क्षेत्र में घुसेगा तथा सफलता प्राप्त करेगा। जीवन के मध्यान्ह काल में ऐसा व्यक्ति प्रखर रूप में चमकता है। इस जातक में यह एक



श्री राजगोपालाचारी

विशेषता होती है कि विपरीत परिस्थितियों में ही यह उभरता है, चमकता है एवं प्रसिद्धि प्राप्त करता है। भाग्य जीवन में निरन्तर उत्थान-पतन देता

ता है, परन्तु फिर भी ये जातक लक्ष्यच्युत नहीं होते। लक्ष्य प्राप्ति श्रोर सतत सचेष्ट रहते हैं। यात्राश्रों का योग जीवन में विशेष होता विरोधियों के परास्त करने में ज़ातक सफल होता है तथा राजनीतिक में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। आइजनहॉवर, कार्लमाक्स, माओ-तुंग, कृष्णामेनन, आदि राजनीतिज्ञों की कुण्डलियों के नवम भाव में की उपस्थिति ने ही योग प्रदान किया है।

नवम भाव से सम्बन्धित कुछ योग

(१) नवमेश और बृहस्पति शुभवर्ग में हों, भाग्य भाव शुभ ग्रह से युक्त हो तो जातक भाग्यवान होता है।

(२) पापग्रह भी यदि उच्च राशि के होकर नवम भाव में हों तो भाग्य निरन्तर जातक का साथ देता है।

(३) नवमेश नवम भाव में हो तो जातक भाग्यशाली बनता है।

(४) चंद्र-बुध, चंद्र-गुरु नवम भाव में श्रेष्ठ कारक ग्रह होते हैं।

(५) भाग्येश जिस राशि में होता है उस राशि का स्वामी भी भाग्य-वर्धक माना गया है।

(६) लग्नेश लग्न को देखता हो तथा भाग्येश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक उच्च पद प्राप्त कर ख्याति अर्जित करता है।

(७) तृतीय, पंचम या लग्नस्थित बलवान ग्रह भाग्य भाव को देखता हो तो जातक भाग्यवान होता हैं।

(८) धनेश लाभस्थान में, दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो यह योग प्रबल भाग्यविधायक माना गया है।

(९) लाभेश नवम भाव में दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक आइ. ए. एस. ऑफीसर होता है।

(१०) लाभेश नवम भाव में, धनेश लाभस्थान में, नवमेश धन भाव में और दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो वह व्यक्ति जीवन में सभी प्रकार के आनन्दों का भोग करता है।

(११) भाग्यस्थ गुरु पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक विविध वाहनों से सम्पन्न होता है।

(१२) नवम स्थान पर उच्च का बृहस्पति या शुक्र हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक इन्हीं दशा-अन्तर्दशा में निश्चय ही प्रधान न्यायाधीश, एम. एल. ए. या शासन कार्य में उच्च

पदाधिकारी होता है।

(१३) नवमस्थ गुरु पर सूर्य-बुध की दृष्टि होने से जातक को सम्पादक विद्वान और लेखक बना देता है। चन्द्र-मंगल की दृष्टि उच्च सेनाधिकारी बनाती है।

(१४) नवम भाव में चन्द्र-बुध जातक को पंडित बना देता है।

(१५) नवम भाव में उच्च का या स्वगृही शनि हो तो जातक खूब विदेश यात्राएँ करता है।

भाग्योदय काल

(१) सप्तमेश या शुक्र ३, ६, ७, १०, ११वें स्थान में हों तो जातक का भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है।

(२) भाग्येश रवि हो तो भाग्योदय २२वें वर्ष में होता है।

(३) भाग्येश चन्द्र हो तो २४वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

(४) यदि मंगल भाग्येश हो तो भाग्योदय २८वें वर्ष में होता है।

(५) भाग्येश बुध ३२वें वर्ष में भाग्योदय कराता है।

(६) बृहस्पति यदि भाग्येश हो तो १६वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

(७) शुक्र भाग्येश होने पर २५वें वर्ष में भाग्योदय समझना चाहिए।

(८) शनि भाग्येश होने पर ३६वें वर्ष में भाग्योदय कराता है।

(९) राहु-केतु यदि भाग्येश हों तो ४२वें वर्ष में भाग्योदय समझना चाहिए।

दशम भाव

ज्योतिष ग्रन्थों में दशम भाव को सर्वाधिक महत्ता दी गई है, क्योंकि जीवन का आधार कर्म है और कर्म का हेतु दशम भाव है, इसलिए दशम भाव का सूक्ष्म विवेचन प्रत्येक ज्योतिषी बन्धु के लिए आवश्यक ध माना जाता है।

दशम भाव से विचारणीय-विषय

(१) पद, नौकरी

(२) जीवन-निर्वाह हेतु कार्य

(३) आदर, श्रद्धा, उच्चता, महत्ता और दिव्यता

(४) ज्ञान, पिता
(५) जीवन प्रकार
(६) वस्त्राभूषण, व्यापार, कृषि
(७) कर्म
(८) यश
(९) विज्ञान आदि।

मानव का आधार एवं उसकी प्रतिष्ठा उसके पद तथा जीवन पद्धति पर ही आधारित है। मनुष्य के रहन-सहन से मानव गुणों का पता चल जाता है, अतः दशम भाव मुख्य विचारणीय विन्दु रहना चाहिए।

दशम भाव का अध्ययन करते समय निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए—

(१) दशम भाव
(२) दशम भाव का स्वामी
(३) दशम भाव स्थित ग्रह
(४) दशम भाव पर ग्रहों की दृष्टियाँ
(५) दशमेश के बैठने की राशि
(६) दशमेश पर ग्रहों की दृष्टि
(७) दशमेश का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध
(८) भाव दशा
(९) महादशा-अन्तर्दशा आदि।

अब हम दशम भावस्थ राशियों का शुभाशुभत्व स्पष्ट करेंगे।

मेष—दशम भाव में यदि मेष राशि हो तो जातक कई कार्यों में रत रहता है। जीवन-निर्वाह के लिए वह एक से अधिक अजीविका के साधन ढूँढ़ता है तथा प्रत्येक प्रकार का कर्म करने को तत्पर रहता है। जीवन में यश का अभाव रहता है।

वृष—जिस जातक की कुण्डली के दशम भाव में वृष राशि हो वह मनुष्य आय से अधिक व्यय करने वाला होता है। धन संचय करने की कला न तो उसे आती है और न व्यवस्थित रूप में वह धन संचय कर ही पाता है। धार्मिक कार्यों में जातक की गहरी श्रद्धा होती है और अपने पिता का भक्त होता है। समाज, कुल एवं जाति में उसे आदर की दृष्टि

से देखा जाता है। राज्य पक्ष उसके अनुकूल ही कहा जा सकता सकता है।

मिथुन—यदि दशम भाव में मिथुन राशि हो तो उसे कृषि कार्यों से विशेष लाभ रहता है, इसके अतिरिक्त वह भूमि सम्बन्धी कार्य करे तो लाभ उठा सकता है। अपने से बड़ों की श्रद्धा करता है तथा उनकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है। पिता की सेवा करने वाला ऐसा जातक नौकरी की अपेक्षा व्यापार करने पर अधिक लाभ उठा सकता है। यशभागी यह पुरुष समाज एवं कुल में सम्मान प्राप्त करता है।

कर्क—यदि दशम भाग में कर्क राशि हो तो जातक निश्चय ही धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला होता है। प्याऊ लगाना, कुआँ खुदवाना या ऐसे कार्य करना जिनसे गरीबों का हित हो यह करता है। पाप पूर्ण कृत्यों से यह दूर रहता है। अनीतियुक्ति स्वीकार नहीं करता। माता-पिता को आदर देने वाला ऐसा जातक श्रम, न्याय एवं धर्म में विश्वास रखता है।

सिंह—जिस मनुष्य के दशम भाव में सिंह राशि होती है, उसे माता का अल्प सुख ही प्राप्त होता है, इसके साथ ही साथ आजीविका के लिए भी उसे कठोर श्रम और संघर्ष करना पड़ता है। वाहन-सुख स्वल्प होता है तथा भूमि सम्बन्धी कार्यों से जातक को लाभ नहीं रहता। शिकार का यह शौकीन होता है तथा राजनीतिपूर्ण जीवन बिताने का इच्छुक होता है। परिवार से इसे नहीं के बराबर सहायता मिलती है तथा पूर्ण परिश्रमी होता है।

कन्या—जिस जातक के दशम भाव में कन्या राशि होती है, वह व्यक्ति स्वाभिमान रखने वाला एवं अपनी आन पर मर मिटने वाला होता है। चापलूसी उसे पसन्द नहीं और दूसरों की हाँ में हाँ मिलाना वह बुरा समझता है, परन्तु नौकरी के क्षेत्र में वह नौकरी को गम्भीरता से भी नहीं लेता। उदासीन वृत्ति से वह नौकरी करता रहता है, फलस्वरूप उसकी प्रगति धीरे-धीरे होती है। ऐसे जातक को नौकरी की अपेक्षा व्यापार ज्यादा लाभदायक रहता है। स्त्री से इसकी अनबन रहती है तथा उससे विरोधी विचार रखता है। यद्यपि वह धीरे-धीरे उच्च पद पर पहुँच जाता है, परन्तु फिर भी इसके पास धन संचय नहीं होता। समाज इसके कार्यों की आलोचना करता है तथा कुल से इसे कोई लाभ

हीं मिलता।

तुला—यदि दशम भाव में तुला राशि हो तो जातक की प्रवृत्ति व्यापार में ही अधिक रमती है और उसका भाग्योदय भी व्यापार में ही तीव्रता से उन्नति की ओर अग्रसर होता है। नौकरी में उन्नति के अवसर कम रहते हैं। यदि यह जातक नौकरी करता है तो उसे वह सब प्राप्त नहीं होता, जिसका यह हकदार है। यह व्यक्ति बात का धनी होता है, मुँह से जो कह देता है, उसे पूरा करके दिखाता है। पिता की आज्ञा मानने वाला तथा नीतियुक्त बात कहने वाला यह जातक यौवनावस्था में अपने लिए अनुकुल वातावरण बनाकर उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है।

वृश्चिक—जिसके दशम भाव में वृश्चिक राशि हो, वह मनुष्य सद्गुणों से अलंकृत गरीबों का सहायक होता है। यद्यपि परिस्थितियाँ सर्वदा इसके प्रतिकूल रहती हैं, परन्तु यह अपने सौम्य व्यवहार एवं नीति से वातावरण को अपने अनुकूल बनाने में समर्थ रहता है। धार्मिक कार्यों में इसकी गहरी रुचि होती है तथा ऐसे उत्सवों में यह बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है। नौकरी में जातक प्रगति करता है तथा जीवन निर्वाह के लिए कठोर श्रम करता रहता है।

धनु—धनु राशि जिस कुण्डली के दशम भाव में होती है, वह व्यापार में प्रगति करता है। नौकरी में इसे काफी परेशानियाँ एवं विरोधी वातावरण का सामान करना पड़ता है, परन्तु इसमें इच्छाशक्ति अदम्य होती है तथा निरन्तर संघर्ष करता हुआ अन्ततः विपरीति परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना ही लेता है। भूमि सम्बन्धी अथवा धर्म संबंधी कार्यों में जातक को लाभ होता है एवं पिता की सेवा करने वाला यह जातक समाज में यश-लाभ करता है।

मकर—यदि किसी जातक की कुण्डली के दशम भाव में मकर राशि होती है तो वह अपने आप पर नियंत्रण रखने वाला होता है। विपरीत परिस्थितियों में भी यह अपना मानसिक संतुलन नही खोता तथा समय को पहचान कर तदनुकूल कार्य करने में समर्थ होता है। जीवन के मध्यकाल में यह प्रखर ज्योतिपुंज के रूप में उभरता है एवं अपने गुणों की चकाचौंध से सबको आश्चर्यान्वित कर देता है। एकदम से कार्य करना तथा चौंकाने वाले कार्य करने में यह प्रवीण होता है। पिता से इसके

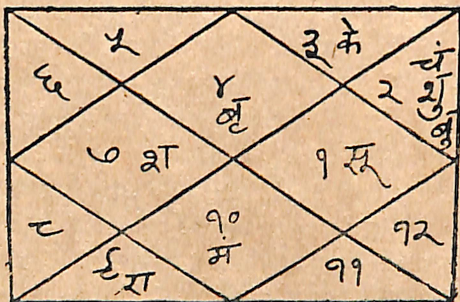
विचारों में विरोध रहता है, परन्तु फिर भी यह पिता के प्रति श्रद्धा रखता है। इसका जीवन प्रकार सादा एवं उच्च रहता है।

कुम्भ—जिस जातक की जन्म कुण्डली के दशम भाव में कुम्भ राशि होती है, वह कूटनीतिज्ञ एवं राजनीति में प्रवीण होता हैं। विरोधियों को भी अपने वश में कर इच्छानुकूल कार्य करा सकने में यह समर्थ होता है। दूसरे को समझने तथा दूसरों से अपना काम बना लेने में यह सक्षम होता है। जीवन प्रकार सादा रहता है, परन्तु आकस्मिक खर्चे भी कई बार आ जाते हैं, जिससे इसका आर्थिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। आय की अपेक्षा व्यय हमेशा बढ़ा-चढ़ा रहता है।

मीन—जिस जातक के दशम भाव में मीन राशि होती है, वह जल से सम्बन्धित कार्यों या नौकरी में विशेष प्रगति करता है। व्यापार में भी यह इसी प्रकार के व्यापार से लाभ उठा सकता है। समाज में इसका सम्मान होता है तथा नीतियुक्त कार्य करने वाला ऐसा जातक परिवार में प्रिय एवं उन्नति के पद पर आसीन होता है।

राशि विवेचन के पश्चात अब आगे के पृष्ठों में दशम भावगत ग्रहों का शुभाशुभ फल विवेचन करेंगे।

सूर्य—जिस जातक की जन्मकुण्डली के दसवें भाव में सूर्य होता है, वह तेजस्वी, सच्चरित्र एवं विद्वान पुरुष होता है। यदि अन्य ग्रह कारक हों तो जातक नौकरी में प्रगति करता है, परन्तु राज्य भंग योग भी होता

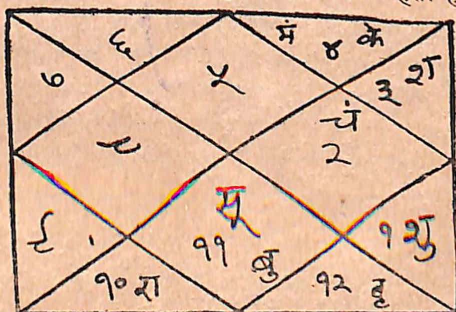


श्री वीर विक्रमादित्य

है। नौकरी काल में कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। जातक को मातृ-सुख अत्यल्प होता है अथवा उसके तथा माता के विचारों में परस्पर

विरोध होता है जिसके कारण वह माता से दूर ही रहता है। पितृ-सुख भी कम ही कहा जा सकता है एवं पिता का धन उसे प्राप्त नहीं होता। आकस्मिक व्यय कई बार हो जाता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति चिंतनीय ही रहती है। जीवन-प्रकार उत्तम होता है तथा शान-मान मर्यादा से जीवन बिताने का इच्छुक होता है। समाज में यह व्यक्ति श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है।

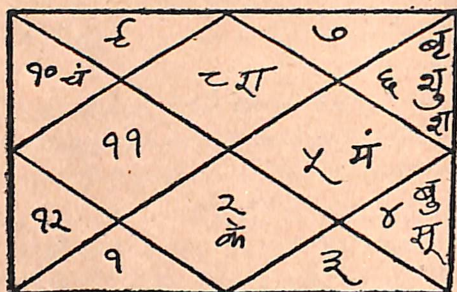
चन्द्र—दशम भाव में चन्द्र की स्थिति शुभ मानी गई है। जिस जातक के दशम भाव में चन्द्र होता है, उसका बचपन अत्यन्त सुन्दरता से व्यतीत होता है। भाग्य निरंतर उसका साथ देता है एवं सोलह वर्ष के बाद ही वह उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है। ऐसा जातक स्वस्थ सुन्दर, कुलीन, गुणवान एवं नीति को समझने वाला होता है। समय की नाजुकता को यह तुरन्त पहचान लेता है एवं परिस्थितियों को भाँप कर तदनुकूल कार्य करने में सफल हो जाता है। नौकरी में जातक लाभ प्राप्त करता है तथा शीघ्र ही उन्नति के पद पर पहुँच जाता है। यदि दशमस्थ चन्द्र उच्च या स्वराशि का होता है तो जातक पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करता हुआ समाज में लोकप्रियता अर्जित करता है। ऐसा जातक आकर्षक व्यक्तित्व रखने के साथ-साथ विरोधियों में भी प्रशंसा प्राप्त करता है, परन्तु यदि चन्द्र क्षीण अथवा शत्रु क्षेत्री होता है तो जातक वृद्धावस्था में श्वास रोग से भी पीड़ित रहता है एवं मातृ-धन से वंचित रहता है।



हेरॉल्ड विल्सन
(इंगलैंड के प्रधानमंत्री)

मंगल—जिस मनुष्य की जन्म कुण्डली के दशम भाव में मंगल हो,

वह एक सफल व्यापारी सिद्ध होता हैं। यह जातक न नौकरी कर सकता है और न नौकरी में इसका मन ही लगता है। नौकरी में तरक्की के अवसर बहुत ही कम होते हैं। ऐसे जातक का बाल्यकाल अत्यन्त गरीबी में व्यतीत

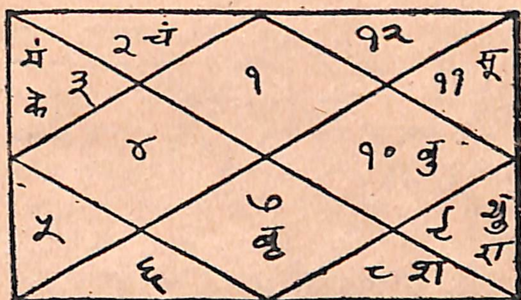


हेनरी फोर्ड
(विश्व के प्रमुख व्यवसायी)

होता है। माता की मृत्यु उसके बचपन में ही हो जाती है। फलस्वरूप यह जातक मातृ-सुख से वंचित रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इसके सामने कई कठिनाइयाँ रहती हैं, अतः इसे सुचारू रूप से शिक्षा प्राप्त नहीं होती और न शिक्षा में प्रगति ही कर पाता है, परन्तु ऐसे जातक कठोर परिश्रमी होते हैं। आगे बढ़ने की इनमें अदम्य लालसा होती है और बाधाओं तथा संकटों में इनका व्यक्तित्व निखरता है। श्रम की महत्ता ये समझते हैं और अवसर को पहचानने की इनमें अपूर्व क्षमता होती है। अपनी सूझ-बूझ से ये व्यापार में उन्नति कर लेते हैं। यौवनावस्था संघर्षों में बीतती है, परन्तु प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था में ये जातक पूर्ण सुखोपभोग करते हैं। अपने जीवन लक्ष्य को ये प्राप्त कर लेते हैं।

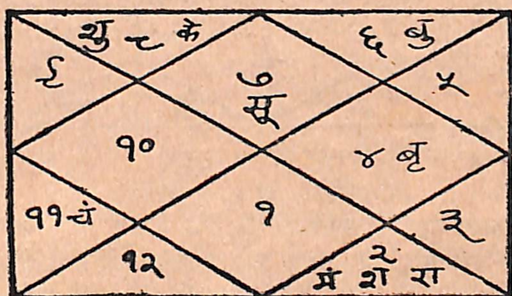
बुध—जिस मनुष्य के दशम भाव में बुध होता है, वह अत्यन्त विनीत एवं कुशल प्रशासक होता है। निम्न स्तर से उन्नति करते-करते ये उच्चतम पद प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। राजनीति के क्षेत्र में ये सफल रहते हैं। इनके विचार सर्वथा मौलिक होते हैं तथा इनकी राजनीति दूषित एवं अन्याय के धरातल पर स्थित नहीं होती, अपितु राजनीति एवं धर्म तथा अहिंसा का अपूर्व सम्मेलन इनके विचारों में देखा जा सकता है। बचपन इनका साधारण होता तथा साधारण कुल में ही जन्म लेते हैं, पर

अपने विचारों तथा कार्यों के फलस्वरूप ये विख्यात हो जाते हैं। ईमानदारी इनके जीवन का ध्येय होती है। छल-कपट से सर्वथा दूर राजनीति में होकर भी निस्पृह रहते हैं। इनका व्यक्तित्व उच्च एव भव्य होता है। आदरणीय जयनारायण जी की कुण्डली में भी दशमस्थ बुध इन्हीं बातों का हेतु है।



श्री जयनारायण व्यास
(राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री)

बृहस्पति—दशम भावस्थ बृहस्पति जातक को धार्मिक विचारों का बना देता है। यद्यपि ऐसा जातक राजनीति में प्रवेश करता है, परन्तु

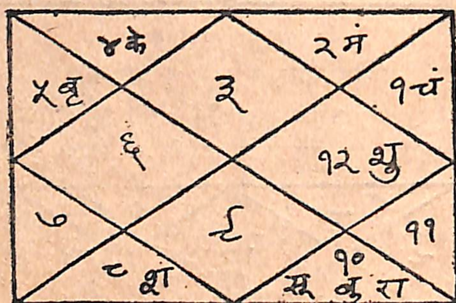


आगस्टस सीजर

फिर भी धर्म उसके जीवन पर हावी रहता है। धार्मिक कार्यों में यह आगे बढ़ कर भाग लेता है तथा अपने विचारों में उज्जवलता प्रकट करता है। नौकरी के क्षेत्र में ये जातक सफल होते हैं। यद्यपि ये जातक व्यापारी

होते हैं, परन्तु फिर भी ऐसे व्यक्ति व्यापार में सफल नहीं होते, इसकी अपेक्षा नौकरी में उन्नति के अवसर ज्यादा रहते हैं। पिता का यह भक्त होता है तथा माता की आज्ञा का भी यह उल्लंघन नहीं करता। समाज में इसे सम्मान मिलता है तथा इसके व्यवहार एवं आदर्श से लोग प्रभावित होते हैं। तीर्थयात्रायें खूब होती हैं तथा सादा जीवन बिताने का इच्छुक होता है।

शुक्र—दशम भाव में यदि शुक्र हो तो जातक व्यापार करने पर हानि उठाता है, इसके विपरीत नौकरी में उन्नति के अवसर अधिक रहते हैं। एक साधारण कुल में जन्म लेकर भी ये जातक नौकरी में उच्च पद पर पहुँच जाते हैं। धार्मिक क्षेत्र में ये सहिष्णु होते हैं तथा काव्य, संगीत, नाटकादि कलाओं में गहरी रुचि रखते हैं। जीवन के मध्यकाल में इन्हें संघर्ष करना पड़ता है, परन्तु प्रौढ़ावस्था में इन्हें संघर्ष का सुफल मिल जाता है। वृद्धावस्था आनन्दमय होती है। जातक पूर्ण प्रसिद्धि प्राप्त करता है तथा 'सादा जवीन उच्च विचार' उसका ध्येय रहता है।

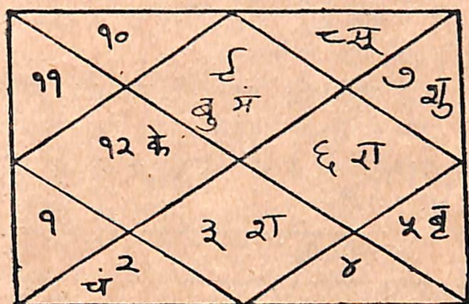


डाक्टर जाकिरहुसैन
(भुतपूर्व राष्ट्रपति-भारत)

शनि—दशम भाव में शनि की स्थिति जातक को धनवान बनाती है। नौकरी में जातक प्रगति करते हैं। यद्यपि इन्हें आजीविका के लिए कठोर श्रम करना पड़ता है, परन्तु फिर भी ये अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं। संगीत, नृत्यादि कलाओं में यह रुचि रखते हैं, जीवन को ऐश-आराम से बिताना इनका ध्येय होता है। भोगी स्वभाव के ऐसे व्यक्ति परिस्थिति को समझ कर तदनुकूल कार्य करने वाले होते हैं। इनके रहन-सहन में प्रदर्शन अधिक रहता है। आकस्मिक खर्चे भी आते रहते

है, जिसके कारण हाथ तंग रहता है। माता-पिता के विचारों से इसके विचार मेल नहीं खाते, फलस्वरूप परिवारिक कलह बनी रहती है। कठोर संघर्ष एवं निरन्तर श्रम में ये जातक विश्वास रखते हैं। यात्राएँ खूब करते हैं तथा प्रौढ़ावस्था सुलभ होती है।

राहु—दशम भाव में राहु की स्थिति इस बात की सूचक है कि जातक देर-सवेर निश्चय ही राजनीति के क्षेत्र में घुसेगा और सफलता प्राप्त करेगा। राजनीतिक दाव-पेंच जितनी कुशलता से यह जानता है, उतना अन्य नहीं। संसार में जितने भी प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हुए हैं, पाठक देखेंगे कि उन सबकी जन्म-कुण्डलियों के दशम भाव में राहु की स्थिति है। श्री सुभाषचन्द्र बोस, चंगेज खाँ, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, एस० के० पाटिल, महात्मा गाँधी आदि महापुरुषों की कुण्डलियों में यह योग भली प्रकार देखा जा सकता है। ऐसा जातक यदि नौकरी करता है तो वहाँ पर भी वह सफल रहता है। अफसर इससे प्रसन्न रहते हैं। जीवन का मध्य काल तथा अन्तिम काल इनके लिए स्वर्गवत् होता है।



डॉ० राजेन्द्रप्रसाद
(भारत के प्रथम राष्ट्रपति)

केतु—दशम भाव में स्थित केतु जातक को संघर्षशील एवं संयमी बना देता है। नौकरी में यह जातक प्रगति नहीं कर सकता और न इसे मातृ-सुख ही भली प्रकार प्राप्त हो सकता है। व्यापार में यह व्यक्ति सफल हो सकता है। बाल्यावस्था कष्ट में बीतती है, परन्तु जीवन के उतरार्द्ध में पूर्ण ख्याति लाभ करता है। ऐसा जातक विद्वान, विचारक तथा नीतिवान होता है।



आचार्य चतुरसेन
(प्रसिद्ध हिन्दी लेखक)

दशम भावस्थ ग्रहों का संक्षिप्त विवेचन करने के पश्चात राज्येश किस स्थिति में है, इसकी एक नई विधि प्रस्तुत कर रहा हूँ। परीक्षण के तौर पर यह सही सिद्ध हुई है। अमुक जातक का राज्येश (दशम भाव का स्वामी) किस स्थिति में है तथा कैसा फल दे रहा है, इसके लिए नीचे लिखी विधि का प्रयोग करना चाहिए।

जन्म लग्न राशि को मेष से गिनो फिर जो अंक आवे, उसे दशम भावस्थ राशि से गुणा करो। इस गुणनफल को दशमेश के दशावर्षों से गुणा करो तथा जो गुणनफल आवे, उसमें १२ का भाग दो। जो शेष बचे, उसे निम्न तालिका में देखो।

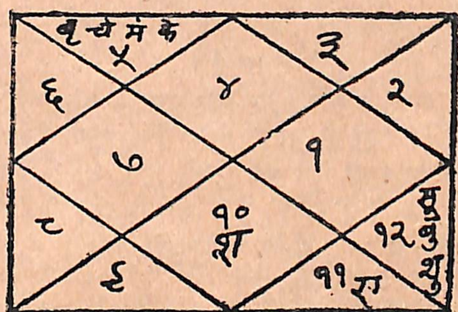
शेष बचे	स्थिति	फल
१	स्नान	साधारण
२	भ्रमण	साधारण
३	भोजन	साधारण
४	निद्रा	अत्यन्त साधारण
५	पूजा	साधारण
६	दैनिक चर्या	मिश्रित फल
७	क्रोधित	निकृष्ट
८	आराम	निकृष्ट
९	प्रसन्न	उत्तम

१०	खेल	साधारण
११	वार्तालाप	मिश्रित
०	दुःखी	निकृष्ट

पाठकों की सुगमता के लिये मैं एक जातक की कुण्डली पर उपर्युक्त विधि घटित करके स्पष्ट कर रहा हूँ, परन्तु इससे पूर्व प्रत्येक ग्रह के दशावर्ष जान लेने चाहिएँ, वे इस प्रकार हैं।

क्रम संख्या	ग्रह	दशावर्ष
१	सूर्य	६
२	चन्द्र	१०
३	मंगल	७
४	राहु	१८
५	बृहस्पति	१६
६	शनि	१९
७	बुध	१७
८	केतु	७
९	शुक्र	२०

उदाहरणार्थ निम्न जन्मकुण्डली का दशम भाव फल कैसा है, इसे जानने के लिए उपर्युक्त विधि का प्रयोग किया जायगा।



श्रीमती भगवतीदेवी

जन्म लग्न कर्क है, जो कि मेष से गिनने पर चौथी है तथा दशम भाव में मेष राशि है, जिसका अंक १ है। अतः ४ को १ से गुणा किया,

तो गुणनफल ४ आया ।

दशम भाव का स्वामी मंगल है, जिसके दशा वर्ष ७ है, अतः अब ४ को ७ से गुणा किया तो गुणनफल २८ आए । इनमें १२ का भाग दिया तो २ लब्धि आई तथा ४ शेष रहे । पूर्व निर्दिष्ट चक्र में चौथे अंक पर लिखा है—निद्रा, अर्थात दशमेष निद्रावस्था में है, जिसका फल अत्यन्त साधारण है ।

अत स्पष्ट है कि संबंधित जातक प्रथम तो नौकरी करेगा ही नहीं और यदि करेगा भी तो कोई विशेष प्रगति संभव नहीं है ।

अब मैं आगे के पृष्ठों में दशम भाव से संबंधित विशेष योग प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

(१) दशम भाव से आगे दशम भाव का स्वामी भी साधारण श्रेणी का राज्येश कहा जाता है ।
(२) दशमेश शुक्र से युक्त केन्द्र में बैठा हो, द्वादश में बुध हो तो जातक महान पुण्यात्मा बनता है ।
(३) लग्नेश और दशमेश एक साथ हों तो जातक नौकरी में विशेष प्रगति करेगा ।
(४) बुध अपनी उच्चराशि में राहु-केतु से रहित होकर दशमेश के साथ नवम भाव में हो तो जातक निश्चय ही उत्तम कोटि के यज्ञ करता है ।
(५) राज्य स्थान से दशम भाव में पापग्रह या क्रूर ग्रह हों जातक साधारण स्थिति प्राप्त करता है ।
(६) नवम, दशम, सप्तम, पंचम और लग्न ये पाँच भाव शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो जातक विश्व में विख्यात होता है ।
(७) बलवान पाँच या चार ग्रह केन्द्र (१, ४, ७, १०) अथवा त्रिकोण (५, ६) में हों हो जातक वृद्धावस्था में संन्यासी होता है ।
(८) शुक्र और चन्द्रमा बलहीन लग्नेश को देखते हों हो जातक साधारण स्थिति में ही रहता है ।
(९) नवम भाव में चन्द्र हो तथा उसे कोई भी ग्रह न देखता हो तो जातक निश्चय ही संन्यासी बनता है ।
(१०) दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक गजेटेड ऑफीसर होता है ।

(११) लग्नेश शनि को देखता हो और अन्य ग्रह लग्नेश को न देखते हों तो भी प्रबल संन्यास योग समझना चाहिए ।

(१२) लग्न के दशम भाव में सूर्य हो तो पिता से धन मिले, चन्द्र हो तो माता से, मंगल हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो ससुराल से, शनि हो तो सेवक से तथा राहु-केतु हों तो छल प्रपंच से धन मिले ।

व्यापार

(१३) लग्न से दशम स्थान का स्वामी सूर्य के नवांश में हो तो जातक दवा, ऊन, घास, धान्य, सोना, मोती, आदि के व्यापार से लाभ उठा सकता है ।

(१४) चन्द्र के नवांश में हो तो मोती, कृषि, मिट्टी के खिलौने, बच्चों के खिलौने, फैंसी स्टोर, रेडीमेड स्टोर आदि के व्यापार से लाभ उठाता है ।

(१५) मंगल के नवांश में हो तो ताँबा व पीतल के बर्तनों की दुकान एवं कोयला आदि के व्यापार से ।

(१६) बुध के नवांश में हो तो लकड़ी का कारख़ाना, फर्नीचर, ज्योतिष-शास्त्र, वैद्यक आदि से ।

(१७) गुरु के नवांश में हो तो अध्यापक वृत्ति तथा स्टेशनरी आदि के व्यापार से ।

(१८) शुक्र के नवांश में हो तो चौपायों के ख़रीदने-बेचने से, गुड़, चावल किराना के व्यापार से अथवा फैन्सी स्टोर के व्यापार से ।

(१९) शनि के नवांश में हो लोहे का व्यापार, तिल, तेल, ऊन आदि के व्यापार से विशेष प्रगति कर सकता है ।

(२०) लग्न से द्वितीय या एकादश भाव में प्रबल ग्रह हो तो जातक को व्यापार से विशेष लाभ होता है ।

(२१) दशमेश बृहस्पति यदि त्रिकोण में हो तो जातक निश्चय ही उच्च पद प्राप्त कर संसार के समस्त भोगों का सुखोपभोग करता है ।

एकादश भाव

एकादश भाव जन्म कुण्डली में अपना ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि मानव-जीवन सुचारु रूप से तभी चल सकता है, जबकि मानव के पास आय के अच्छे स्रोत हों। यदि आय ठीक नहीं होगी तो मानव जीवन अस्त-व्यस्त-सा हो जाएगा। इसलिए एकादश भाव का अध्ययन और विशेष कर इस अर्थप्रधान युग में तो इस भाव का महत्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण समझा जा सकता है।

एकादश भाव से विचारणीय विषय

१. लाभ
२. आमदनी, आमदनी का प्रकार
३. आवश्यकता पूर्ति
४. गुप्त धन, राज द्रव्य
५. बड़े भाई का सुख, बड़े भाईयों की संख्या
६. बड़े भाईयों से सहायता, लाभ-हानि
७. स्वतन्त्र, चिन्तन
८. कृपणता, उदारता
९. जीवन निर्वाह के स्रोत

उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यानपूर्वक देखें तो पता चलेगा कि जीवन की मूलभूत आवश्यकता आमदनी अथवा आय है, एवं उसका सीधा-सम्बन्ध एकादश भाव से है, अतः एकादश भाव का सूक्ष्म अध्ययन परमावश्यक है।

एकादश भाव का अध्ययन करते समय निम्न तथ्यों को भली प्रकार ध्यान में रखना चाहिए—

१. एकादश भाव
२. एकादश भाव का स्वामी
३. एकादश भाव स्थित ग्रह
४. एकादश भाव पर ग्रहों की दृष्टियाँ
५. एकादशेश (आयेश) के बैठने की राशि
६. आयेश पर अन्य ग्रहों की दृष्टियाँ
७. आयेश का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध
८. भाव दशा

९. महादशा अन्तर्दशा आदि।

अब आगे के पृष्ठों में एकादश भाव स्थित राशियों का संक्षेप में विवेचन करेंगे।

मेष—एकादश भाव में मेष राशि शुभ मानी गई है। मेष राशि होने से यह पता चलता है कि जातक घोर परिश्रमी है। आय को बढ़ाने में वह हर संभव प्रयत्न करता रहता है तथा आय के एक से अधिक स्रोत बनाता है। उसकी बाल्यावस्था साधारण स्तर की होती है तथा पिता द्वारा उपार्जित धन उसे नहीं के बराबर मिलता है। जीवन के २८ वें वर्ष के बाद से उसकी आर्थिक स्थिति ठीक होने लगती है। ऐसा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में स्वतः ही सचेष्ट रहता है। बड़े भाई उसके कम होते हैं तथा उनसे जातक को कोई विशेष लाभ नहीं होता। स्वतन्त्र चिन्तन, सही निर्णय लेने की क्षमता एवं योग्यता के बल पर ही वह जातक प्रगति कर लेता है।

वृष—यदि एकादश भाव में वृष राशि हो तो ऐसे व्यक्ति की जान-पहचान विशिष्ट लोगों से होती है तथा अपने से ऊँचे लोगों की संगति में रहता है। स्त्रियों से भी इसे लाभ मिलता है। जीवन के मध्यकाल में आर्थिक दृष्टि से एक गहरा मोड़ आता है, जिसके फलस्वरूप जातक उन्नति के उच्च पद पर पहुँच जाता है। आय के मामले में यह पूर्णतः सावधान रहता है तथा आय बढ़ाने के प्रयत्न करता है। जरूरत से ज्यादा परिश्रम करने पर भी उसे वांछित वस्तु प्राप्त नहीं होती। श्रम की अपेक्षा श्रम का मूल्य उसे कम प्राप्त होता है। भाइयों के साथ इसके सम्बन्ध सामान्य ही कहे जा सकते हैं।

मिथुन—जिसके एकादश भाव में मिथुन राशि हो वह आय के लिए निरन्तर श्रम करते रहने पर भी उचित आय प्राप्त नहीं कर पाता। उसकी आय के स्रोत सीमित होते हैं तथा पैसों के लिए पूर्ण संघर्ष करना पड़ता है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार में यह लाभ उठाता है। आवश्यकता पूर्ति इसकी हो जाती है, परन्तु जो भी कार्य सम्पन्न होता है प्रथमतः उसके बीच में व्यवधान आते हैं और फिर वह कार्य पूरा होता है। आर्थिक स्थिति चिन्तनीय कही जा सकती है, परन्तु जीवन के ४२ वें वर्ष के बाद इसकी आय के कई स्रोत बनते हैं तथा आय अप्रत्याशित रूप से बढ़ जाती है। बड़े भाई का सुख साधारण होता है तथा परिवार में इसके कई

विरोधी होते हैं। ऐसा व्यक्ति होशियार, समय को पहचानने वाला एवं सहिष्णु होता है।

कर्क—जिसके एकादश भाव में कर्क राशि हो, वह मनुष्य नौकरी में ही प्रगति करता है। भावुक स्वभाव होने के कारण यह अपने सम्बन्धियों एवं परिवार के लिए व्यय करता रहता है, परन्तु यह एक अच्छा मित्र होता है तथा मित्रता (सच्ची मित्रता) के लिए सब कुछ बलिदान कर देता है। यद्यपि आय के साधन सीमित होते हैं, परन्तु फिर भी इसका अधिकांश व्यय परिवार, बच्चों की शिक्षा एवं सुरुचिपूर्ण प्रसाधन तथा सजावट पर व्यय होता है। यह एक आदर्श गृहस्थ कहा जा सकता है। जीवन में भाग्य इसका साथ देता है तथा लाटरी से भी धन प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति दृढ़ निश्चयी एवं अपनी धुन का पक्का होता है।

सिंह—जिस जातक की जन्म कुण्डली के एकादश भाव में सिंह राशि हो वह वणिक् वृत्ति वाला व्यक्ति होता है। प्रत्येक कार्य को करने से पहले यही सोचता है कि इस कार्य को करने से मुझे लाभ है अथवा नहीं और यदि लाभ है भी तो कितना? नौकरी में उन्नति के अवसर कम होते हैं, इसकी अपेक्षा ऐसा जातक व्यापार में खूब चमकता है और धनवान बनता है। इसका स्वभाव मृदु होता है तथा सभी प्रकार के लोगों से सभ्यतापूर्ण ढंग से पेश आता है। रहन-सहन सादा होते हुए भी सुरुचिपूर्ण कहा जा सकता है। व्यर्थ का व्यय यह करता नहीं तथा आमोद-प्रमोद को जीवन में अधिक महत्व नहीं देता। श्रम में इसका विश्वास रहता है तथा श्रम के बल पर ही यह अपनी उन्नति कर लेता है।

कन्या—यदि एकादश भाव में कन्या राशि हो तो जातक मेहनती होने के साथ-साथ दूरदर्शी भी होता है। वह जो कुछ भी कार्य करता है उसे खूब सोच-विचार कर करता है। राजनीतिक कार्यों से यह लाभ उठा सकता है तथा त्वरित निर्णय लेने की यह शक्ति रखता है। आमदनी के स्रोत भी एक से अधिक होते हैं तथा इनकी यही प्रवृत्ति होती है कि येन-केन-प्रकारेण अर्थ संचय होना ही चाहिए तथा आय बढ़नी चाहिए इसके लिए वह घोर परिश्रम भी करता है। परिवार से तथा भाइयों से इस जातक को विशेष लाभ नहीं होता, अपितु यह परिवार के लिए पूर्ण सहायक होता है। जीवन निर्वाह एवं जीवन की आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं।

तुला – जिस जातक की जन्म कुण्डली के एकादश भाव में तुला राशि होती है वह व्यक्ति धीर, गम्भीर, अवसर की उचितानुचितता को समझने वाला एवं नाजुक क्षणों में अद्भुत प्रतिभा दिखाने वाला होता है। परिवार एवं स्वजन इसके सहायक होते हैं तथा उसकी उन्नति में वे योग भी देते हैं।

वृश्चिक--जिस जातक के एकादश भाव में वृश्चिक राशि होती है वह एक साथ कई कार्य करने में निपुण होता है। भूमि अथवा भूमि सम्बन्धी कार्यों में उसका व्यय विशेष होता है एवं कृषि से वह लाभ उठाता है। समय पर सही चोट करने में यह निपुण होता है। ऐसा ही व्यक्ति देश, काल और पात्र को ध्यान में रख कर (भावी योजना निर्माण को विचार कर) अपने भावों को व्यक्त करता है।

धनु—जिस जातक के एकादश भाव में धनु राशि होती है, वह व्यापार में प्रगति करता है। नौकरी में इस जातक की उन्नति के अवसर कम ही होते हैं। आफीसरों एवं उच्चपदस्थ लोगों से इसकी जान-पहचान होती है, जिससे यह शनैः-शनैः प्रगति करता रहता है। हँसमुख, मिलनसार एवं तीक्ष्ण बुद्धि का ऐसा जातक प्रत्येक कार्य को सोच-विचार कर करता है। वह जो कुछ भी कहता है समझ कर कहता है तथा कहने के बाद अपने वचनों पर दृढ़ रहता है। आमदनी के स्रोत कई होते हैं। जीवन का एक ही ध्येय होता है कि यथासंभव आमदनी में विस्तार किया जाय। आय की अपेक्षा व्यय बढ़ा-चढ़ा रहने पर भी यह जीवन में ऐसा संतुलन कायम करता है कि इसे अभाव देखना नहीं पड़ता तथा विपत्ति के समय के लिए यह कुछ न कुछ बचाकर रखता है। आवश्यकताएँ सीमित होती हैं तथा जीवन में उन आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो जाती है।

मकर—जिस मनुष्य की कुण्डली के एकादश भाव में मकर राशि हो, वह चंचल प्रवृत्ति का युवक होता है तथा उसका दिमाग अत्यन्त गतिशील रहता है। एक ही विन्दु पर घंटों सोचने की इसकी आदत नहीं होती, परन्तु कम समय में ही यह बात की तह तक पहुँच जाता है एवं सही निर्णय लेने की क्षमता रखता है। नौकरी में इस जातक की उन्नति के कई अवसर रहते हैं तथा नौकरी में ही प्रगति भी करता है। आय के भी साधन होते हैं वे ठोस होते हैं तथा स्थायी आमदनी के कारण यह

अर्थ संचय भी कर लेता है। परिवार तथा समाज में लोकप्रिय होता है तथा भाइयों से इसके स्नेह सम्बन्ध रहते हैं। अपने वचनों का पालक होता है तथा जो कुछ भी कहता है उसे पूरा करने का भरसक प्रयत्न करता है। सजावटप्रिय यह व्यक्ति आमोद-प्रमोद के साधनों पर व्यय करता रहता है। सुरुचि एवं सफाई से इसे विशेष मोह होता है।

कुम्भ—जिस व्यक्ति की कुण्डली के एकादश भाव में कुम्भ राशि होती है, वह क्रोधी स्वभाव का एवं अपने हठ पर अड़ने वाला व्यक्ति होता है। अपने सम्मान की रक्षा में वह सतत सचेष्ट रहता है तथा ईमानदारी उनके जीवन का ध्येय रहता है। यद्यपि उसके जीवन में प्रलोभन आते हैं तथा बुरे कार्यों से अनायास धन प्राप्ति के मौके मिलते हैं, परन्तु यह अपने आदर्शों से च्युत नहीं होता। यह वही करता है जो नीतिसम्मत एवं उचित होता है। बाल्यावस्था गरीबी में बीतती है, परंतु श्रम के बल पर ये उन्नति पथ पर अग्रसर होकर उच्च पद पर पहुँच जाते हैं। व्यापार की उपेक्षा नौकरी में ये विशेष लाभ प्राप्त करते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में ये सफल होते हैं।

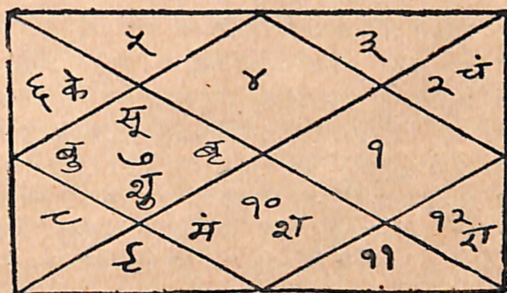
मीन—जिस जातक के एकादश भाव में मीन राशि होती है, वह धनवान होता है तथा जीवन में अपने कार्यों से ख्याति लाभ करता है। ऐसे जातक किसी विशिष्ट क्षेत्र में चमकते हैं। प्रसिद्ध गायक, आलोचक अथवा प्रसिद्ध वैज्ञानिक होते हैं। आय के स्रोत इनके स्थायी होते हैं तथा जीवन की वे सभी आवश्यकताएँ पूरी कर लेते हैं, जो ये चाहते हैं। इनका जीवन सीधा-सादा, सात्विक एवं उच्च होता है। परिवार का स्नेह इन्हें नहीं प्राप्त होता, फिर भी ये आगे बढ़ते रहते हैं। संकटों, बाधाओं एवं विपरीत परिस्थितियों में ही इनकी प्रतिभा के दर्शन होते हैं। राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में ये पूर्ण प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। इनके विचार स्वतन्त्र तथा मौलिक होते हैं। जीवन आडम्बर शून्य तथा सात्विक होता है। जीवन में ऐसे व्यक्ति पूर्ण सफल कहे जा सकते हैं।

एकादश भाव स्थित राशियों का विवेचन करने के पश्चात अब एकादश भाव स्थित ग्रहों का शुभाशुभत्व स्पष्ट किया जा रहा है।

सूर्य—एकादश भाव में यदि सूर्य हो तो व्यक्ति अड़ियल प्रवृत्ति का होता है। जो एक बार सोच लेता है उसे पूरा करने को कृतसंकल्प रहता है और अन्ततः अपने विचारों को मूर्त रूप दे ही देता है। आर्थिक दृष्टि

से ऐसा व्यक्ति सम्पन्न होता है। बचपन सुखमय स्थिति में व्यतीत होता है तथा जीवन के मध्यकाल में वह अपने प्रयत्नों से अर्थ संचय भी कर लेता है। जीवन की आवश्यकताएँ यह पूरी कर लेता है तथा जीवन में ख्याति एवं लाभ प्राप्त करता है। परिवार से इसके विचारों में भिन्नता रहती है, फिर भी वह जो भी कहता है, वह उचित एवं सोच-समझ कर कहता है। ऐसा व्यक्ति सफल वकील अथवा सफल राजनीतिज्ञ होता है। जीवन में इसके अभाव नहीं रहता तथा स्वतन्त्र चिन्तन के कारण यह प्रशंसा प्राप्त करता है।

चन्द्र—एकादश भाव में चन्द्र बैठकर जातक को अदम्य साहस प्रदान करता है। ऐसा जातक दृढ़ निश्चयी एवं अपने हठ के लिए प्रसिद्ध होता है। सूझ-बूझ एवं नेतृत्व करने की इसमें अद्भुत क्षमता होती है तथा यह जो भी कार्य करता है, वह सोच-विचार कर करता है। शत्रु इसके नाम से श्रीहीन हो जाता है। ऐसा जातक युवावस्था में विख्यात होता है।



सरदार वल्लभभाई पटेल

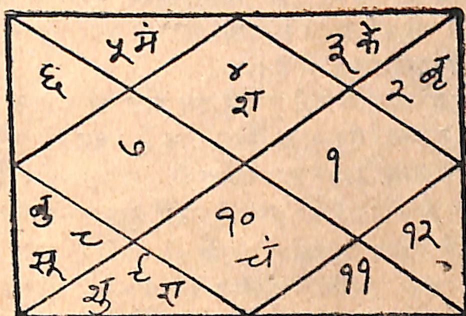
बचपन इसका साधारण स्तर का ही होता है परन्तु जीवन के १६वें साल के बाद से भाग्योदय होता है। यदि ये जातक नौकरी में होते हैं तो उच्च पदाधिकारी बनते हैं। व्यापार में भी ये जातक लाभ उठाते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे व्यक्ति पूर्ण सफल कहे जा सकते हैं। इनके पास आय के साधन ठोस होते हैं, फलस्वरूप जीवन में धन का अभाव नहीं रहता। इनके जीवन की आवश्यकताएं सहज ही पूरी हो जाती हैं

तथा समाज में कीर्ति अर्जित करते हैं। इनके विचार सर्वथा मौलिक एवं अछूते होते हैं।

मंगल—जिस जातक के एकादश भाव में मंगल होता है, वह अपने पिता का धन नहीं भोग पाता। पैत्रिक सम्पत्ति उसे नहीं के बराबर मिलती है तथा शिक्षण काल में भी कई व्यवधान आते हैं, जिससे शिक्षा सुचारू रूप से नहीं हो पाती। यदि मंगल स्वगृही होकर एकादश भाव में हो तो कारक ग्रह बन जाता है तथा जातक को लाभ कराता है। ऐसे व्यक्ति कठोर परिश्रमी होते हैं। आजीविका के लिए इन्हें घोर श्रम करना पड़ता है तथा बचपन में मुसीबतें उठाते हैं, परन्तु जीवन के २८वें वर्ष के बाद से भाग्योदय होता है एवं उसके बाद इनके पास धन संचय होने लगता है। आमदनी में भी स्थायी लाभ होता है। स्वजनों एवं भाइयों से जातक को विशेष लाभ नहीं होता, परन्तु यह व्यक्ति भाइयों की पूरी सहायता करने का इच्छुक रहता है। त्वरित निर्णय लेने की क्षमता रखने वाला ऐसा व्यक्ति अपने जीवन की प्रौढ़ावस्था में पूर्ण सफल होता है।

बुध—जिस जातक की जन्म कुण्डली के एकादश भाव में बुध होता है, वह व्यक्ति अत्यन्त चतुर एवं परिस्थितियों के अनुकूल कार्य करने वाला होता है। अपनी स्थिति के अनुसार ही यह अपना रहन-सहन रखता है। यह व्यक्ति नौकरी में विशेष लाभ नहीं उठा पाता एवं इसकी जितनी योग्यता होती है, उतना फल भी इसे प्राप्त नहीं होता, फलस्वरूप इस में क्षणिक-सी हीन भावना भी आ जाती है, परन्तु ऐसे व्यक्ति में अदम्य साहस एवं दृढ़ निश्चय होता है। श्रम को ही सर्वोपरि समझता है तथा निरन्तर श्रम करता है। श्रम के बल पर ही यह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है। भाइयों से इसे विशेष लाभ नहीं मिलता तथा न परिवार ही इसकी उन्नति में सहायक होता है। एक प्रकार से देखा जाय तो यह व्यक्ति 'सैल्फ मेड मेन' होता है। उच्चाधिकारियों से इसका विशेष सम्पर्क रहता है। जीवन के मध्यकाल में इसे अपनी प्रतिभा दिखाने का सुअवसर मिलता है एवं तभी यह उन्नति के शिखर पर पहुँचता है। आमदनी के कई स्रोत होते हैं तथा लेखन, सम्पादन तथा प्रकाशन से भी इसकी आय होती है। जीवन में यह पूर्णतया सफल रहता है।

बृहस्पति—जिस जातक के एकादश भाव में बृहस्पति होता है, वह अत्यन्त शुभ माना जाता है। ऐसा व्यक्ति शान्त, धीर, गंभीर एवं कुशल प्रशासक होता है। बाल्यावस्था सानन्द बीतती है तथा किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता। पूर्ण भाग्योदय १९वें वर्ष के बाद से होता है। आर्थिक दृष्टि से ऐसे जातक सम्पन्न होते हैं। आय के कई स्रोत होते हैं तथा सम्पत्ति की ओर सचेष्ट रहते हैं। जीवन के मध्यकाल में इन्हें संघर्षों का सामना करना पड़ता है। अकारण ही शत्रु एवं आलोचक हो जाते हैं, जो इनके बारे में लिखते रहते हैं, परन्तु ऐसा जातक विपत्तियों से घबराता नहीं तथा संकटों एवं बाधाओं में इनका व्यक्तित्व निखरता है। निरन्तर श्रम करते रहना ही इनका स्वभाव होता है। लेखन तथा प्रकाशन के क्षेत्र में भी ये प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं तथा राजकीय पुरस्कार प्राप्त करते



श्रीमती इन्दिरा गाँधी

हैं। पारिवारिक जीवन सामान्य होता हैं, भाइयों से विशेष लाभ नहीं रहता। इनके विचार मौलिक एवं उच्च होते हैं तथा सादा जीवन पद्धति होती है। जीवन में इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है तथा सफल कहे जाते हैं।

शुक्र—जिसके एकादश भाव में शुक्र होता है, वह मौज-शौक से जीवन बिताने वाला होता है। यद्यपि इसके पास आय के कई स्रोत होते हैं, पर व्यय हमेशा बढ़ा-चढ़ा रहता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं हो पाती। शिक्षा काल में भी इसके कई व्यवधान आते हैं तथा सुचारु रूप से शिक्षा नहीं हो पाती। उच्च शिक्षा में बाधाएँ भी संभव हैं। नौकरी में ऐसे जातक सफल नहीं कहे जा सकते, क्योंकि अधिकारियों

तथा इनमें खींचतान होती रहती है। कपड़ों पर तथा सुगंधित द्रव्यों पर इनका विशेष खर्च होता है। घर की सजावट पर तथा कपड़ों की सुरुचि का भी विशेष ध्यान रखते हैं। ऐसे व्यक्ति शान-शौकत तथा तड़क-भड़क से रहने वाले होते हैं। प्रेम के क्षेत्र में ये अग्रणी रहते हैं तथा विशेष व्यय करते देखे गए हैं। जीवन में ये जातक सफल कहे जाते हैं।

शनि—जिस जातक के एकादश भाव में शनि होता है, वह कुशल प्रशासक तथा उच्च पदस्थ अधिकारी होता है। उसका व्यक्तित्व अत्यन्त भव्य होता है तथा समाज में उसका सम्मान होता है। ऐसे व्यक्ति के पास आय के कई स्रोत होते हैं, जिनसे स्थायी आमदनी होती रहती है। व्यापारिक क्षेत्र में ऐसे जातक प्रखरता से चमकते हैं एवं अपने अनुभव तथा युक्तियों के बल पर व्यापार का विस्तार कर करने में समर्थ होते हैं। परिवार में भी ऐसे व्यक्ति का सम्मान होता है तथा जीवन के ३६वें वर्ष के बाद से पूर्ण भाग्योदय होता है।

राहु—एकादश भाव में बैठा राहु इस बात का द्योतक है कि जातक प्रखर प्रतिभा सम्पन्न एवं राजनीतिक पटु है। वह जो भी कार्य करता है, पूरी तरह से सोच बिचार कर करता है तथा एक बार जो ध्येय बना लेता है अथवा जो निश्चय कर लेता है, उसे पूरा करके ही छोड़ता है। जीवन में सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। जाति वाले तथा परिवार वाले इसकी उन्नति में विशेष सहायक नहीं होते। शान-शौकत से जीवन बिताने का यह इच्छुक होता है। व्यय करने के मामले में यह पूरी सावधानी वरतता है।

केतु—जिस जातक के एकादश भाव में केतु होता है, वह अच्छी स्थिति में होता है। यद्यपि यह नौकरी के क्षेत्र में विशेष प्रगति नहीं पाता, फिर भी इसकी आय के कई स्रोत होते हैं तथा जीवन को सुखमय बनाने का यह भरसक प्रयत्न करता है। जीवन के ३१वें वर्ष के बाद से आर्थिक स्थिति सुधरने लगती है, परन्तु जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं तथा धोखा भी खाना पड़ता है। ऐसा जातक चतुर एवं समय को पहचानने वाला होता है।

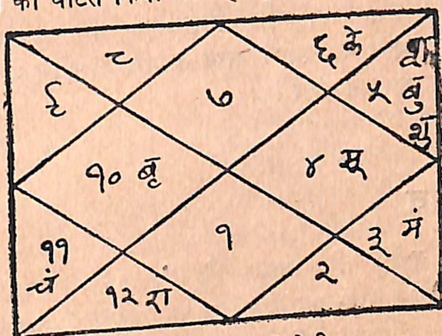
आयेश विचार

पाठकों की सहज जिज्ञासा रहती है कि किस समय आर्थिक दृष्टि से विशेष उन्नति होगी अथवा किस समय में व्यापार में विशेष लाभ होगा

इसके लिए ज्योतिष ग्रन्थों में 'सम्यक् पद्धति' का विवेचन है। पाठकों की जानकारी के लिए मैं उसे यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

लग्न राशि के अंकों को एकादश भाव में स्थित अंकों से गुणा कर दो जो गुणनफल आवे, उसे दूसरे भाव में स्थित राशि अंक से गुणा करो। इस प्रकार करने पर जो गुणनफल आवे, उसमें ७ का भाग दे दो। जो शेष रहे उसे नवम भाव से आगे गिनो, इस प्रकार जो राशि आवे, उसके स्वामी की दशा तथा आयेश की अन्तर्दशा में विशेष लाभ होगा।

नीचे एक जातक की कुण्डली उदाहरण स्वरूप दी जा रही है तथा इस उदाहरण को घटित किया जा रहा है।



श्रीमती सावित्री देवी

लग्न राशि अंक ७ को एकादश राशि अंक ५ से गुणा किया तो गुणनफल ७×५=३५ आए। इसके बाद द्वितीय भाव स्थिति राशि अंक ८ से ३५ को गुणा किया तो किया तो गुणनफल २८० आए। इस २८० में ७ का भाग दिया तो ४० हाथ लगा तथा शेष० बचा। शून्य से यहाँ तात्पर्य एक समझना चाहिए। अब नवम भाव से गिना तो नवम भाव ही आया। नवम भाव की राशि मिथुन है जिसका स्वामी बुध है तथा एकादश भाव में सिंह राशि है तथा सिंह राशि का स्वामी सूर्य है, अतः बुध की महादशा के सूर्य के अन्तर में जातक को प्रबल लाभ होगा।

एकादश भाव से सम्बन्धित विशेष योग

(१) एकादश भाव में शुभ ग्रह हो तो शुभ कार्य से धन प्राप्ति एवं अशुभ ग्रह हो या पाप ग्रह हो तो पाप कार्यों से धन की प्राप्ति समझनी चाहिए।

(२) लाभ स्थान में दो या दो से अधिक बलवान ग्रह हों तो जातक गुणवान, मित्रवान, यान, विभूषण, वस्त्र, स्त्री, भोगादि सम्पन्न विद्वान हो ।

(३) धनेश और लाभेश यदि लग्नेश के मित्र हों तो उसे सद्‌गुणों से धन प्राप्ति होती है ।

(४) सूर्य लग्नेश हो तो राज्य वर्ग से धन प्राप्ति हो । चन्द्रमा लाभेश हो तो धनवान स्वामी से, मंगल हो तो भाइयों से एवं कृषि से, बुध हो तो विद्या एवं व्यापार से, बृहस्पति हो तो व्यवहार से, शिक्षा से, शुक्र हो तो ससुराल से, स्त्री से, तथा शनि यदि लाभेश हो तो छल-कपट, राजनितिक एवं ठगी से धन प्राप्ति हो ।

(५) लाभ स्थान का स्वामी लग्न से केन्द्र या कोण में स्थित हो तो जातक धनवान होता है ।

द्वादश भाव

जीवन में वही व्यक्ति सफल हो सकता है जो आय एवं व्यय का सन्तुलन रख सके । आय-व्यय के उचित अनुपात से ही जातक की ख्याति एवं समाज में प्रतिष्ठा होती है । अतः ज्योतिष के प्रेमियों को चाहिए कि वे आय के स्थान के साथ-साथ व्यय भाव का भी विचार करें ।

द्वादश भाव से विचारणीय विषय

१. व्यय
२. हानि, घाटा, दिवाला, मुकदमेबाजी
३. व्यसन
४. बाहरी स्थानों से सम्बन्ध
५. शत्रु का विरोध
६. नेत्र पीड़ा
७. फिजूल खर्ची, अतिरिक्त एवं आकस्मिक खर्चे
८. मोक्ष एवं
९. मृत्यु के पश्चात् प्राणी की गति ।

द्वादश भाव का अध्ययन करते समय निम्न तथ्यों का भली प्रकार

विचार कर लेना चाहिए।

१. द्वादश भाव

२. द्वादशेश (व्ययेश)

३. द्वादश भाव स्थित ग्रह

४. द्वादश भाव पर ग्रहों की दृष्टियाँ

५. द्वादशेश के बैठने की राशि

६. द्वादशेश पर ग्रहों की दृष्टियाँ

७. द्वादशेश का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

८. भावदशा

९. सम्बन्धित महादशा, अन्तर्दशा आदि।

सर्वप्रथम हम द्वादश भाव स्थित राशियों के फलाफल पर विचार करेंगे।

मेष—जिस जातक के द्वादश भाव में मेष राशि होती है, वह शौकीन स्वभाव का व्यक्ति होता है। ऐश-आराम, मनोरंजन, सजावट आदि के कार्यों पर उसका विशेष व्यय होता है तथा फिजूल खर्ची के कारण उसकी आर्थिक स्थिति डावाँडोल रहती है। जीवन में इसे कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। यदि ऐसा जातक व्यापारी होता है तो जीवन के मध्य-काल में एसा संकट आता है कि साख सँभालना कठिन हो जाता है। बाहरी स्थानों से इसके सम्बन्ध व्यापक स्तर पर होते हैं। आँखों में कमजोरी रहती है तथा वृद्धावस्था में आँखों का ऑपरेशन भी होता है।

वृष—जिस जातक के द्वादश भाव में वृष राशि होती है, वह संघर्षशील व्यक्ति होता है। जीवन के उतार-चढ़ावों का वह अभ्यस्त होता है तथा बचपन से ही उन्नति करने की कामना लेकर जीवन क्षेत्र में प्रविष्ट होता है। सामाजिक क्षेत्र में भी जातक को सम्मान मिलता है। ऐसा व्यक्ति सफल प्रकाशक, टूरिस्ट, सेल्समेन अथवा लेखक हो सकता है। ३०वें वर्ष के पश्चात् जीवन की आर्थिक स्थिति सुधरती है। ऐसा व्यक्ति बुरे व्यसनों से दूर रहता है, यद्यपि इसे जीवन के विविध क्षेत्रों तथा स्थितियों में से गुजरने का अवसर मिलता है, फिर भी यह संयमी एवं सच्चरित्र होता है। व्यय पर यह पूर्ण नियन्त्रण रखता है, आय के विभिन्न स्रोत ढूँढता है, फिर भी जीवन में कई ऐसे अवसर आते हैं, जब आर्थिक स्थिति डावाँडोल हो जाती है, परन्तु यह व्यक्ति कर्मठ एवं साहसी

होता है तथा साहस के ही कारण विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में समर्थ होता है। फिज़ूलखर्ची से यह दूर रहता है तथा धार्मिक क्षेत्र में लचीला होते हुए भी सामाजिक रूढ़ियों का पालन करता है।

मिथुन—जिस जातक के द्वादश भाव में मिथुन राशि होती है, वे कल्पना प्रधान एवं भावुक व्यक्ति होते हैं। संघर्षों में उलझने से बचते रहते हैं। न तो आय पर नियन्त्रण कर सकते हैं और न ही व्यय पर नियन्त्रण कर पाते हैं। ये जिनका भी विश्वास करते हैं, जीवन में वही इसको धोखा दे देता है। विशेषतः मित्रों, सम्बन्धियों एवं नजदीकी रिश्तेदारों से कई बार धोखा खा जाते हैं। जिस पर भी ये विश्वास करते हैं, आँख मूंद कर कर लेते हैं। प्रौढ़ावस्था में इनके नेत्रों में विकार उत्पन्न होता है, तथा ऑपरेशन अथवा लम्बी सुश्रूषा करानी पड़ती है। धार्मिक क्षेत्र में ये ढोंग, पाखंड तथा सामाजिक रूढ़ियों के कट्टर विरोधी होते हैं।

कर्क—जिस जातक के द्वादश भाव में कर्क राशि होती है, वह हठ का पक्का तथा बात का धनी होता है। इन्हें बहुत जल्दी क्रोध आ जाता है तथा क्रोध आने पर उचितानुचित का भी ध्यान नहीं रहता। व्यापारिक क्षेत्र में ऐसे जातकों को विचित्र स्थितियाँ भोगनी पड़ती हैं। जीवन उतार-चढ़ावों से घिरा रहता है तथा बिश्वासघात के कारण इन्हें भारी हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शिक्षा सामान्य होती है तथा नौकरी के क्षेत्र में भी इन्हें वह कुछ प्राप्त नहीं होता, जिसके ये अधिकारी होते हैं। धीरे-धीरे प्रगति होती है। स्वभाव अस्थिर रहता है, परन्तु साहस एवं निडरता के क्षेत्र में अग्रणी होते हैं। फिज़ूलखर्ची से उनकी आर्थिक स्थिति डावाँडोल रहती है।

सिंह—जिस जातक की जन्म कुण्डली में १२वें भाव में सिंह राशि होती है, वे कोमल प्रकृति के शान्त, शिष्ट एवं मधुरभाषी होते हैं। संघर्षों से यथासंभव दूर ही रहते हैं तथा एकांत जीवन बिताने के बड़े इच्छुक होते हैं। व्यापार में ये जातक सफल नहीं हो पाते, इसके विपरीत नौकरी में इनकी उन्नति के ज्यादा अवसर रहते हैं। जीवन में ये कई व्यसन रखते हैं तथा सुरुचिपूर्ण ढंग से रहना, अच्छे एवं उज्वल परिधान पहनना इनका स्वभाव होता है। सजावट एवं कलात्मक चीजों पर इनकी गहरी रुचि होती है तथा ऐसी वस्तुओं पर ये व्यय भी करते हैं। बाहरी

थानों से इनके सम्बन्ध मधुर रहते हैं तथा अपने से उच्च स्तर के लोगों से इनका सम्पर्क होता है। धार्मिक कृत्यों में ये बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं तथा सामाजिक रूढ़ियों का कट्टरता से पालन करते हैं। जीने का प्रकार आडम्बर शून्य होता है तथा फिजूलखर्ची से बचते हैं। ऐसे व्यक्ति सामाजिक क्षेत्र में सफल कहे जा सकते हैं।

कन्या—जिस व्यक्ति के द्वादश भाव में कन्या राशि होती है, वह सफल व्यापारी होता है, तुरन्त निर्णय लेने की उसमें अद्भुत क्षमता होती है, तथा आय के कई नये स्रोत ढूँढता है, जिनसे स्थाई आमदनी हो सके। व्यय के मामले में ये बहुत सोच-समझकर चलते हैं तथा फिजूलखर्ची से इन्हें चिढ़ होती है। न तो ये स्वयं व्यसन पालते हैं और न बच्चों को ही बुरे व्यसनों की ओर प्रेरित करते हैं। सात्विकता इनके जीवन का ध्येय होता है। मुकदमेबाजी के कारण इन्हें कई बार कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है, परन्तु जीवन को जीने की अदम्य लालसा एवं संघर्षरत रहने के कारण अन्ततः शत्रु पर विजय प्राप्त कर ही लेते हैं। जीवन में आकस्मिक खर्चे कई बार आ जाते हैं, जिससे आर्थिक स्थिति डगमगा जाती है, परन्तु फिर भी ये शीघ्र ही अपने आप पर नियन्त्रण पा लेते हैं। धार्मिक रीति-रिवाजों एवं सामाजिक रूढ़ियों का भी कट्टरता से पालन करते हैं।

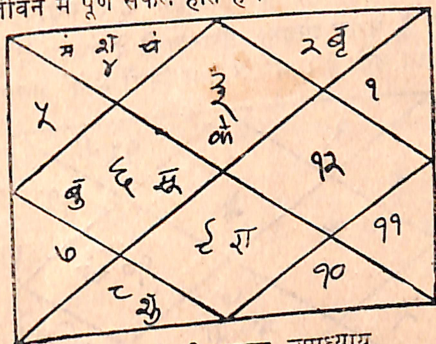
तुला—जिस जातक के द्वादश भाव में तुला राशि होती है, वे श्रम में पूर्ण विश्वास रखते हैं तथा श्रम के बल पर ही प्रगति कर दिखाते हैं। माता-पिता का बहुत कम सहयोग इन्हें मिल पाता है तथा बचपन अत्यंत कष्ट एवं अभावों में बीतता है। एक तरह से कहा जाय तो ये 'सैल्फ मेड मैन' होते हैं तथा जीवन में हर क्षण उन्नति की ओर अग्रसर होते रहते हैं। इनके सम्पर्क में विविध स्तर के तथा विभिन्न क्षेत्रों के लोग आते हैं। सभी प्रकार के लोगों से ये खुलकर मिलते हैं। बाहरी सम्पर्क भी इनका विस्तृत होता है तथा जीवन में मित्रों एवं परिचितों से लाभ उठाते हैं। किस समय किस व्यक्ति से कैसी बात की जाय अथवा विपक्षियों को भी किस प्रकार अपने अनुकूल बनाया जाय, इसे ये भली प्रकार जानते हैं। एक बार भी जो इनके सम्पर्क में आ जाता है, वह इनका हो जाता है। खर्च पर इनका नियन्त्रण नहीं रहता। यद्यपि आय के कई स्रोत इनके पास होते हैं, परन्तु फिर भी इनकी आर्थिक स्थिति

डावाँडोल ही रहती है। सजावट, भव्यता, दिखावा, आडम्बर आदि में विश्वास रखते हैं। उच्च स्तर के कपड़े पहनते हैं। जीवन में विविधता लाने के लिये मनोरंजन के कार्यों पर भी ये व्यय करते रहते हैं। स्त्रियों के सम्पर्क से ये बदनाम भी होते हैं। आँखें कमजोर होती हैं तथा ऐसे जातक व्यापार की अपेक्षा नौकरी में ज्यादा सफल होते हैं। धार्मिक कृत्यों में विश्वास रखते हैं।

वृश्चिक—जिनके द्वादश भाव में वृश्चिक राशि होती है, वे व्यक्ति धार्मिक कार्यों में पूर्ण विश्वास रखते हैं। व्यापार की अपेक्षा नौकरी अथवा स्वतन्त्र कार्यों में प्रगति करते हैं। लेखन-प्रकाशन आदि में निश्चय ही ये चमकते हैं। बचपन इनका सुखमय ही कहा जा सकता है। इन्हें अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ता, परन्तु जीवन के १६ वर्षों के बाद ही इनका वास्तविक जीवन प्रारम्भ होता है तथा ये संघर्षशील क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं। यौवनावस्था पूर्णतः संघर्षशील रहती है। व्यापारिक क्षेत्र में इन्हें काफी उतार-चढ़ाव देखना पड़ता है तथा नौकरी में होने पर इस जातक की प्रगति शनैः-शनैः होती है। फिजूलखर्ची तथा व्यसनों से यह व्यक्ति दूर ही रहता है। संयत जीवन जीना ही इसका ध्येय होता है। बाहरी स्थानों से इसका विशेष सम्पर्क होता है तथा जीवन में कई बार तीर्थयात्रा करता है।

धनु—जिस जातक के द्वादश भाव में धनु राशि होती है, वह व्यक्ति तुरन्त निर्णय लेने वाला, परिस्थिति की गम्भीरता को समझने वाला तथा समय के अनुसार चलने वाला होता है। वातावरण को पहचानने की इसमें अद्भुत क्षमता होती है तथा अपने जीवन प्रकार को उसी के अनुसार ढाल लेता है, जैसा समय एवं स्थिति होती है। कई प्रकार के व्यसन यह अपने जीवन में पालता है। मित्रों की सूची लम्बी होती है तथा आय की अपेक्षा व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है। यद्यपि वह व्यक्ति व्यय घटाने का कई बार प्रयत्न करता है, पर असफलता ही हाथ लगती है। ऐसा व्यक्ति समाज में लोकप्रिय होता है, आकस्मिक खर्चे आते ही रहते हैं, जिसके कारण भी जातक की आर्थिक स्थिति डगमगाती रहती है, परंतु फिर भी जातक में अदम्य इच्छाशक्ति होती है, जिसके फलस्वरूप यह अपने आप पर नियंत्रण कर सकने में समर्थ होता है। जीवन में इसकी समस्त आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं।

है। जीवन का लक्ष्य एक क्षण के लिए भी इनकी आँखों से ओझल नहीं होता और निरन्तर निस्वार्थ श्रम इनकी महत्ता की कुंजी होती है। वाहन योग प्रबल होता है तथा शनैः-शनैः जीवन की समस्त आवश्यकताएँ एक-एक करके पूरी हो जाती हैं। आय के एक से अधिक स्रोत होते हैं, परन्तु उदार हृदय के होने के होने के कारण व्यय भी बढ़ा-चढ़ा रहता है। आर्थिक स्थिति साधारण ही रहती है। ईमानदार, सद्गुणों से अलंकृत ऐसे जातक जीवन में पूर्ण सफल होते हैं।



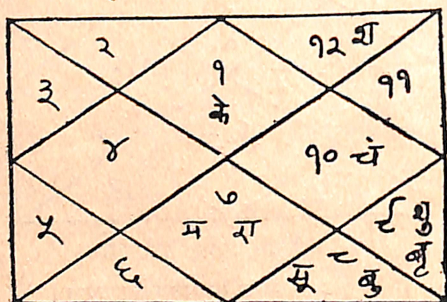
स्व० श्री दीनदयाल उपाध्याय
(भारतीय जनसंघ के भूतपूर्व अध्यक्ष)

शुक्र—जिस जातक के द्वादश भाव में शुक्र होता है वह अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है। जीवन का प्रारम्भ साधारण स्थिति में होता है, परन्तु ऐसे जातक प्रतिभा के बल पर उच्च पद पर पहुँच जाते हैं।

ऐसे जातक का विवाह जल्दी हो जाता है, पत्नी सुशील, शिक्षित, समझदार तथा पतिव्रता मिलती है। ससुराल साधारण श्रेणी का होता है। श्वसुर से तो नहीं, पर साले से जरूर लाभ रहता है। सन्तान सुख भी श्रेष्ठ होता है। लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की संख्या ज्यादा होती है। बच्चों के द्वारा भी जातक का नाम विख्यात होता है। जीवन में कई स्रोतों से आय होती है, परन्तु व्यय भी बढ़ा-चढ़ा रहता है। परिवार तथा समाज से जातक को विशेष लाभ नहीं होता। एक प्रकार से देखा जाय तो यह व्यक्ति 'सैल्फ मेड मैन' होता है। बाहरी स्थानों एवं व्यक्तियों से जातक का गहरा सम्बन्ध होता है तथा जीवन में मित्रों

की संख्या बहुत अधिक होती है। आमोद-प्रमोद के साधन जुटाने में जातक चेष्टारत रहता है। कपड़ों पर, शृंगार की सामग्री पर तथा सजावट पर जातक विशेष व्यय करता है। धार्मिक क्षेत्र में भी जातक अग्रणी रहता है तथा तीर्थयात्रा का विशेष योग होता है। ऐसा जातक विद्वान, कवि, कलाप्रिय एवं प्रतिभाशाली विख्यात पुरुष होता है।

शनि—जिस जातक की जन्म कुण्डली के द्वादश भाव में शनि होता है, वह अत्यन्त धनवान एवं प्रख्यात होता है। यद्यपि इनका बचपन साधारण होता है, परन्तु अत्यन्त प्रखरता से ये प्रकाश में आते हैं तथ जनमानस पर छा जाते हैं। समाज तथा मित्रों में ये अत्यन्त लोकप्रिय

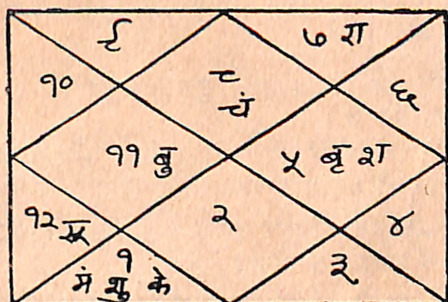


दिलीपकुमार
(प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता)

होते है। यात्राओं का इन्हें विशेष शौक होता है तथा यात्रा से लाभ भी रहता है। शिक्षा की दृष्टि से ये जातक साधारण ही कहे जाते हैं। नौकरी में भी प्रगति धीरे-धीरे होती है, परन्तु स्वतन्त्र व्यवसाय में ये जातक सफल होते हैं। जीवन में विभिन्न प्रकार की स्थितियों में जीना पड़ है, जितना उतार-चढ़ाव इन्हें अपने जीवन में देखना पड़ता है, वह अ की तुलना में स्पृहणीय ही है। मित्रों एवं प्रशंसकों से ये घिरे र

राहु—द्वादश भावस्थ राहु के विषय में ज्योतिष ग्रन्थों में उक्ति कि ऐसा जातक प्रबल रूपेण शत्रुसंहारक तथा मित्रवर्धक होता है। जीवन में जो कुछ भी उन्नति करता है, वह स्वयं की प्रतिभा सूझ एवं हिम्मत के बल पर होती है। बाल्यावस्था साधारण रूप से व्यतीत होती है तथा

पिता का सुख नहीं के बराबर मिलता है। जीवन की प्रौढ़ावस्था में इन्हें पत्नी के सुख में न्यूनता प्राप्त होती है। यद्यपि आय के कई स्रोत होते हैं,



डॉ० नित्यानन्द शर्मा

परन्तु फिर भी इनका व्यय विशेष बढ़ा-चढ़ा रहता है, अतः आर्थिक स्थिति साधारण ही कही जा सकती है। जीवन में प्रशंसकों एवं मित्रों का अभाव नहीं रहता। सूझ-बूझ रखने वाला, न्यायशील, चतुर एवं अपने कार्य में प्रवीण ऐसा जातक ईश्वर पर श्रद्धा रखने वाला होता है।

केतु—जिसके द्वादश भाव में केतु होता है, वह पूर्णतः संघर्षशील होता है। जीवन में निरंतर उत्थान-पतन आते रहते हैं और ऐसा जातक दृढ़ता से कठिनाइयों का सामना करता रहता है। आय स्वतन्त्र व्यवसाय अथवा लेखन कार्य से होती है, ऐसा व्यक्ति सफल सम्पादक, लेखक अथवा पत्रकार होता है। राजनीति के क्षेत्र में भी ये जातक सफल सिद्ध होते हैं। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहती है तथा ईश्वरभीरु ऐसा जातक जीवन की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है।

द्वादश भाव से सम्बन्धित विशेष योग

(१) द्वादश भाव में चर राशि हो तथा दृष्ट ग्रह शनि से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक भ्रमणशील होता है।

(२) द्वादश में निर्बल ग्रह हो और द्वादशेश बल से युक्त हो तो धन की हानि होती है।

(३) षष्ठेश अथवा अष्टमेश बलवान पापग्रह होकर १२ वें भाव में हो तो जातक दिवालिया होता है।

(४) व्यय भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक पुण्यात्मा एवं दानशील होता है।

(५) यदि द्वादशस्थ ग्रह उच्च या स्वराशि का हो तो जातक परोपकारी होता है।

(६) बारहवें भाव में चन्द्रमा, शुक्र और बृहस्पति हों तो जातक धनवान होता है।

(७) द्वादशेश उच्च राशि, स्व राशि या मित्र राशि में हो तो जातक के जीवन की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है।

(८) शुक्र, शनि, केतु एवं चन्द्र द्वादश भाव में हो तो जातक मध्यावस्था में प्रबल दुःख भोगता है।

(९) लग्न में गुरु हो, सप्तम भाव में शुक्र हो तथा कन्या राशि पर चन्द्र हो तो जातक की मृत्यु के बाद सद्गति हो।

(१०) बारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक विख्यात एवं समाज में आदर प्राप्त करता है।

(११) बारहवें भाव का स्वामी लग्न में हो तो जातक को विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

(१२) द्वादश भाव में शुक्र उच्च का या स्वराशि का होकर स्थित हों तो जातक विख्यात, कलाप्रिय, धर्मात्मा, विविध भोगों का भोग करने वाला, ऐश्वर्यवान तथा लखपति होता है।



